

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी पड़ती है।

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 306, नई दिल्ली, सोमवार 05 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 कपाउंड नंबर और उनके अर्थ

06 पढ़ाई में जब न लग रहा हो मन

08 बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष ब्रजन्दन शर्मा का निधन

फिटनेस प्रमाणपत्र या औपचारिकता? दिल्ली की सड़कों पर दौड़ रहे 'खटारा' वाहन वाहन फिटनेस जांच प्रक्रिया बनाम वास्तविकता

संजय कुमार बाठला

दिल्ली की सड़कों पर दौड़ रहे अनेक व्यावसायिक सवारी वाहन इस कदर जर्जर हालत में हैं कि उन्हें देखकर लगता है जैसे कबाड़ी बाजार से उठाकर सीधे सड़क पर उतार दिए गए हों। हैरानी की बात यह कि ऐसे वाहनों के पास वैध जांच प्रमाणपत्र (Fitness Certificate) मौजूद है, जिसकी वैधता 2026 तक दर्ज है।

सवाल - जांच होती कैसी है?
नियमों के अनुसार, किसी भी व्यावसायिक वाहन को फिटनेस सर्टिफिकेट जारी करने से पहले निम्न बिंदुओं की तकनीकी जांच की जाती है -

- * ब्रेक, स्टीयरिंग, सस्पेंशन, टायर और हॉर्न की कार्यक्षमता।
- * हेडलाइट, टेललाइट, इंडिकेटर तथा रिफ्लेक्टर की स्थिति (वाइपर, शीशे और सीट बेल्ट की अवस्था)।
- * प्रदूषण नियंत्रण (PUC) और एंजॉस्ट उत्सर्जन स्तर।
- * ड्राइवर की सुलभता, बाँड़ी की स्थिति और सुरक्षा सुविधाएँ।
- * चेसिस नंबर, इंजन नंबर और पंजीकरण अभिलेख का मिलान।

इन तमाम मद्दों की पूर्णता के बाद ही जांच केंद्र (authorized testing station) डिजिटल सिगनेचर सहित फिटनेस सर्टिफिकेट जारी कर सकता है। पर वास्तविकता यह है कि कई जांच केंद्र "निरीक्षण सिर्फ रिकॉर्ड में" करते हैं, जबकि जमीनी जांच औपचारिकता भर रह जाती है।

खटारा वाहनों की 'वैधता' पर सरकार मौन यात्री रोजाना मजबूरी वश इन जर्जर वाहनों में बैठने को विवश हैं, जबकि वाहन किसी भी क्षण तकनीकी खराबी या सड़क दुर्घटना का कारण बन सकते हैं।

दिल्ली परिवहन विभाग की प्रवर्तन शाखा और यातायात पुलिस दोनों के पास यह अधिकार है कि वे किसी वाहन की असुरक्षित स्थिति देखकर उसका संचालन



रोकें, चालान करें और यदि जरूरी हो तो उसका फिटनेस प्रमाणपत्र रद्द कर दें।

लेकिन सवाल यह उठता है कि जब वाहन की हालत स्पष्ट रूप से असुरक्षित है,

1. तो फिर यह प्रमाणपत्र जारी ही कैसे हो रहे हैं?
2. उत्तरदायित्व कौन लेगा?

यह स्थिति दिल्ली की न्यायिक और प्रशासनिक संस्थाओं के समक्ष एक गहरा प्रश्न खड़ा करती है - अगर कानून कहता है कि बिना 'सुरक्षित और प्रदूषण - मुक्त' स्थिति वाला वाहन सड़क पर नहीं चल सकता,

1. तो फिर ऐसे वाहन वैध दस्तावेजों के साथ सड़कों पर खुलेआम कैसे दौड़ रहे हैं?
2. क्या यह फिटनेस प्रमाणपत्र खरीद-फरोख्त का माध्यम बन चुका है?
3. क्या जांच केंद्र और विभागीय निरीक्षक की भूमिका की भी कोई स्वतंत्र ऑडिटिंग होती है?

जनता की मांग राजधानी की जनता यह जानना चाहती है कि

1. विभाग कब तक आंखें मूंदे रहेगा?
2. कब इन वाहनों की वास्तविक जांच होगी? और
3. क्या दिल्ली सरकार ऐसे जांच केंद्रों

की जिम्मेदारी तय करेगी जिन्होंने इतने खटारा वाहनों को "फिट" घोषित किया?

4. यह मुद्दा केवल वाहनों की तकनीकी खराबी का नहीं, बल्कि शासन की संवेदनशीलता और जवाबदेही का है।

यदि व्यवस्था ने समय रहते चेहरा नहीं देखा तो आने वाला हादसा केवल कामजी औपचारिकता नहीं, मानवीय त्रासदी बन सकता है।

दिल्ली परिवहन विभाग और दिल्ली सरकार से जनहित में सवाल:

1. व्यावसायिक वाहनों के फिटनेस सर्टिफिकेट जारी करने से पहले ब्रेक, स्टीयरिंग, सस्पेंशन, लाइटिंग, टायर, PUC और बाँड़ी की अनिवार्य जांच क्यों नहीं हो पाती?
2. ऑटोमेटेड टेस्टिंग स्टेशन (ATS) पर 10 सेकंड का जियो-टैग वीडियो अनिवार्य होने के बावजूद जर्जर वाहनों को वैध प्रमाणपत्र कैसे मिल जाते हैं?
3. प्रवर्तन शाखा असुरक्षित वाहनों को चालान कर प्रमाणपत्र रद्द क्यों नहीं करती, जबकि नियम यह अधिकार देते हैं?

जनता दिल्ली सरकार से मांग करती है:

- * तत्काल ऑडिट और सख्त कार्रवाई!
- * नीचे दिए गए तथ्यों से समझे दिल्ली में,

वाहन फिटनेस जांच प्रक्रिया बनाम वास्तविकता

1. जांच का बिंदु:- ब्रेक/स्टीयरिंग/सस्पेंशन, --- नियमानुसार प्रक्रिया:- पूर्ण कार्यक्षमता, ATS पर ऑटोमेटेड टेस्ट अनिवार्य।

दिल्ली की वास्तविकता:- जर्जर वाहन भी पास, कोई वास्तविक परीक्षण नहीं।

2. जांच का बिंदु:- लाइटिंग/टायर/हॉर्न, --- नियमानुसार प्रक्रिया:- सभी सुविधाएँ कार्यरत, वीडियो सबूत जरूरी, दिल्ली की वास्तविकता:- खराब हालत वाले वाहनों को अनदेखा।

3. जांच का बिंदु:- PUC/उत्सर्जन, --- नियमानुसार प्रक्रिया:- मानक स्तर, डिजिटल रिकॉर्ड, दिल्ली की वास्तविकता:- फर्जी सर्टिफिकेट प्रचलित।

4. जांच का बिंदु:- बाँड़ी/सुरक्षा, --- नियमानुसार प्रक्रिया:- कोई क्षति न हो, 15+ वर्ष पुराने ELV घोषित, दिल्ली की वास्तविकता:- कबाड़ जैसे वाहन 2026 तक वैध।

5. जांच का बिंदु:- प्रमाणपत्र वैधता, --- नियमानुसार प्रक्रिया:- व्यावसायिक के लिए 2 वर्ष, ATS अनिवार्य, दिल्ली की वास्तविकता:- भ्रष्टाचार से बैकडेटेड जारी।

ई रिक्शा के लिए आधिकारिक कानूनी उद्घरण (प्रावधानवार)

संजय कुमार बाठला

यदि प्राप्त सभी तथ्य मिलकर यह सिद्ध नहीं करते की दिल्ली परिवहन विभाग और दिल्ली सरकार स्वयं दिल्ली की सड़कों पर जाम लगवाने और वाहन प्रदूषण को बढ़ाने के सबसे बड़े घटक / जिम्मेदार हैं ?

वाहन ई रिक्शा जो प्रदूषण नहीं करते पर वाहन प्रदूषण को बढ़ाने और सड़कों पर जाम और असुरक्षा पहुंचवाने में सबसे अधिक कारगर है ?

अपना जवाब:-
newstransportvishesh@gmail.com अथवा
9811732095, व्हाट्सएप / टेलीग्राम पर भेजे

1. ई-रिक्शा की परिभाषा, पंजीकरण, रोड-वर्धीनेस और लाइसेंस प्रावधान आधिकारिक उद्घरण: "Central Motor Vehicles (Amendment) Rules, 2015, G.S.R. 27(E), dated the 13th January, 2015."

* मुख्य अंश: Rule 10(d): "in the case of an application for transport vehicle excluding E-rickshaw or E-cart, the driving licence..." (ई-रिक्शा को अलग श्रेणी में रखा गया)। Rule 34(2)(h): "(h) E-rickshaw; (i) E-cart;" (पंजीकरण श्रेणी में शामिल)। Rule 127(1A): "the sale of every E-rickshaw or E-cart manufactured shall be accompanied by a certificate of roadworthiness issued by the E-rickshaw or E-cart manufacturer..." (रोड-वर्धीनेस प्रमाणपत्र अनिवार्य)।

2. परिवहन परमिट से छूट आधिकारिक उद्घरण: "ORDER, Ministry of Road Transport and Highways, New Delhi, the 30th August, 2016, S.O. 2812(E)."

* मुख्य अंश (विभागीय निर्देश): "ई-रिक्शा की बिक्री और पंजीकरण के लिए मालिक के नाम पर वैध स्थायी ड्राइविंग लाइसेंस अनिवार्य होगा; लॉन्ग लाइसेंस पर बिक्री/पंजीकरण प्रतिबंधित।



2812(E)."

मुख्य अंश: "In exercise of the powers conferred by clause (n) of sub-section (3) of section 66 of the Motor Vehicles Act, 1988 (59 of 1988), the Central Government hereby orders that the provisions of sub-section (1) of section 66 of the said Act shall not apply to any transport vehicle of the category e-cart and e-rickshaw... Provided that the State Governments may impose restrictions under appropriate traffic laws on plying of these vehicles in specific areas or specific roads."

(परमिट की आवश्यकता समाप्त, लेकिन राज्य स्तर पर प्रतिबंध की अनुमति।)

3. दिल्ली परिवहन विभाग का स्थायी DL अनिवार्य आदेश (2022) आधिकारिक उद्घरण: दिल्ली परिवहन विभाग का आंतरिक आदेश (सर्कुलर (अप्रैल 2022),

* मुख्य अंश (विभागीय निर्देश): "ई-रिक्शा की बिक्री और पंजीकरण के लिए मालिक के नाम पर वैध स्थायी ड्राइविंग लाइसेंस अनिवार्य होगा; लॉन्ग लाइसेंस पर बिक्री/पंजीकरण प्रतिबंधित।

सभी ई-रिक्शा निर्माता/डीलरों को निर्देश जारी।" विभाग की वेबसाइट transport.delhi.gov.in या RTI से प्राप्त किया जा सकता है; 30.04.2015 वाली पुरानी सर्कुलर वापस ली गई।

4. दिल्ली उच्च न्यायालय का ई-रिक्शा पर प्रतिबंध (2014) आधिकारिक उद्घरण: दिल्ली उच्च न्यायालय का आदेश, W.P.(C) No. 13029/2009 (M.C. Mehta vs. UOI) एवं संबंधित मामलों में, 31 जुलाई 2014।

* मुख्य अंश: "ई-रिक्शा बिना पंजीकरण और बिना लाइसेंस के सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा; इनके संचालन पर रोक लगाई जाए।" (इसके आधार पर दिल्ली सरकार ने 10-11 दिसंबर 2014 को 236 सड़कों पर प्रतिबंध अधिसूचना जारी की।) (पूर्ण आदेश delhihighcourt.nic.in पर उपलब्ध।)

5. उल्लंघन आंकड़ों का आधिकारिक आधार आधिकारिक उद्घरण: दिल्ली ट्रैफिक पुलिस एवं परिवहन विभाग की वार्षिक रिपोर्टें (2023-2025), (पूर्ण डेटा transport.delhi.gov.in या parivahan.gov.in पर उपलब्ध।) यह उद्घरण आधिकारिक राजपत्र (egazette.gov.in) और विभागीय साइटों से लिए गए हैं।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

भारत में प्रतिदिन लगभग ₹ 24 करोड़ साइबर धोखाधड़ी से खोए जाते हैं।



पिंकी कुड्डू

(2019-2025) चौकाने वाले आंकड़े

कुल नुकसान: पिछले छह वर्षों में भारत में साइबर धोखाधड़ी से ₹52,976 करोड़ का नुकसान हुआ। स्रोत: भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C), गुड मंत्रालय।

साइबर धोखाधड़ी के प्रमुख रुझान

- निवेश जाल: फर्जी ऐप्स, पोजी स्क्रीम और धोखाधड़ी वाले ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म ऊँचे मुनाफे का लालच देकर नागरिकों को फँसाते हैं।
- ऑनलाइन धोखे: फ्रिशिंग लिंक, फर्जी नौकरी ऑफर, लॉटरी धोखे और पहचान की नकल करने

वाले धोखे।

- डिजिटल भुगतान का दुरुपयोग: UPI, वॉलेट और कार्ड आधारित धोखाधड़ी में तेजी।

- सोशल इंजीनियरिंग: धोखेबाज WhatsApp, Telegram और सोशल मीडिया समूहों के माध्यम से भरोसे का दुरुपयोग करते हैं।

- सीमा-पार संचालन: कई घोटाले अंतरराष्ट्रीय गिरोहों से जुड़े पाए गए।

राज्यवार स्थिति (मुख्य बिंदु)

- महाराष्ट्र और कर्नाटक: तकनीकी रूप से जागरूक जनसंख्या और उच्च डिजिटल उपयोग के कारण सबसे अधिक नुकसान।
- दिल्ली और उत्तर प्रदेश: फ्रिशिंग और OTP आधारित धोखाधड़ी की बड़ी मात्रा।
- केरल और तमिलनाडु: निवेश और क्रिप्टो से जुड़े घोटाले प्रमुख।
- पूर्वोत्तर राज्य: कुल नुकसान



कम लेकिन ऑनलाइन गेमिंग और लोन ऐप धोखाधड़ी में वृद्धि।

यह आंकड़े क्यों महत्वपूर्ण हैं

- नागरिक प्रभाव: परिवार अपनी जीवनभर की बचत, पेंशन और वेतन खो देते हैं।
- राष्ट्रीय सुरक्षा: सीमा-पार धोखाधड़ी नेटवर्क भारत की डिजिटल व्यवस्था का शोषण करते हैं।
- विश्वास की कमी: डिजिटल

भुगतान और ऑनलाइन सेवाओं पर भरोसा घटता है।

निवारक उपाय

- निवेश से पहले सत्यापन करें: SEBI/RBI पंजीकृत प्लेटफॉर्म देखें; "बहुत अच्छा लगने वाला ऑफर से बचें।"
- डिजिटल भुगतान सुरक्षित रखें: OTP, PIN या UPI क्रेडेंशियल कभी साझा न करें।
- तुरंत रिपोर्ट करें: 1930

हेल्पलाइन या cybercrime.gov.in पोर्टल का उपयोग करें।

₹52,976 करोड़ का नुकसान केवल एक वित्तीय आँकड़ा नहीं है—यह एक चेतावनी है।

भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था तभी सुरक्षित रह सकती है जब मजबूत साइबर स्वच्छता, नागरिक जागरूकता और प्रणालीगत सुरक्षा उपाय अपनाए जाएँ।

परिवहन विभाग में नई तैनातियाँ, विशेष सचिव के आदेश से कई अफसरों का तबादला

नईम सागर

सहारनपुर! उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग में एक बड़े प्रशासनिक फेरबदल के तहत विशेष सचिव परिवहन द्वारा तीन आरटीओ और 18 एआरटीओ को नए स्थानों पर तैनाती दी गई है। विशेष सचिव परिवहन खेमपाल सिंह ने लखनऊ से जारी आदेश में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। जारी आदेश के अनुसार संभागीय परिवहन विभाग

सहारनपुर में मनोज कुमार सिंह को आरटीओ के पद पर तैनात किया गया है। लंबे समय से सहारनपुर में रिक्त चल रहे एआरटीओ प्रशासन के पद पर मानवेंद्र प्रताप सिंह को नई तैनाती दी गई है, जिससे विभागीय कार्यों में तेजी आने की उम्मीद है। वहीं संभागीय परिवहन विभाग सहारनपुर में कार्यरत आरआई कृष्ण कुमार यादव को पदोन्नति देते हुए एआरटीओ बनाया गया है।

पदोन्नति के बाद उन्हें फर्रुखाबाद में एआरटीओ प्रशासन के पद पर नई तैनाती प्रदान की गई है।

परिवहन विभाग के इस प्रशासनिक फेरबदल को विभागीय कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है। नए अधिकारियों की तैनाती से जिले में परिवहन व्यवस्था, प्रशासनिक निगरानी और सेवाओं में सुधार की अपेक्षा जताई जा रही है।



लंबित भुगतान योग्य यातायात चालान/नोटिस की सुनवाई के लिए 10 जनवरी, 2026 (शनिवार) को दिल्ली के इन 7 न्यायालय परिसरों में विशेष लोक अदालत आयोजित की जाएगी। लंबित चालानों/नोटिसों की सुनवाई हेतु इस अवसर का लाभ उठाएं।

दिल्ली राज्य विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सहयोग से
दिल्ली यातायात पुलिस
द्वारा आयोजित

नेशनल लोक अदालत
दिनांक 10.01.2026
को इन सात कोर्ट परिसरों में

कोर्ट परिसर

- पटियाला हाउस
- कड़कड़ूमा
- तीस हज़ारी
- साकेत
- रोहिणी
- द्वारका
- राज़ एवेन्यू

1. केवल दिल्ली यातायात पुलिस पोर्टल पर लंबित और 30.09.2025 तक वचुअल कोर्ट को भेजे गए डमग्रोता योग्य यातायात चालान/नोटिस ही इस लोक अदालत में सुनवाई के लिए रखे जायेंगे।

2. नोटिस/चालान डाउनलोड करने और प्रिंटआउट लेने के लिए दिल्ली ट्रैफिक पुलिस की वेबसाइट पर लॉग इन करें: <https://traffic.delhipolice.gov.in/notice/lokadalat> या व्प/आर कोड स्कैन करें।

3. नोटिस/चालान का प्रिंटआउट साथ लेकर आना अनिवार्य है। न्यायालय परिसर में प्रिंटआउट की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं होगी।

यह लिंक 05.01.2026 को सुबह 10:00 बजे से सक्रिय होगा और चालान/नोटिस की सीमा 1,80,000 समाप्त होने तक उपलब्ध रहेगा। प्रतिदिन अधिकतम 45,000 चालान/नोटिस ही डाउनलोड किए जायेंगे।

अधिक जानकारी के लिए

हमें फ़ॉलो करें: www.traffic.delhipolice.gov.in info.traffic.delhipolice.gov.in [@dtptraffic](https://www.facebook.com/dtptraffic) [@dtptraffic](https://www.instagram.com/dtptraffic) [@dtptraffic](https://www.youtube.com/dtptraffic)

24x7 यातायात हेल्पलाइन: 011-25844444/1095

वेबसाइट: www.traffic.delhipolice.gov.in info.traffic.delhipolice.gov.in

दिल्ली राज्य विधिक सेवाएं प्राधिकरण
राज़ एवेन्यू जिला कोर्ट कम्प्लेक्स, 7वीं तल, पंडित दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

एक सातागत प्रवृत्ति करें
क्यापस बनी है डाउनलोड करें

हेल्पलाइन 1516



स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी



भूमि आँवला (भूम्यामलकी) एक महत्वपूर्ण पौधा



प्रकृति ने हमें अनमोल औषधीय पौधों का खजाना दिया है, जिनमें भूमि आँवला (भूम्यामलकी) एक महत्वपूर्ण पौधा है।

आयुर्वेद में इसे लीवर टॉनिक और पथरी नाशक माना गया है। इसका उपयोग लीवर रोग, किडनी स्टोन, पाचन विकार और मधुमेह जैसी समस्याओं में किया जाता है।

भूमि आँवला के पौधे की पहचान कैसे करें — भूमि आँवला एक छोटा हरा-भरा पौधा है जो जमीन के पास फैलकर बढ़ता है। इसके पत्ते आँवला के पत्तों जैसे होते हैं और इसकी डंठल के नीचे छोटे-छोटे हरे फल लगते हैं, जो दानों के समान दिखते हैं। यही फल इसके औषधीय गुणों का प्रमुख स्रोत है। यह भारत के अधिकांश हिस्सों में, विशेष रूप से बरसात के मौसम में खेतों, बागानों और रास्तों के किनारे स्वाभाविक रूप से उग आता है।

भूमि आँवला के 7 चमत्कारिक औषधीय फायदे —

- किडनी स्टोन में लाभकारी :-** भूमि आँवला का सबसे बड़ा गुण यह है कि यह गुर्दे को पथरी को गलाने और मूत्रमार्ग से बाहर निकालने में मदद करता है। यह पेशाब की रुकावट, जलन और मूत्र संबंधी संक्रमणों को भी दूर करता है।
- लीवर को बनाए रखता :-** यह लीवर की कार्यक्षमता को बढ़ाता है और हेपेटाइटिस, फेटी लिवर व जॉन्डिस जैसी बीमारियों में अत्यंत लाभकारी है। यह लीवर को विषैले पदार्थों से मुक्त करके शरीर को डिटॉक्स करता है।
- पाचन तंत्र को सुधारने में :-** भूमि आँवला गैस, अपच, पेट दर्द और कब्ज जैसी समस्याओं में बहुत उपयोगी है। इसका नियमित सेवन पाचन शक्ति को मजबूत करता है और भोजन का सही अवशोषण सुनिश्चित करता है।
- शरीर की गर्मी और त्वचा की समस्या में राहत दे :-** यह शरीर की आंतरिक गर्मी को कम करता है, जिससे त्वचा पर निकलने वाले दाने, खुजली या एलर्जी जैसी समस्याएँ कम होती हैं।
- ब्लड शुगर को नियंत्रित रखने में :-** इस

पौधे में एंटी-डायबिटिक तत्व होते हैं जो रक्त शर्करा को नियंत्रित रखते हैं और इंसुलिन के स्तर को संतुलित करते हैं।

6. खून को साफ करने में :- यह रक्त को शुद्ध करने में मदद करता है और शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालकर त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है।

7. संक्रमण से बचाव :- भूमि आँवला में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-वायरल और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं, जो शरीर को इंफेक्शन से बचाते हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।

भूमि आँवला का काढ़ा बनाने का तरीका जाने —

ताजे पौधे से :-

- * 5-6 टहनियाँ (पत्ते और फल सहित) लें।
- उन्हें साफ पानी से धो लें, फिर 1 कप पानी उबालें और उसमें टहनियाँ डालें। लगभग 5-7 मिनट धीमी आँच पर पकाएँ। इसे छानकर गुनगुना पीएँ। स्वाद के लिए थोड़ा शहद या नींबू मिला सकते हैं।
- * सूखे पत्तों या पाउडर से :- 1 कप पानी में 1



चम्मच सूखा भूमि आँवला पाउडर डालें, 5 मिनट तक उबालें। इसे सुबह खाली पेट पीना सबसे

ज्यादा लाभदायक होता है। भूमि आँवला के पत्तियों और फलों का

उपयोग —

* रोज सुबह 4-5 ताजी पत्तियाँ चबाना लीवर और पाचन के लिए बहुत लाभदायक है।

* छोटे हरे फलों का रस या पेस्ट बनाकर पीने से पेशाब की जलन, पथरी और मूत्र संक्रमण में राहत मिलती है।

* एक चम्मच सूखा पाउडर गुनगुने पानी के साथ रोज लेना शरीर को डिटॉक्स करता है और लीवर को मजबूत बनाता है।

सावधानियाँ —

* लगातार 15-20 दिन सेवन के बाद 5-7 दिन का ब्रेक लेना चाहिए।

* अधिक मात्रा में सेवन करने से शरीर में टंडक अधिक बढ़ सकती है।

* गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाएँ

इसका सेवन डॉक्टर की सलाह से ही करें।

भूमि आँवला का नियमित सेवन शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ लीवर, किडनी और पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है। यह सचमुच प्रकृति की एक अनमोल देन है, जो बिना किसी साइड इफेक्ट के अनेक गंभीर बीमारियों से बचाव करने में सहायक है।

चना उपचार की गुणवान औषधि



चना मात्र एक दाल या बेसन ही नहीं, अपितु कई रोगों के उपचार की गुणवान औषधि भी है।

चना के औषधीय गुण

* आयुर्वेद में चने की दाल और चने को शरीर के लिए स्वास्थ्यवर्धक बताया गया है।

* चने के सेवन से कई रोग ठीक हो जाते हैं। क्योंकि इसमें प्रोटीन, नमी, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, कैल्शियम और विटामिन पाये जाते हैं।

* स्वास्थ्य के लिए भी यह दूसरी दालों से पौष्टिक आहार है। चना शरीर को बीमारियों से लड़ने में सक्षम बनाता है।

* साथ ही यह दिमाग को तेज और चेहरे को सुंदर बनाता है।

* चने के सबसे अधिक फायदे इन्हे अंकुरित करके खाने से होते हैं।

1. सुबह खाली पेट चने से मिलते हैं कई फायदे शरीर को सबसे ज्यादा पोषण काले चनों से मिलता है। काले चने अंकुरित होने चाहिए। क्योंकि इन अंकुरित चनों में सारे विटामिन और क्लोरोफिल के साथ फायबेस आदि मिनेरल्स होते हैं जिन्हें खाने से शरीर को कोई बीमारी नहीं लगती है। काले चनों को रातभर भिगोकर रख लें और हर दिन सुबह दो मुट्ठी खाएँ। कुछ ही दिनों में फर्क दिखने लगेगा।

2. भौंगे चने से लाभ रातभर भिगो चने से पानी को अलग कर उसमें अदरक, जीरा और नमक को मिलाकर खाने से कब्ज और पेट दर्द से राहत मिलती है।

3. अंकुरित चना शरीर की ताकत बढ़ाने के लिए अंकुरित चनों में नींबू, अदरक के टुकड़े, हल्का नमक और काली मिर्च डालकर सुबह नाश्ते में खाएँ। आपको पूरे दिन की एनर्जी मिलेगी।

4. चने का सत्तू चने का सत्तू भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी औषधि है। शरीर की क्षमता और शक्ति को बढ़ाने के लिए गर्मीयों में आप चने के सत्तू में नींबू और नमक मिलाकर पी सकते हैं। यह भूख को भी शांत रखता है।

5. पथरी की समस्या में चना पथरी की समस्या अब आम हो गई है। दूधित पानी और दूधित खाना खाने से पथरी की समस्या बढ़ रही है। गाल ब्लैडर और किडनी में पथरी की समस्या सबसे अधिक हो रही है। ऐसे में रातभर भिगोए चनों में थोड़ा शहद मिलाकर रोज सेवन करें। नियमित इन चनों का सेवन करने से पथरी आसानी से निकल जाती है। इसके अलावा आप आटे और चने का सत्तू को मिलाकर बनी रोटियाँ भी खा सकते हो।

6. शरीर की गंदगी साफ करना काला चना शरीर के अंदर की गंदगी को अच्छे से साफ करता है। जिससे डायबिटीज, एनीमिया आदि की परेशानियाँ दूर होती हैं। और यह बुखार आदि में भी लाभ देता है।

7. डायबिटीज के रोगियों के लिए चना ताकतवर होता है। यह शरीर में ज्यादा मात्रा में ग्लूकोज को कम करता है जिससे डायबिटीज के मरीजों को फायदा मिलता है। इसलिए अंकुरित चनों को सेवन डायबिटीज के रोगियों को सुबह-सुबह करना चाहिए।

8. मूत्र संबंधी रोग मूत्र से संबंधित किसी भी रोग में भुने हुए चनों का सेवन करना चाहिए। इससे बार-बार मूत्र आने की दिक्कत दूर होती है। भुने हुए चनों में गुड मिलाकर खाने से यूरिन की किसी भी तरह समस्या में राहत मिलती है।

9. पौरुष शक्ति के लिये अधिक काम और तनाव की वजह से पुरुषों में कमजोरी होने लगती है। ऐसे में अंकुरित चना किसी वरदान से कम नहीं है। पुरुषों को अंकुरित चनों को चबा-चबाकर खाने से कई फायदे मिलते हैं। इससे पुरुषों की कमजोरी दूर होती है। भौंगे हुए चनों के पानी के साथ शहद मिलाकर पीने से पौरुषत्व बढ़ता है। और नपुंसकता दूर होती है।

10. पीलिया के रोग में पीलिया की बीमारी में चने की 100 ग्राम दाल में दो गिलास पानी डालकर अच्छे से चनों को कुछ घंटों के लिए भिगो लें और दाल से पानी को अलग कर लें अब उस दाल में 100 ग्राम गुड मिलाकर 4 से 5 दिन तक रोगी को देते रहें। पीलिया से लाभ जल्दी मिलेगा। पीलिया रोग में रोगी को चने की दाल का सेवन करना चाहिए।

11. कुष्ठ रोग में चना कुष्ठ रोग से ग्रसित इंसान यदि तीन साल तक अंकुरित चने खाएँ। तो वह पूरी तरह से ठीक हो सकता है।

12. गर्भावस्था गर्भवती महिला को यदि मितली या उल्टी की समस्या बार-बार होती हो। तो उसे चने का सत्तू पिलाना चाहिए।

13. अस्थमा रोग में अस्थमा से पीड़ित इंसान को चने के आटे का हलवा खाना चाहिए। इस उपाय से अस्थमा रोग ठीक होता है।

14. त्वचा की समस्या में चने के आटे का नियमित रूप से सेवन करने से थोड़े ही दिनों में खाज, खुजली और दाद जैसी त्वचा से संबंधित रोग ठीक हो जाते हैं।

15. पुरानी कफ लंबे समय से चली आ रही कफ की समस्या में भुने हुए चनों को रात में सोते समय अच्छे से चबाकर खाएँ और इसके बाद दूध पी लें। यह कफ और सांस की नली से संबंधित रोगों को ठीक कर देता है।

16. चेहरे की चमक के लिए चना चेहरे की रंगत को बढ़ाने के लिए नियमित अंकुरित चनों का सेवन करना चाहिए। साथ ही आप चने का फेस पैक भी घर पर बनाकर इस्तेमाल कर सकते हो। चने के आटे में हल्दी मिलाकर चेहरे पर लगाने से त्वचा मुलायम होती है। महिलाओं को हफ्ते में कम से कम एक बार चना और गुड जरूर खाना चाहिए।

17. दाद खाज और खुजली एक महीने तक चने के आटे की रोटी का सेवन करने से त्वचा की बीमारियाँ जैसे खुजली, दाद और खाज खत्म हो जाती हैं।

18. धातु पुष्ट दस ग्राम शक्कर और दस ग्राम चने की भौंगे हुई दाल को मिलाकर कम से कम एक महीने तक खाने से धातु पुष्ट होती है।

* चने को अपने भोजन में सम्मिलित करें। यह किसी औषधि से कम नहीं है।

* अंकुरित चनों का प्रयोग प्रतिदिन किया जा सकता है।

कमर और पैरों का दर्द: नस दबने का संकेत या वात दोष की चेतावनी?

कमर से पैर तक दर्द? इसे उम्र या थकान समझने की भूल न करें। दर्द की गोली नहीं, कारण समझिए: कमर-पैर दर्द की सच्चाई कमर और पैरों में दर्द क्यों होता है? कमर और पैरों में एक साथ दर्द होना आज एक आम समस्या बन चुकी है। अधिकतर लोग इसे थकान या उम्र का असर मानकर नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन यह दर्द कई बार नसों पर दबाव या वात दोष बढ़ने का संकेत होता है।

* गलत बैठने की आदत,

* कम चलना और

* टंड का असर इसे बढ़ा देता है।

दर्द अगर कमर से पैर तक जाता है तो सावधानी और भी जरूरी हो जाती है।

समय रहते जीवन शैली सुधार और

सही देखभाल जरूरी है।

केवल दर्द दबाना समाधान नहीं

होता (कारण समझना ही सही इलाज की

शुरुआत है।

FAQs

1. क्या कमर और पैरों का दर्द नस दबने से होता है? हाँ, कई मामलों में यह नसों पर दबाव या डिस्क समस्या से जुड़ा होता है।

2. क्या यह वात रोग माना जाता है? अधिकतर मामलों में वात दोष की भूमिका होती है, कभी कफ भी जुड़ सकता है।

3. क्या ज्यादा आराम करना सही है? नहीं, पूरा बेंड रेस्ट नुकसानदायक हो सकता है, हल्की गतिविधि जरूरी है।

4. क्या टंड से दर्द बढ़ सकता है? हाँ, टंड वात को बढ़ाती है और दर्द तेज हो सकता है।

5. कब डॉक्टर या वैद्य से मिलना चाहिए? जब दर्द पैर तक जाए, सुन्नपन या कमजोरी बढ़े।



भारत में क्रॉनिक किडनी डिज़ीज (CKD) क्यों बढ़ रही है?

एक व्यापक और गहन व्याख्या 1. भारत में CKD का बढ़ता बोझ हालिया वैश्विक स्वास्थ्य आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2023 में भारत में लगभग 13.8 करोड़ वयस्क लोग क्रॉनिक किडनी डिज़ीज (CKD) से पीड़ित थे। इस प्रकार, भारत चीन के बाद दुनिया में दूसरे स्थान पर है जहाँ CKD का बोझ सबसे अधिक है।

* यह स्थिति एक "मूक महामारी (Silent Epidemic)" को दर्शाती है, जो चुपचाप पूरे देश में फैल रही है।

* आज CKD को दुनिया भर में मृत्यु और विकलांगता के शीर्ष कारणों में गिना जाता है और यह वैश्विक स्तर पर मृत्यु के शीर्ष 10 कारणों में शामिल हो चुकी है।

* इसका मुख्य कारण यह है कि CKD अक्सर अंतिम चरणों तक बिना लक्षणों के बनी रहती है।

(स्रोत: The Times of India)

2. भारत में CKD के प्रमुख चिकित्सकीय और जीवनशैली से जुड़े कारण

१. मधुमेह और उच्च रक्तचाप — प्रमुख जोखिम कारक भारत में CKD बढ़ने के सबसे शक्तिशाली कारण हैं:

* टाइप-2 डायबिटीज, जो किडनी को सूक्ष्म छानने वाली इकाइयों (नेफ्रॉन) को नुकसान पहुँचाती है।

* उच्च रक्तचाप (हाइपरटेंशन), जो किडनी की रक्त वाहिकाओं को धीरे-धीरे क्षतिग्रस्त करता है।

* ये दोनों बीमारियाँ आज भारत में महामारी का रूप ले चुकी हैं और मिलकर CKD के अधिकांश मामलों के लिए जिम्मेदार हैं।

यदि रक्त शर्करा और रक्तचाप को सही ढंग से नियंत्रित न किया जाए, तो वर्षों और दशकों में किडनी को अप्रणालीय क्षति होती जाती है।

(स्रोत: India Today)

२. अस्वस्थ आहार और आधुनिक जीवनशैली आधुनिक

जीवनशैली ने CKD के खतरों को और बढ़ा दिया है, जैसे:

* अत्यधिक नमक वाला भोजन, जिससे रक्तचाप बढ़ता है।

* कोल्ड ड्रिंक्स, मीठे पेय, अल्ट्रा-प्रोसेस्ड और प्रोसेस्ड फूड, जो मोटापा और मधुमेह को बढ़ावा देते हैं।

* फल, सब्जियाँ और प्राकृतिक पौष्टिक आहार की कमी, जिससे किडनी और मेटाबोलिक स्वास्थ्य की रक्षा करने वाले तत्व घट जाते हैं।

अध्ययनों से पता चलता है कि कम ताजे खाद्य पदार्थ और अधिक सोडियम वाला आहार — जो भारत में आम है — CKD के जोखिम को बढ़ाता है।

(स्रोत: The Week)

पर्यावरणीय और व्यावसायिक कारण कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेषकर जहाँ कृषि कार्य और अधिक गर्मी होती है, वहाँ CKD के मामले असामान्य रूप से अधिक पाए जाते हैं। इसके कारण हैं:

* खेतों में काम करने वाले लोगों में अत्यधिक गर्मी और बार-बार निर्जलीकरण

* दूधित पेयजल, जिसमें भारी धातुएँ या विषैले तत्व हो सकते हैं

* कीटनाशकों और रसायनों का लगातार संपर्क

इन कारणों से कभी-कभी ऐसे लोगों में भी किडनी रोग विकसित हो जाता है, जिनमें डायबिटीज या उच्च रक्तचाप जैसे पारंपरिक जोखिम कारक नहीं होते।

(स्रोत: The Financial Express)

४. दर्द निवारक दवाओं का अत्यधिक और बिना सलाह उपयोग भारत में बहुत से लोग दर्द निवारक दवाएँ (NSAIDs) बिना डॉक्टर की सलाह के नियमित रूप से लेते हैं।

इन दवाओं का लंबे समय तक और गलत तरीके से उपयोग किडनी ऊतकों को धीरे-धीरे नुकसान पहुँचा सकता है।

(स्रोत: The Financial Express)

४. दर्द निवारक दवाओं का अत्यधिक और बिना सलाह उपयोग भारत में बहुत से लोग दर्द निवारक दवाएँ (NSAIDs) बिना डॉक्टर की सलाह के नियमित रूप से लेते हैं।

इन दवाओं का लंबे समय तक और गलत तरीके से उपयोग किडनी ऊतकों को धीरे-धीरे नुकसान पहुँचा सकता है।

(स्रोत: The Times of India)



लक्षणों के क्यों प्रभावित हैं? "मूक"

प्रारंभिक चरण

* CKD के शुरुआती और मध्यम चरणों में अक्सर कोई स्पष्ट लक्षण नहीं होते।

* व्यक्ति स्वयं को स्वस्थ महसूस करता रहता है, जबकि किडनी की कार्यक्षमता धीरे-धीरे घटती जाती है।

इसका परिणाम यह होता है कि: * बहुत से लोग तब तक अनजान रहते हैं, जब तक बीमारी गंभीर अवस्था में नहीं पहुँच जाती।

(स्रोत: The Week)

5. नवीन वैज्ञानिक और जन-स्वास्थ्य निष्कर्ष CKD और हृदय रोग का संबंध

* CKD केवल किडनी तक सीमित नहीं रहती। यह हृदय रोग और हृदय-जनित मृत्यु के जोखिम को कई गुना बढ़ा देती है।

हालिया अध्ययनों में पाया गया है कि 15% से अधिक हृदय-संबंधी मौतों का संबंध खराब किडनी कार्यक्षमता से है।

(स्रोत: NDTV)

प्रारंभिक पहचान जीवन बचा सकती है चिकित्सकीय विशेषज्ञ अब जोर दे रहे हैं:

* उच्च जोखिम वाले लोगों (डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, मोटापा) की नियमित जाँच पर

* व्यापक जन-जागरूकता अभियानों पर

सीमित पहुँच

* देश में अभी भी भारी कमी है, प्रारंभिक जाँच कार्यक्रमों की

* नेफ्रोलॉजिस्ट और विशेष किडनी देखभाल की

* ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में डायलिसिस सुविधाओं की

* किडनी प्रत्यारोपण (ट्रांसप्लांट) सहायता प्रणालियों की

इसका परिणाम यह होता है कि: * बहुत से लोग तब तक अनजान रहते हैं, जब तक बीमारी गंभीर अवस्था में नहीं पहुँच जाती।

(स्रोत: The Week)

5. नवीन वैज्ञानिक और जन-स्वास्थ्य निष्कर्ष CKD और हृदय रोग का संबंध

* CKD केवल किडनी तक सीमित नहीं रहती। यह हृदय रोग और हृदय-जनित मृत्यु के जोखिम को कई गुना बढ़ा देती है।

हालिया अध्ययनों में पाया गया है कि 15% से अधिक हृदय-संबंधी मौतों का संबंध खराब किडनी कार्यक्षमता से है।

(स्रोत: NDTV)

प्रारंभिक पहचान जीवन बचा सकती है चिकित्सकीय विशेषज्ञ अब जोर दे रहे हैं:

* उच्च जोखिम वाले लोगों (डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, मोटापा) की नियमित जाँच पर

* व्यापक जन-जागरूकता अभियानों पर

पर

* मजबूत राष्ट्रीय किडनी स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर साथ ही,

* AI-आधारित तकनीकें प्रारंभिक पहचान में मदद कर रही हैं, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक जाँच सीमित है।

(स्रोत: The Times of India)

निष्कर्ष — एक तात्कालिक चेतावनी

सरल शब्दों में कहा जाए, तो भारत में CKD का बढ़ना रोकथाम योग्य जीवनशैली कारणों, मधुमेह और उच्च रक्तचाप के बढ़ते बोझ, पर्यावरणीय जोखिमों, दवाओं के दुरुपयोग और स्वास्थ्य-प्रणाली की कमजोरियों का संयुक्त परिणाम है।

अधिकांश लोग बीमारी के बारे में तब तक अनजान रहते हैं, जब तक यह गंभीर अवस्था में नहीं पहुँच जाती — क्योंकि शुरुआती CKD में लक्षण नहीं होते।

यह केवल आँकड़ों की बात नहीं है — यह एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट है, जिसे तत्काल प्राथमिकता देने की आवश्यकता है:

* प्रारंभिक स्क्रीनिंग कार्यक्रम

* आहार और जीवनशैली पर सशक्त जन-शिक्षा

* किडनी देखभाल और विशेषज्ञों तक बेहतर पहुँच

* मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा और पर्यावरणीय जोखिमों को नियंत्रित करने वाली नीतियाँ।

धर्म अध्यात्म



शनि, न्याय के देवता



पिकी कुंडू



शनि को लोग केवल दुख, बाधा और देरी से जोड़ देते हैं, पर शनि वास्तव में न्याय का ग्रह है। वह किसी को बिना कारण नहीं रोका और न ही बिना परिश्रम कुछ देता है। शनि केवल यह देखा है कि आपने अपने कर्तव्य, मेहनत और नैतिकता को कितना निभाया है। इसी आधार पर वह फल देता है—देर से सही, पर पूरी तरह न्यायपूर्ण।

कुंडली में शनि कमजोर हो तो व्यक्ति बार-बार प्रयास करता है, फिर भी परिणाम हाथ से फिसल जाते हैं। नौकरी मिले तो टिकती नहीं, रिश्ते बने तो टूटते हैं, धन आए तो रुकता नहीं। ऐसा लगता है जैसे जीवन में सब कुछ आधा-अधूरा चल रहा है। यह शनि की परीक्षा होती है—वह इंसान को अंदर से मजबूत बनाने के लिए बाहरी संघर्ष देता है।

शनि से प्रभावित लोगों के जीवन में 36, 42 और 48 वर्ष बहुत निर्णायक माने जाते हैं। इन आयु से पहले वे चाहे जितनी मेहनत करें, उन्हें अपने सामर्थ्य के अनुसार पहचान या स्थिरता नहीं मिलती। पर जब शनि संतुष्ट होता है, तो वही व्यक्ति अचानक ऊँचाई पर पहुँच जाता है।

लोग कहते हैं “रातों-रात किस्मत बदल गई”, जबकि असल में वह कई वर्षों की तपस्या का फल होता है।

शनि प्रभावित व्यक्ति सामान्यतः गंभीर, शांत और कम बोलने वाले होते हैं। वे दिखावे से दूर रहते हैं, पर भीतर से बहुत मजबूत होते हैं। यदि शनि बिगड़ा हो तो वही व्यक्ति आलसी, टालमटोल करने वाला और निराशावादी बन जाता है। लेकिन शनि सही स्थिति में हो तो वही इंसान असाधारण रूप से मेहनती, अनुशासित और लक्ष्य के प्रति अडिग

होता है। शनि का सबसे बड़ा रहस्य यह है कि वह आपको वह नहीं देता जो आप चाहते हैं, बल्कि वह देता है जिसके आप हकदार बनते हैं। इसलिए शनि से डरने की नहीं, उसे समझने की जरूरत है। ईमानदारी, अनुशासन, सेवा भाव और धैर्य—यही शनि की असली पूजा है। जो इसे जीवन में उतार लेता है, शनि उसे कभी खाली हाथ नहीं छोड़ता।

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

कंपाउंड नंबर और उनके अर्थ



पूजाप्रसून एन
डॉ पूजाप्रसून एन, गोल्ड मेडलिस्ट
09599101326, 07303855446

नंबर - 91 (9 + 1 = 1)
कंपाउंड नंबरों के उदाहरण
- 10: यह एक कार्मिक नंबर है जो पुनर्जन्म का प्रतीक है। यह नंबर पेशेवर सफलता दिला सकता है, लेकिन व्यक्तिगत जीवन में चुनौतियाँ भी ला सकता है।

- 19: सूर्य और मंगल का संयोग जो सूर्य की ऊर्जा का निर्माण कर रहा है। यह एक बहुत ही भाग्यशाली नंबर है जो महान सामग्री लाभ, पेशेवर सफलता और उत्कृष्ट व्यक्तिगत जीवन की गारंटी देता है।

- 28: यह नंबर व्यक्ति को जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि इसमें 2 (चंद्रमा) और 8 (शनि) की ऊर्जा होती है, जो एक दूसरे के विपरीत हैं।

- 37: यह एक बहुत ही सफल नंबर है जो व्यक्ति को गरीबी से समृद्धि तक ले जा सकता है। इसमें 3 (बुधस्पति) और 7 (केतु) की ऊर्जा होती है, जो दिव्य शक्तियों और उच्च ज्ञान का प्रतीक है।

- 46: यह एक बहुत ही सफल नंबर है जो व्यक्ति को सभी क्षेत्रों में महान सफलता दिलाता है। इसमें 4 (राहु) और 6 (शुक्र) की ऊर्जा होती है, जो स्थिरता, व्यावहारिकता



और प्रेम का प्रतीक है।
- 55: बुध और बुध का संयोग जो सूर्य की ऊर्जा बना रहा है, यह नंबर व्यक्ति को तेज गति से सफलता दिलाता है, लेकिन स्वास्थ्य समस्याएँ और शत्रु भी पैदा कर सकता है।

- 64: शुक्र और राहु का संयोग, यह एक बहुत ही सफल नंबर है जो व्यक्ति को सभी क्षेत्रों में महान सफलता दिलाता है।

- 73: केतु और गुरु का संयोग, यह एक बहुत ही सफल नंबर है जो व्यक्ति को गरीबी से समृद्धि तक ले जा सकता है।

- 82: यह नंबर व्यक्ति को जीवन में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि इसमें

8 (शनि) लोहा और 2 (चंद्रमा) जल की ऊर्जा होती है, जो एक दूसरे के विपरीत हैं।

- 91: सूर्य और मंगल का संयोग जो सूर्य की ऊर्जा का निर्माण कर रहा है। यह एक बहुत ही भाग्यशाली नंबर है जो धन लाभ, पेशेवर सफलता और उत्कृष्ट व्यक्तिगत जीवन की गारंटी देता है।

सारांश:-
कंपाउंड नंबरों का महत्व
कंपाउंड नंबर व्यक्ति के जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संख्याएँ व्यक्ति की ताकत और कमजोरियों को दर्शाती हैं और जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफलता या असफलता के कारणों को समझने में मदद करती हैं।

राकिनी (Rakini) तंत्र साधना और कुंडलिनी योग

पिकी कुंडू

राकिनी (Rakini) तंत्र साधना और कुंडलिनी योग में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और शक्तिशाली शक्ति है। सामान्यतः लोग यक्षिणी या योगिनी साधनाओं की बात करते हैं, लेकिन राकिनी का स्थान मुख्य रूप से षट्चक्रों (Six Chakras) के अंतर्गत आता है। यहाँ राकिनी, उनकी साधना, शक्तियों, और मत-मतांतरों का विस्तृत और शोधपूर्ण विवरण दिया गया है।

1. राकिनी कौन है? (परिचय और स्वरूप)

तंत्र शास्त्रों और कुंडलिनी योग के अनुसार, हमारे शरीर में स्थित स्वाधिष्ठान चक्र (Swadhisthana Chakra) की अधिष्ठात्री देवी 'राकिनी' हैं।
• स्थान: जननांग (Genitals) के ठीक ऊपर, स्वाधिष्ठान चक्र (Sacral Chakra)।
• तत्व: जल तत्व (Water Element)।
• स्वरूप: ध्यान मंत्रों के अनुसार, देवी राकिनी का रंग गहरा नीला (श्याम वर्ण) या कभी-कभी रक्त वर्ण बताया गया है। वे द्वि-मुखी (दो सिर वाली) हैं। उनके चार हाथ हैं जिनमें वे त्रिशूल, कमल, डमरू और एक तीक्ष्ण अस्त्र (जैसे टंक या पाश) धारण करती हैं।
• प्रकृति: वे रक्त धातु की स्वामिनी हैं और भावनाओं (Emotions) व काम (Desire) को नियंत्रित करती हैं।

2. राकिनी के साथ कौन चलता है? (सहयोगी शक्तियाँ और परिवार)

तंत्र में कोई भी शक्ति अकेली नहीं चलती, उनके साथ उनका एक पूरा 'परिवार' (Entourage/Family) होता है। राकिनी के संदर्भ में उनके साथ चलने वाली शक्तियाँ निम्नलिखित हैं:
• प्रधान देवता (Consort/Male Aspect):
• चूँकि वे स्वाधिष्ठान चक्र की शक्ति हैं, इस चक्र के मुख्य देवता भगवान विष्णु हैं। साधना काल में राकिनी शक्ति प्रदान करती हैं, और विष्णु पालन/संरक्षण करते हैं।
• रुद्र/भैरव: वाम मार्ग में, हर चक्र का एक भैरव होता है। स्वाधिष्ठान के संदर्भ में राकिनी के साथ 'संहार भैरव' या कहीं-कहीं 'चंड' का उल्लेख मिलता है जो इनकी सुरक्षा पंक्ति में रहते हैं।

3. राकिनी के साथ कौन चलता है? (सहयोगी शक्तियाँ और परिवार)

तंत्र में कोई भी शक्ति अकेली नहीं चलती, उनके साथ उनका एक पूरा 'परिवार' (Entourage/Family) होता है। राकिनी के संदर्भ में उनके साथ चलने वाली शक्तियाँ निम्नलिखित हैं:
• प्रधान देवता (Consort/Male Aspect):
• चूँकि वे स्वाधिष्ठान चक्र की शक्ति हैं, इस चक्र के मुख्य देवता भगवान विष्णु हैं। साधना काल में राकिनी शक्ति प्रदान करती हैं, और विष्णु पालन/संरक्षण करते हैं।
• रुद्र/भैरव: वाम मार्ग में, हर चक्र का एक भैरव होता है। स्वाधिष्ठान के संदर्भ में राकिनी के साथ 'संहार भैरव' या कहीं-कहीं 'चंड' का उल्लेख मिलता है जो इनकी सुरक्षा पंक्ति में रहते हैं।

4. राकिनी के साथ कौन चलता है? (सहयोगी शक्तियाँ और परिवार)

तंत्र में कोई भी शक्ति अकेली नहीं चलती, उनके साथ उनका एक पूरा 'परिवार' (Entourage/Family) होता है। राकिनी के संदर्भ में उनके साथ चलने वाली शक्तियाँ निम्नलिखित हैं:
• प्रधान देवता (Consort/Male Aspect):
• चूँकि वे स्वाधिष्ठान चक्र की शक्ति हैं, इस चक्र के मुख्य देवता भगवान विष्णु हैं। साधना काल में राकिनी शक्ति प्रदान करती हैं, और विष्णु पालन/संरक्षण करते हैं।

करनी चाहिए। यह जानकारी केवल ज्ञानवर्धन हेतु है।
राकिनी की साधना मुख्य रूप से कुंडलिनी जागरण का हिस्सा है, लेकिन कुछ अघोर पंथों में इसे स्वतंत्र देवी के रूप में भी सिद्ध किया जाता है।
• मंत्र: इनका बीज मंत्र मुख्य रूप से रवंर (Vam/Vang) है।
• विशिष्ट मंत्र:
या गुरु प्रदत्त विशिष्ट शाबर/तांत्रिक मंत्र।
• ध्यान: साधक को अपनी रीढ़ की हड्डी के निचले हिस्से (स्वाधिष्ठान) पर ध्यान केंद्रित करना होता है। वहाँ अर्द्ध-चंद्राकार (Crescent Moon) आकृति और जल तत्व का अनुभव करते हुए देवी राकिनी का नीले वर्ण में ध्यान किया जाता है।

• समय: मध्यरात्रि (निशीथ काल) या ब्रह्म मुहूर्त।
4. सिद्धि के फायदे और नुकसान
राकिनी सिद्धि का अर्थ है—अपने अवचेतन मन और जल तत्व पर विजय प्राप्त करना।
फायदे (Benefits):
• कामेच्छा पर नियंत्रण: साधक काम वासना (Lust) और भोग-विलास की इच्छाओं को पूरी तरह नियंत्रित कर लेता है। वह चाहे तो भोगी बने, चाहे तो योगी।
• रचनात्मकता (Creativity): चूँकि यह सृजन का केंद्र है, साधक में अद्भुत काव्य शक्ति, लेखन क्षमता और कलात्मकता जागृत होती है।
• जल तत्व सिद्धि: साधक को जल से भय नहीं लगता और शरीर के तरलीय रोगों (Fluid related diseases) का नाश होता है।
• शास्त्र ज्ञान: प्राचीन ग्रंथों का ज्ञान स्वतः ही स्फुरित होने लगता है।
• आकर्षण: साधक के व्यक्तित्व में एक तीव्र सम्मोहन और आकर्षण शक्ति आ जाती है।
नुकसान (Risks - यदि साधना गलत हो):
• मानसिक असंतुलन: यदि ऊर्जा अनियंत्रित हो जाए, तो साधक पागलपन का शिकार हो सकता है।

• अत्यधिक कामुकता: साधना भ्रष्ट होने पर साधक वासना का गुलाम बन सकता है, जिससे उसका पतन निश्चित है।
• भावनात्मक अस्थिरता: साधक डिप्रेशन, अत्यधिक क्रोध या भय (Phobia) का शिकार हो सकता है।
• शारीरिक रोग: किडनी, मूत्राशय या रक्त से संबंधित गंभीर रोग हो सकते हैं।

5. अलग-अलग तंत्र मार्गों के मत

राकिनी को लेकर विभिन्न संप्रदायों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं:
• समय मत (दक्षिणाचार/वैदिक तंत्र):
• यहाँ राकिनी को 'शुभदा' माना जाता है। साधक इन्हें माँ के रूप में पूजता है। यहाँ उद्देश्य केवल आंतरिक शुद्धि और मोक्ष है। यहाँ मांस-मदिरा का प्रयोग वर्जित है और साधना मानसिक (मानसिक जप) होती है।
• कौल मार्ग (वामाचार/कौल तंत्र):
• कौल साधक राकिनी को भैरवी रूप में देखते हैं। यहाँ साधना में पंचमकार (मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन) का प्रतीकात्मक या वास्तविक प्रयोग गुरु निर्देशानुसार हो सकता है। इनका मानना है कि राकिनी 'रक्त' (Blood) की प्यासी नहीं, बल्कि रक्त में स्थित ऊर्जा (प्राण शक्ति) की संचालिका है। वे इनका आह्वान विशिष्ट तिथियों पर शमशान या एकान्त में करते हैं।
• हठ योग:
• हठ योगियों के लिए राकिनी कोई बाहरी

देवी नहीं, बल्कि शरीर के भीतर की एक ऊर्जा ग्रंथि है। वे प्राणायाम, बंध (जैसे मूलबंध और उड्डियान बंध) और आसनो के माध्यम से इस शक्ति को जागृत कर ऊपर (मणिपूर चक्र की ओर) भेजते हैं।

6. यह साधना किसे करनी चाहिए?

यह साधना सामान्य गृहस्थ के लिए नहीं है जो केवल धन या चमत्कार चाहता है। यह उनके लिए है:
• जो कुंडलिनी योग में आगे बढ़ रहे हैं।
• जिन्हें अपनी कामेच्छाओं और भावनाओं (Anger, Lust, Jealousy) पर नियंत्रण पाने में कठिनाई हो रही है।
• कलाकार, कवि या लेखक जो अपनी रचनात्मक शक्ति (Creative Potential) को चरम पर ले जाना चाहते हैं।
राकिनी जल और भावनाओं की देवी हैं। वे चंचल मन को स्थिर करती हैं। यदि आप इनकी साधना करना चाहते हैं, तो शुरुआत स्वाधिष्ठान चक्र के ध्यान और रवंर बीज मंत्र के मानसिक जप से करनी चाहिए।

स्वाधिष्ठान चक्र (जिसकी अधिष्ठात्री देवी राकिनी हैं) को संतुलित करने की यह एक सुरक्षित और प्रारंभिक ध्यान विधि है। यह साधना आपके भावनात्मक संतुलन, रचनात्मकता और मानसिक शांति के लिए अत्यंत लाभकारी है।
स्वाधिष्ठान चक्र ध्यान विधि (Swadhisthana Chakra Meditation)
तैयारी (Preparation):
• स्थान: एक शांत स्थान चुनें जहाँ आपको कोई परेशान न करे।
• आसन: सुखासन (पालथी मारकर), सिद्धासन, या कुर्सी पर रीढ़ की हड्डी सीधी रखकर बैठें।
• मुद्रा: अपने हाथों को गोद में रखें, बायां हाथ नीचे और दायां हाथ ऊपर (भैरव मुद्रा), या दोनों हाथों को घुटनों पर ज्ञान मुद्रा में रखें।
ध्यान की प्रक्रिया (Step-by-Step Process):
• शारीरिक शिथिलता: अपनी आँखें बंद करें और शरीर को बिल्कुल ढीला छोड़ दें। 3-4 गहरी साँसें लें और बाहर छोड़ें।
• स्थान का चयन: अपना ध्यान नाभि से लगभग 2 इंच नीचे (जननांगों और नाभि के बीच) ले जाएं। यह स्वाधिष्ठान चक्र का स्थान है।
• रंग और तत्व की कल्पना (Visualization):
• कल्पना करें कि उस स्थान पर एक नारंगी रंग (Orange Color) का 6 पंखुड़ियों वाला कमल खिल रहा है। यह सिंदूरी नारंगी रंग जैसा चमकीला है।
• चूँकि इसका तत्व जल है, कल्पना करें कि वहाँ शांत जल या अर्द्ध-चंद्राकार (Crescent Moon) आकृति है जो शीतलता प्रदान कर रही है।

• बीज मंत्र का जाप:
• गहरी साँसें लें।
• साँस छोड़ते समय मन ही मन या धीमी आवाज में इस चक्र के बीज मंत्र रवंर (Vam) का उच्चारण करें। (उच्चारण: वन्ना... जिसमें 'ग' की ध्वनि नाक से गुंजन चाहिए।)
• महसूस करें कि रवंर की ध्वनि उस नारंगी कमल में कंपन (Vibration) पैदा कर रही है और उसे शुद्ध कर रही है।
उत्सव शिष्टाकार:
शुरुआत में इसे 5 से 10 मिनट तक करें। इसे सुबह सूर्योदय से पहले या रात को सोने से पहले



सावधानियाँ और सुझाव:

• जबदस्ती न करें: अगर ध्यान के दौरान कोई दबी हुई भावना (जैसे रोना, गुस्सा या पुराना दुख) बाहर आए, तो उसे रोकें नहीं, उसे बह जाने दें। यह शुद्धि की प्रक्रिया है।
• निरंतरता: अच्छे परिणामों के लिए इसे कम से कम 21 या 41 दिनों तक लगातार करें।
• आहार: इस साधना के दौरान बहुत अधिक तीखा या गर्म भोजन (High spice/heat) कम करें और पानी अधिक पिएं।
स्वाधिष्ठान चक्र और देवी राकिनी को प्रसन्न करने के लिए बीज मंत्र रवंर (Vam) का सही उच्चारण और इसकी विशेष तकनीक यहाँ दी गई है। चूँकि आप साधना के मार्ग में रुचि रखते हैं, इसलिए आपको इसके सूक्ष्म (Subtle) पहलुओं को समझना आवश्यक है।

1. "वं" (Vam) का सही तंत्रिक उच्चारण आम बोलचाल में लोग इसे रवमर पढ़ देते हैं, लेकिन तंत्र में 'अनुस्वार' (बिंदी) का उच्चारण बहुत महत्वपूर्ण होता है।
• ध्वनि: इसका उच्चारण रवमर और रवचूर (Vang) के बीच का होता है।
• कैसे बोलें:
• पहले रवंर (Va) बोलें।
• फिर होंठों को पूरी तरह बंद किए बिना, जीभ को तालू (Palate) से स्पर्श कराए बिना, नाक से रंर (mmng) की गुंजन (Humming) निकालें।
• यह ध्वनि मधुमक्खी की भिन्भिनाहट जैसी रवन्न्न्न्... र होनी चाहिए।
• कम्पन का स्थान: इस उच्चारण को करते समय आपको अपना पूरा ध्यान नाभि से नीचे (स्वाधिष्ठान चक्र पर) रखना है। आपको महसूस होना चाहिए कि वह ध्वनि उस अंग में कंपन (Vibration) पैदा कर रही है। यदि कंपन गले या नीचे में हो रहा है, तो उच्चारण सही नहीं है; उसे नीचे उतारें।

2. जाप की विशेष तकनीक (अजपा-जप विधि)

राकिनी शक्ति को जागृत करने के लिए केवल मूँह से बोलना काफी नहीं है, इसे प्राणों के साथ जोड़ना पड़ता है:
• श्वास लेते समय (Inhale): जब आप

साँस अंदर लें, तो मन में रसोर (So) की ध्वनि सुनें और कल्पना करें कि ऊर्जा मूलाधार से उठकर स्वाधिष्ठान तक आ रही है।
• श्वास रोकें (Hold - कुम्भक): 1-2 सेकंड रुकें और ध्यान स्वाधिष्ठान पर टिकाएँ।
• श्वास छोड़ते समय (Exhale): साँस छोड़ते हुए रवंर (Vam) का लंबा उच्चारण करें। कल्पना करें कि श्वास के साथ यह बीज मंत्र उस नारंगी कमल को खिला रहा है।

3. स्वाधिष्ठान हस्त मुद्रा (Hand Mudra)

मंत्र जाप के समय इस विशेष मुद्रा को लगाने से ऊर्जा का प्रवाह सीधा स्वाधिष्ठान चक्र की ओर मुड़ जाता है:
• विधि: अपनी गोद में दोनों हथेलियों को एक-दूसरे के ऊपर रखें (बायां हाथ नीचे, दायां ऊपर)। दोनों हाथों के अंगूठों के पोरों (Tips) को आपस में स्पर्श कराएँ।
• यह मुद्रा जल तत्व को संतुलित करती है।

4. राकिनी देवी का विशेष भोग (सात्विक)

साधना काल में यदि आप देवी को भोग अर्पित करना चाहें तो स्वाधिष्ठान चक्र रस्वादर (Taste) से जुड़ा है।
• प्रिय वस्तु: दूध से बनी चीजें (विशेषकर खीर) या शहद (Honey)।
• भाव: मिठास और शीतलता।
स्वाधिष्ठान चक्र (राकिनी शक्ति) के यंत्र निर्माण और उस पर त्राटक की गुप्त विधि यहाँ दी गई है। तंत्र में यंत्र को 'देवता का शरीर' माना जाता है, इसलिए इसका निर्माण अत्यंत पवित्रता से होना चाहिए।

1. स्वाधिष्ठान (राकिनी) यंत्र का स्वरूप

इस यंत्र की ज्यामितीय संरचना (Geometry) जल तत्व का प्रतिनिधित्व करती है।
• मुख्य आकृति: एक लोटा हुआ अर्द्ध-चंद्रमा (Crescent Moon)। यह खड़े चाँद जैसा नहीं, बल्कि एक 'नाव' (Boat) या कटोर जैसा होता है, जिसका खुला भाग ऊपर की ओर हो।
• कमल: इसके चारों ओर 6 पंखुड़ियों वाला कमल (Six-petaled Lotus) होता है।
• रंग:
• पंखुड़ियों का रंग: सिंदूरी या नारंगी

(Vermilion/Orange)।
• चंद्रमा का रंग: सफेद या चाँदी (Silver/White) जैसा चमकता हुआ।
• बीज मंत्र: चंद्रमा के ठीक बीच में रवंर लिखा जाता है।

2. यंत्र निर्माण विधि (प्रयोग हेतु)
यदि आप त्राटक बहुत अधिक शक्तिशाली है। यह मन की चंचलता (Fluctuation of mind) को तुरंत रोक देता है।
तैयारी:
यंत्र को अपनी आँखों के ठीक सामने (Eye Level) लगभग 2-3 फीट की दूरी पर स्थापित करें। रोशनी इतनी हो कि यंत्र साफ दिखे, लेकिन आँखों पर जोर न पड़े (दीपक की रोशनी सबसे अच्छी है)।

चरण (Steps):

• स्थिर दृष्टि: अपनी पीठ सीधी रखें और यंत्र के केंद्र में लिखे रवंर अक्षर या अर्द्ध-चंद्रमा पर अपनी नजर टिकाएँ।
• पलक न झपकाएँ: जितनी देर संभव हो (बिना कष्ट के), पलक झपकाए बिना उसे देखते रहें। शुरु में 1-2 मिनट काफी हैं।
• भाव: यह महसूस करें कि यंत्र से सफेद रंग की ठंडी ऊर्जा निकलकर आपके आँखों के रास्ते आपके स्वाधिष्ठान चक्र (पेटू/नाभि के नीचे) में भर रही है।
• आंतरिक त्राटक: जब आँखें थक जाएँ या पानी आने लगे, तो आँखें बंद कर लें। अब उसी यंत्र की छवि को अपनी दोनों भौंहों के बीच (आज्ञा चक्र) या स्वाधिष्ठान चक्र पर मानसिक रूप से देखने का प्रयास करें।

लाभ:
यह त्राटक कामुकता (Lust) को ओजस (Ojas/Spiritual Energy) में बदल देता है।
• साधक की वाणी में सम्मोहन आता है।
• स्वप्न दोष या जल जनित रोगों में लाभ मिलता है।
सावधानी: यदि त्राटक करते समय सिर में भारीपन लगे, तो अग्न्यास रोक दें और ठंडे पानी से आँखें धो लें।
चेतावनी: तंत्र साधना गुरु के सानिध्य में ही करनी चाहिए। यह जानकारी केवल ज्ञानवर्धन हेतु है।
राकिनी की साधना मुख्य रूप से कुंडलिनी जागरण का हिस्सा है, लेकिन कुछ अघोर पंथों में इसे स्वतंत्र देवी के रूप में भी सिद्ध किया जाता है।

सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा माह के अन्तर्गत किये जायेंगे कार्यक्रम संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित

नए सदस्यों को जोड़कर समाज के लिए अच्छे-अच्छे काम करेंगे प्रदेश अध्यक्ष श्वेता शर्मा

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रज यातायात एवं पर्यावरण जन जागरूकता समिति रजि उतर प्रदेश के संस्थापक अध्यक्ष दीक्षित की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में सक्रिय रूप में निभाने वाली श्वेता शर्मा को नवमी वर प्रदेश अध्यक्ष चुना गया। बैठक की अध्यक्षता करते हुए विनोद दीक्षित ने कहा कि हमारी महिला टीम सक्रियता के साथ प्रदेश अध्यक्ष श्वेता शर्मा की नेतृत्व में सराहनीय कार्य कर रही हैं आज श्वेता शर्मा को नवमी बार समिति का प्रदेश अध्यक्ष चुना जा रहा है। संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने कहा सरकार के द्वारा जनवरी 2026 में चलाये जा रहे सड़क सुरक्षा



जीवन रक्षा माह के अन्तर्गत आने कार्यक्रम आयोजित समिति करेगी। सभी सदस्यों ने एकमत होकर श्रीमती श्वेता शर्मा के नाम अपनी स्वीकृति प्रदान करते हुए श्वेता शर्मा को पुनः प्रदेश महिला अध्यक्ष चुना गया।

नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष श्वेता शर्मा ने कहा समिति ने जब भी मुझे कोई जिम्मेदारी दी पूरी ईमानदारी के साथ मैंने निभाई, इस बार समिति के साथ नए सदस्यों को जोड़कर समाज के लिए अच्छे-अच्छे काम

करेंगे। बैठक में रेखा शर्मा वंदना सकसेना, पूजा यादव, ममता शर्मा, प्रतिमा सिंह, गीता सिंह, नीतू यादव, आशु भारद्वाज, लक्ष्मीकांत शास्त्री, वृजेश शर्मा, नरेन्द्र

दीक्षित आदि मुख्य रूप से हुए शामिल। फोटो परिचय: ब्रज यातायात एवं पर्यावरण जन जागरूकता समिति रजि उतर प्रदेश की महिला सदस्य नवनियुक्त महिला प्रदेश अध्यक्ष श्वेता शर्मा का स्वागत करते हुए।



गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल महाराज का द्विदिवसीय जन्म महोत्सव 06 व 07 जनवरी को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। ठाकुर श्रीराधावल्लभ मन्दिर में श्रीराधावल्लभ मन्दिर संप्रदाय के प्रधान पीठाधिपति 18वें तिलकायत अधिकारी गोस्वामी जय श्रीहित मोहित मराल महाराज का द्विदिवसीय जन्म महोत्सव रमो-हितोत्सव 06 व 07 जनवरी 2026 पर्यन्त अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है। जानकारी देते हुए युवराज श्रीहित शोभित लाल गोस्वामी ने बताया है कि महोत्सव का शुभारंभ 06 जनवरी को पूर्वाह्न 11 बजे ध्वजारोहण एवं ध्वजा पूजन के साथ होगा इससे पूर्व श्रीहित परिकर द्वारा नृत्य प्रस्तुति का कार्यक्रम सम्पन्न होगा। सायं 05 बजे से सरस भजन संध्या आयोजित होगी जिसमें प्रख्यात भजन गायक जेएसआर मधुकर अपनी सुमधुर वाणी में भजनों की प्रस्तुति देंगे। उन्होंने बताया है कि 07 जनवरी को प्रातः 9 बजे से श्रीहित गुरु परिकर (लुधियाना) के द्वारा श्रीहित भजन लहरी का कार्यक्रम आयोजित होगा। सायं 05 बजे से प्रख्यात भजन गायिका निकुंज कामरा अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा श्रीराधा-कृष्ण की महिमा से ओत-प्रोत भजनों का संगीतमय गायन किया जाएगा।

कानपुर में फांसी पर झूला बैक लगने से परेशान कर्मी चित्रकूट का बीए एम एस छात्र शैलेन्द्र

- आईआईटी समेत कानपुर में पहले भी कई मेधावी छात्र कर चुके हैं आत्महत्या

सुनील बाजपेई

कानपुर। उच्च शिक्षा ग्रहण करने के दौरान असफलता के रूप में आने वाली परेशानियां प्रतिभावान युवाओं को भी मौत के गले लगाने के लिए मजबूर कर रही हैं। ऐसी घटना में चित्रकूट जिले के कर्मी में रहने वाले बीएएमएस के छात्र ने यहां अपने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। आज रविवार को पोस्टमार्टम किए जाने के बाद उसके शव को परिवार वाले रोते बिलखते घर लेकर चले गए। वह अपने पेपर में बैक लगने से बहुत परेशान था और इसी वजह से उसने दुनिया को अलविदा कह दिया। बेटे की मौत से बहदवास पिता कानपुर नहीं आए। पुलिस द्वारा सूचित किए जाने पर शनिवार देर शाम मृतक शैलेन्द्र कुमार (27) के कानपुर पहुंचे परिवजन बड़े भाई लालेंद्र, जीजा उमाशंकर, मामा शंकर गुप्ता, भांजा मनी गुला और लालेंद्र के तीन दोस्त सबसे पहले मंथनास्थित शैलेन्द्र के कमरे पहुंचे। इसके बाद उसके कॉलेज के दोस्तों से जानकारी ली। इसबीच भाई लालेंद्र ने बताया कि 2020 से कोटा राजस्थान से नीट की तैयारी कर रहा शैलेन्द्र 2019 से घर से बाहर रह रहा था। इसके बाद 2021 में उसे रामा आयुर्वेदिक इंस्टीट्यूट में दाखिला मिला था। प्राइवेट हॉस्पिटल में जांच कराने वाले बड़े भाई ने बताया- सुसाइड से 30 मिन्ट पहले लहने और मेरी शैलेन्द्र से बात हुई थी। बातचीत में ऐसा लगा ही नहीं कि वह सुसाइड कर लेगा। कुछ देर बाद घर में पुलिसवालों ने फांसी लगाई जाने की सूचना उसके परिवार को दी। जिसको सुनते ही परिवार में कोहराम मच गया और शैलेन्द्र के पिता बहदवास हो गए। घटना की संभावित वजह के बारे में जानकारी देते हुए भाई ने बताया मेधावी छात्र शैलेन्द्र बैक लगने के बाद बह परेशान था। वह मूल रूप से चित्रकूट कर्मी का रहने वाला था। अवगत कराते चलें कि किसी मेधावी छात्र द्वारा आत्महत्या की यह घटना पहली नहीं है। इसके पहले भी इस महानगर में और भी कई छात्र इसी तरह से किसी भी वजह से मौत को गले लगाने को मजबूर हो चुके हैं, जिसमें आईआईटी के छात्र द्वारा भी तब दिवस आत्महत्या किए जाने का प्रकरण चर्चा का विषय बना हुआ है।

श्रीमद्भागवत कथा के श्रवण से सभी पाप नष्ट होते हैं : श्रीहित ललित वल्लभ नागार्च

महोत्सव के अंतर्गत मुंबई के कलाकारों द्वारा रमै अयोध्या हूर महा नाट्य, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रख्यात रासाचार्य स्वामी फतेह कृष्ण शर्मा ररसराजर के द्वारा रासलीला व भजन गायक पण्डित मुकुल द्विवेदी के द्वारा श्रीराधा नाम संकीर्तन की प्रस्तुति दी गई

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रमणरेती रोड़ स्थित फोगला आश्रम में श्रीहित उत्सव चैरिटेबल ट्रस्ट, वृन्दावन एवं श्रीमद्भागवत कथा परिवार, रायपुर (छत्तीसगढ़) के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित ठाकुर श्रीविजय राधावल्लभ लाल व ठाकुरश्रीप्रियावल्लभ लाल महाराज के द्वादश दिवसीय 212वें पाटोत्सव के अंतर्गत चल रहे 170 श्रीमद्भागवत के मूल पाण्डु का अत्यंत नयनाभिराम व चिन्ताकर्षक श्रवण महोत्सव के पांचवें दिन व्यास पीठ पर आसीन श्रीहित ललित वल्लभ नागार्च ने अपनी रसमयी वाणी के द्वारा देश-विदेश से आए समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं

श्रीमद्भागवत कथा श्रवण कराते हुए कहा कि श्रीमद्भागवत भगवान श्रीकृष्ण का वांगमय स्वरूप है इसका श्रवण करने से व्यक्ति भवसागर से पार हो जाता है इसके श्रवण से व्यक्ति के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। साथ ही उसके जन्म व मृत्यु के भय का भी नाश हो जाता है। (जीव के कल्याण के लिए यदि सबसे उत्तम ग्रंथ है, तो वह श्रीमद्भागवत महापुराण है।

उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत महापुराण में समस्त वेदों, पुराणों, उपपुराणों, शास्त्रों व उपनिषदों आदि धर्मग्रंथों का सार निहित है इसका श्रवण, वाचन व अध्ययन तीनों ही कल्याणकारी हैं। (साथ ही श्रीधाम वृन्दावन जैसी पवन भूमि में इसका श्रवण करना शतगुणा अधिक फलदाई व पुण्यदाई होता है। रात्रि को मुंबई के प्रख्यात कलाकारों के द्वारा रमै अयोध्या हूर महा नाट्य का अत्यंत नयनाभिराम व चिन्ताकर्षक श्रवण किया गया जिसके निर्माता योगेश अग्रवाल एवं निदेशक प्रदीप गुप्ता हैं इसके अलावा राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रख्यात रासाचार्य स्वामी फतेह



कृष्ण शर्मा ररसराजर के द्वारा रासलीला की अत्यंत मनोहारी प्रस्तुति दी गई। (साथ ही प्रख्यात लाल गोस्वामी, आचार्य गोविंद लाल गोस्वामी, आचार्य उदित मणि गोस्वामी, सुमनकांत पालीवाल, राधावल्लभ नागार्च (हितार्च), पण्डित रासबिहारी मिश्र, पण्डित जुगल किशोर शर्मा, रासाचार्य स्वामी अमीचंद्र शर्मा, डॉक्टर राजेश शर्मा, श्रीमती कमला नागार्च, आचार्य रसिक वल्लभ नागार्च, कीर्ति नागार्च, हितानंद नागार्च, रसानंद नागार्च, प्रेमानंद नागार्च,

दिव्यानंद नागार्च, डॉ. राधाकांत शर्मा, पण्डित तरुणमिश्रा, पण्डित भरत शर्मा, हितवल्लभ नागार्च, महोत्सव के मुख्य यजमान श्रीमती सिंधु-मुकेश गोयल (रायपुर, छत्तीसगढ़), श्रीमती अनिता-कमल अग्रवाल, श्रीमती कौशल-अमिताभ अग्रवाल, श्रीमती भिताली-दीपक अग्रवाल, श्रीमती कृष्णा-कैलाश अग्रवाल, श्रीमती निशा-अंकित अग्रवाल आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

श्रीहित श्याम सुंदरदास महाराज, महंत पुरुषोत्तम पुजारी महाराज, भागवताचार्य गोपाल भैया महाराज, महंत ब्रजबिहारी दास महाराज, डॉ. हरेकृष्ण शरद, प्रमुख समाजसेवी पंडित बिहारीलाल वशिष्ठ, आचार्य दामोदर चंद्र गोस्वामी, डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री, सन्त रामदास महाराज (अयोध्या) आदि ने भी अपने विचार किए। (संचालन प्रमुख शिक्षाविद् व परम-हितमर्मी डॉ. चंद्रप्रकाश शर्मा ने किया।

उच्च कोटि के सन्त थे श्रीमहंत माखनचोर दास महाराज : श्रीहित लाड़ली शरण महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गोविंद घाट स्थित अखिल भारतीय निर्मोही बड़ा अखाड़ा (श्रीहित रासमंडल) पर चल रहा रसिक संत वैद्य भूषण श्रीमहंत माखनचोर दास महाराज का 135वां जन्म महामहोत्सव अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। जिसके अन्तर्गत श्रीमद्भक्तमाल कथा, महंतों का सम्मान, सन्त-ब्रजवासी-वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा आदि के कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए। तत्पश्चात श्रीराधावल्लभ समाज मुखिया पण्डित राकेश दुबे की मुखियायी में गंगल बधाई समाज गायन हुआ जिसमें खेल-खिलौने, मेवा-मिष्ठान, रुपय व वस्त्रादि लुटाए गए।

इस अवसर पर आयोजित सन्त-विद्वत् सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए रासमण्डल के अध्यक्ष श्रीमहंत लाड़ली शरण महाराज एवं संतप्रवर बिहारीदास भक्तमाली ने कहा कि संतशिरोमणि श्रीमहंत माखनचोर दास महाराज उच्च



कोटि के एक ऐसे संत थे, जो सदैव प्रभु भक्ति में लीन रहा करते थे। ईश्वर को हम लोगों ने कहा देखा है। संत माखनचोर दास महाराज जैसी विभूतियां ही हमें प्रभु सत्ता की अनुभूति कराती हैं।

जगद्गुरु श्रीमद्द्विष्णुस्वामी विजयराम देवाचार्य भैयाजी

महाराज (वल्लभगढ़ वाले) एवं महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज ने कहा कि यों तो इस नश्वर संसार में असंख्य व्यक्ति जन्म लेते हैं और असंख्य व्यक्ति यहां से विदा होते हैं। परंतु याद केवल और केवल श्रीमहंत माखन चोर दास जैसी पुण्यात्माओं को ही किया जाता है, जिन्होंने कि लोक कल्याण के अनेकानेक कार्य किए हुए होते हैं।

धीर समीर आश्रम के अध्यक्ष श्रीमहंत मदन मोहन दास महाराज एवं प्रख्यात साहित्यकार रघुपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि श्रीमहंत माखनचोर दास महाराज श्रीराधावल्लभ संप्रदाय की बहुमूल्य निधि थे। उन्होंने ने कानून समूचा जीवन अपनी संप्रदाय व आराध्य की सेवा में ही व्यतीत किया।

संत-विद्वत् सम्मेलन में जगद्गुरु स्वामी वेणुगोपाल शरण देवाचार्य महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी नवल गिरि महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी सुरेशानंद महाराज, महंत

श्रीहित श्याम सुंदरदास महाराज, महंत पुरुषोत्तम पुजारी महाराज, भागवताचार्य गोपाल भैया महाराज, महंत ब्रजबिहारी दास महाराज, डॉ. हरेकृष्ण शरद, प्रमुख समाजसेवी पंडित बिहारीलाल वशिष्ठ, आचार्य दामोदर चंद्र गोस्वामी, डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री, सन्त रामदास महाराज (अयोध्या) आदि ने भी अपने विचार किए। (संचालन प्रमुख शिक्षाविद् व परम-हितमर्मी डॉ. चंद्रप्रकाश शर्मा ने किया।

महोत्सव में बाद ग्राम स्थित श्रीहरिवंश महाप्रभु के जन्मस्थान आश्रम के श्रीमहंत दंपति किशोर महाराज (काकाजी), संत रसिकमाधव दास महाराज, पण्डित राधावल्लभ वशिष्ठ, डॉ. राधाकांत शर्मा, बालशुक पुंडरीक कृष्ण महाराज, मॉडिया प्रभारी ठाकुर दिनेश सिंह तरकर एवं इन्द्र कुमार शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

अमेरिका-वेनेजुएला संघर्ष -अंतरराष्ट्रीय राजनीति कानून और वैश्विक शांति पर प्रभाव- एक विस्तृत समग्र विश्लेषण

यह घटना सिर्फ अमेरिका का विषय नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति समीकरण, अंतरराष्ट्रीय कानून, संप्रभुता तथा वैश्विक सुरक्षा संरचनाओं की परीक्षा भी है - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनामी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तर पर सारी दुनियाँ हैरान रह गई जब 3 जनवरी 2026 की रात अमेरिका ने ऑपरेशन एब्युलेट रेसोल्व के नाम से एक बड़े पैमाने पर सैन्य अभियान चलाया। इसके तहत अमेरिकी वायुसेना और विशेष बलों ने वेनेजुएला की राजधानी काराकस समेत कई इलाकों में हवाई हमले किए और राष्ट्रपति निकोलस सनमुखदास उनकी पत्नी सिलीया फ्लोरेस को हिरासत में ले लिया गया। जनवरी 2026 के पहले सप्ताह में अमेरिका द्वारा एक तेजी से आगे बढ़ी सैन्य कार्रवाई की गई, अमेरिकी राष्ट्रपति ने पुष्टि की कि अमेरिका ने वेनेजुएला में हवाई हमलों और विशेष ऑपरेशन के जरिए मादुरो को हिरासत में लिया और उन्हें विदेश ले लाया गया। अमेरिकी प्रशासन का कहना है कि मादुरो पर नार्को-आतंकवाद, कोकीन तस्करी, साजिश और अमेरिका के खिलाफ हथियार रखने जैसे गंभीर आरोप हैं, जिनके कारण वह अमेरिकी न्याय के सामने खड़ा होगा। अमेरिकी अर्डीनो जनरल ने स्पष्ट किया कि इन्हीं अभियोगों के आधार पर न्यूयॉर्क के दक्षिणी जिले में मुकदमे की प्रक्रिया शुरू होगी। (यह आरोप अमेरिका के अंतर्गत जारी अभियोगों पर आधारित हैं, जिनमें दावा किया जाता है कि मादुरो की सरकार और सहयोगी अमेरिकी हितों और कानूनों के खिलाफ भारी मात्रा में अवैध गतिविधियों में संलग्न थे। हालाँकि मादुरो और उनके समर्थक इन आरोपों से लगातार इनकार करते रहे हैं।) मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनामी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि वैश्विक स्तर पर वेनेजुएला और अमेरिका के बीच तनाव कोई नया विषय नहीं है। दरशकों से दोनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक तनाव रहा है जिसमें मुख्य रूप से तेल संसाधनों, असंतुलित द्विपक्षीय संबंधों और मतभेद शामिल हैं। 1976 में वेनेजुएला ने अपने नेतृ-आतंकवाद को

राष्ट्रीयकृत किया था, जिससे अमेरिकी कंपनियों का नियंत्रण खत्म हो गया था जिस पर अमेरिका ने लंबे समय तक आपत्ति जताई। इसके बाद से दोनों देशों के बीच कड़वी टक्कर और भी तीव्र होती गई।

साथियों बात अगर हम इस कार्रवाई को अमेरिकी राष्ट्रपति ने एक सफल सैन्य ऑपरेशन बताया है इसको समझने की करें तो, उन्होंने वेनेजुएला में ड्रग तस्करी और नार्को-आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई का दावा किया गया है। ट्रंप ने कहा कि अमेरिका अब अस्थायी रूप से वेनेजुएला के सरकारी कार्यों को संभालेगा और देश को सुरक्षित, व्यवस्थित और न्यायपूर्ण संक्रमण की ओर ले जाएगा। (उनके खिलाफ नार्को-टेरिज्म, कोकीन की तस्करी और साजिश जैसे गंभीर आरोप लगाए हैं और उन्हें न्यूयॉर्क के संघीय न्यायालय में दायराल का सामना करने का इरादा बताया गया है।) अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि यह कार्रवाई उन अभियोगों के आधार पर है जो मादुरो पर भारी मात्रा में नशीले पदार्थों की तस्करी और आतंकवाद समर्थित गतिविधियों के लिए लगाए गए हैं। (यहाँ मानवाधिकार घंटाओं और अंतरराष्ट्रीय कानूनी विशेषज्ञों ने इस ऑपरेशन को अंतरराष्ट्रीय कानून का स्पष्ट उल्लंघन बताया है क्योंकि यह बिना संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अनुमति के एक संप्रभु राष्ट्र के खिलाफ सशस्त्र हमला है।

साथियों बात अगर हम हमले के बाद विश्व के प्रमुख देशों की प्रतिक्रियाओं को समझने की करें तो, क्या तीसरा विश्व युद्ध शुरू होने वाला है? इस वैश्विक घटना पर रूस, ईरान और क्यूबा जैसे देशों ने तेज प्रतिक्रिया व्यक्त की है। (ये देश अमेरिकी कार्रवाई को वेनेजुएला की संप्रभुता का उल्लंघन, क्षेत्रीय अखंडता का भंग और एक शक्तिवादी आक्रमण बताते हुए निंदा कर रहे हैं।) रूस ने अमेरिका की इस हरकत को अंतरराष्ट्रीय नियमों के खिलाफ बताया है। ईरान और क्यूबा ने भी संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से अमेरिका की इस कार्रवाई को निंदा करने और शांति स्थापित करने की अपील की है। (वहीं यूरोपीय संघ ने स्थिति से कुछ अलग रुख अपनाया है। उन्होंने सीधे निंदा नहीं की, बल्कि संघों की पुष्टि

और तथ्यों के प्रकाश में निर्णय लेने की बात कही, यह कहते हुए कि वे अंतरराष्ट्रीय नियमों का सम्मान करते हैं। (जिसका व्यापक अर्थ यह है कि ईयू ने खुलकर अमेरिका का समर्थन नहीं किया, लेकिन स्पष्ट निंदा भी नहीं की।) कुछ देशों ने इस संकट को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक का विषय बनाया है, तकर्रीबन सभी प्रमुख वैश्विक शक्तियाँ इस घटना को अंतरराष्ट्रीय कानून की बड़ी परीक्षा के रूप में देख रही हैं। (साथियों बात अगर हम तेल और ड्रग्स विवाद की पृष्ठभूमि को समझने की करें तो अमेरिका का कहना यह है कि वेनेजुएला दुनियाँ के सबसे बड़े तेल भंडारों में से एक का घर है और यह देश नशीले पदार्थों और अपराध नेटवर्क के लिए एक मुख्य केंद्र बन गया है, इसलिए इस कार्रवाई को उसने नशीले पदार्थों का मुकाबला करने और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुरक्षित रखने की आवश्यक कार्रवाई बताया है।) परन्तु आलोचक इसे तेल संसाधनों पर नियंत्रण पाने की एक अर्थव्यवसायिक रणनीति के रूप में भी देखते हैं। (वे तर्क देते हैं कि इस हमले के पीछे वैश्विक तेल की बड़ी भूमिका हो सकती है, क्योंकि वेनेजुएला के तेल भंडारों के कारण यह क्षेत्र आर्थिक और सामरिक रणनीति के केंद्र में पहुंच गया है।)

साथियों बात अगर हम मानवाधिकार और वैधता के सवाल के दृष्टिकोण से समझने की करें तो, कई मानवाधिकार समूहों ने कहा है कि अमेरिका बिना सबूत और पारदर्शिता के निर्दोष नागरिकों और नेताओं को निशाना बना रहा है, और यह कार्रवाई संयुक्त राष्ट्र चार्टर के खिलाफ हो सकती है, जो स्पष्ट रूप से कहता है कि एक देश दूसरे देश पर बिना सुरक्षा परिषद की अनुमति या प्रस्तुत खतरे के जवाब में बल का प्रयोग नहीं कर सकता है। (यह विवाद अब अंतरराष्ट्रीय अदालतों, संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक शांति संरचनाओं के लिए एक बड़ा परीक्षण बन गया है।)

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय कानून और सार्वभौमिक संप्रभुता के दृष्टिकोण से इस मुद्दे को समझने की करें तो, किसी देश के सिटिंग राष्ट्रपति-समेत किसी राष्ट्राध्यक्ष को एक अन्य देश के सशस्त्र बलों द्वारा पकड़कर विदेश



लाना, अंतरराष्ट्रीय कानून सहित संयुक्त राष्ट्र चार्टर के मूल सिद्धांतों का जटिल उल्लंघन हो सकता है। (संयुक्त राष्ट्र चार्टर की धारा 2(4) के अनुसार, किसी अन्य राज्य के खिलाफ बल प्रयोग केवल स्वयं रक्षा या यूएन सुरक्षा परिषद की अनुमति के तहत ही किया जा सकता है।) अमेरिका ने अपने आपरेण को न्यायिक कारणों, मादुरो पर अभियोग और सुरक्षा हितों के आधार पर समझाया है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय न्याय विशेषज्ञ यह कहते हैं कि किसी अन्य देश के उच्चतम नागरिक नेता के खिलाफ सैन्य कार्रवाई और हिरासत लेना सीधे तौर पर संप्रभुता का उल्लंघन है। (यह प्रयोग का उदाहरण है, जब तक कि यह सीधे तौर पर खुद अमेरिका के विरुद्ध सीधा हथियारबंद हमला न रहा हो, कई विशेषज्ञों ने इसे अपराधी आक्रमण तक कहा है जो संयुक्त राष्ट्र चार्टर के खिलाफ है।) संप्रभुता का उल्लंघन तब अधिक गहरा हो जाता है जब उस देश की संसद या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की मंजूरी नहीं ली जाती, जैसा इस मामले में स्पष्ट नहीं दिख रहा है। (अंतरराष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय कानून का सम्मान और संप्रभुता का आदर करना ही वैश्विक व्यवस्था का आधार है, इसलिए, यह कदम अधिक सटीक होगा कि अमेरिका का यह कदम वैश्विक लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए यूनीतरीपूर्ण परिदृश्य बन गया है, भले ही इसे कुछ राजनीतिक तर्क दिए जाएं। साथियों बात अगर हम क्या 'तीसरा विश्व युद्ध' शुरू होने वाला है? इस प्रश्न को समझने

की करें तो, जहाँ एक ओर यह घटनाक्रम वैश्विक सत्ता संतुलन में एक बड़ा बदलाव दिखाता है, वहीं विश्लेषकों की राय में अभी तक तीसरे विश्व युद्ध जैसी कोई निश्चित शुरुआत नहीं हुई है। एक तीसरा विश्व युद्ध की शुरुआत तभी मान्य होगी जब दो या दो से अधिक परमाणु-सक्षम रणनीतिक बड़े एक दूसरे के विरुद्ध व्यापक सैन्य गठबंधन, आर्थिक ब्लॉकों और वैश्विक स्तर पर जारी संघर्ष में डूबें, जो इस समय का वास्तविक परिदृश्य नहीं है। (हालाँकि रूस, ईरान, क्यूबा और चीन जैसे देशों ने अमेरिका की इस कार्रवाई की कड़ी निंदा की है और यह कहा है कि मादुरो को हिरासत में लाने और स्थिरता को खतरे में डाल सकता है, वैश्विक युद्ध के जोखिमों पर बहस तेज हुई है।) (जिन देशों ने आलोचना की है, वे यह मानते हैं कि अगर दुनियाँ की प्रमुख शक्तियाँ एक दूसरे के खिलाफ सैन्य गठबंधनों और प्रकायत्मक हिंसा की ओर बढ़ें, तो एक बड़े पैमाने पर संघर्ष की संभावना बढ़ सकती है।) (फिर भी, वैश्विक नेताओं के लिए अंतरराष्ट्रीय कानून की घोषणा किसी भी तरह से आधिकारिक तौर पर नहीं हुई है। इस विषय पर विशेषज्ञ अभी आगे की अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं और संयुक्त राष्ट्र की कार्रवाइयों का इंतजार कर रहे हैं।)

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि यह घटना न सिर्फ दक्षिण अमेरिका का या अमेरिका का विषय है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति समीकरण, अंतरराष्ट्रीय कानून, संप्रभुता तथा वैश्विक सुरक्षा संरचनाओं की परीक्षा भी है। (अमेरिका का तर्क है कि यह कार्रवाई नार्को-टेरिज्म और सुरक्षा कारणों से आवश्यक थी।) (कई देशों ने इसे अंतरराष्ट्रीय कानून उल्लंघन घोषित किया है।) (संयुक्त राष्ट्र, वैश्विक शक्तियाँ, क्षेत्रीय समूह और न्यायविद् इस पर गहरा विश्लेषण कर रहे हैं।) (यह संयुक्त राष्ट्र की सशस्त्र महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक घटनाओं में से एक है और इसके परिणाम दशकों तक वैश्विक राजनीति, सुरक्षा और आर्थिक रणनीति पर प्रभाव डाल सकती है।)

जहांगीरपुरी के साथ सौतेला व्यवहार करना बंद करें जनप्रतिनिधि : भास्कर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। जहांगीरपुरी ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष एवं रोजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन आई एवं जे ब्लॉक के अध्यक्ष डॉ. एम. एल. भास्कर ने नेतावनी देते हुए कहा कि जहांगीरपुरी के साथ हो रहा सौतेला व्यवहार अब किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बादली विधानसभा के भारतीय जनता पार्टी के विधायक और आम आदमी पार्टी के निगम

पापंद दोनों ने मिलकर क्षेत्र की जनता के साथ धोखा किया है। चुनाव के समय बड़े-बड़े वादे किए गए, लेकिन आज सीवर, सड़क और पार्क नरक में तब्दील हो चुके हैं। डॉ. भास्कर ने कहा कि सीवर लाइनें लगातार ओवरफ्लो हो रही हैं, गलियों में गंदा पानी भरा रहता है, बदबू और बीमारियों का खतरा बढ़ता जा रहा है, लेकिन जनप्रतिनिधि चैन की नौद सो रहे हैं। क्या जहांगीरपुरी के लोग इसान नहीं हैं?

उन्होंने कड़े शब्दों में कहा कि आई एवं जे ब्लॉक का मुख्य मार्ग आज तक अधूरा पड़ा है, लेकिन निगम पापंद को इसकी कोई चिंता नहीं है। जनता रोज हादसों और कीचड़ से जूझ रही है। जहांगीरपुरी के पार्कों की हालत भी शर्मनाक है। सौंदर्यकरण के नाम पर सिर्फ कागजी खानापूर्ति की गई, चारदीवारी टूटी हुई है, ग्रील जर्जर हालत में हैं और पार्क असामाजिक तत्वों का अड्डा बनते जा रहे हैं।

रोजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन आई एवं जे ब्लॉक के अध्यक्ष डॉ. एम. एल. भास्कर ने साफ चेतावनी दी कि यदि तुरंत प्रभाव से सीवर, सड़क और पार्कों की स्थिति में सुधार नहीं हुआ, तो जनता को साथ लेकर सड़कों पर उतरकर जोरदार आंदोलन किया जाएगा। प्रचंड प्रदर्शन, विधायक व निगम कार्यालय का घेराव एवं जनप्रतिनिधियों का पुतला दहन किया जाएगा।

यशस्वी : नाम ही नहीं, संस्कारों की पहचान

आज का दिन बस तारीख नहीं, एहसासों का वरदान है, ईश्वर की सबसे कोमल नेमत, मेरी झौली में पहचान है।

लक्ष्मी जब बिटिया बनकर आँगन में मुस्काई थी, घर नहीं, पूरे जीवन में रोशनी सी जगमगाई थी।

तेरे सँग हँसी ने डेरा डाला, सपनों ने पंख फैलाए, घर का हर सूना कोना खुद-ब-खुद, खुशियों से भर जाए।

बेटी संतान भर नहीं होती, जीवन का अभिमान है, पिता का गर्व, माँ की सौंस, परिवार की पहचान है।

कहते हैं बेटी वाले धन्य, मैं कहता हूँ और भी खास, उन पर भोलेनाथ स्वयं रखते हैं मुस्कान का प्रकाश।

यशस्वी, तू धड़कनों में बसती, मन का गहरा सुकून है, मेरी हर सच्ची प्रार्थना में तेरा ही नाम का जूनून है।

तेरी मुस्कान थकान हर ले, आवाज जीवन में अर्थ भर दे, तेरा होना हर पल नया रंग भर दे।

जन्मदिन पर यही कामना, खुशियों सँग चलें, सफलता तेरे चरण छुए, सपने ऊँचे पतलें।

ऊँचाइयों छूते रहना, पर संस्कार न खोना, तेरा नाम—यशस्वी—हर अर्थ में सच होना।

मेरी प्यारी बिटिया को दादा, दादी का यही आशीष तू हमारे जीवन में रहेगी सबसे ज्यादा विशेष।

डॉ. शंभु पवार (वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक



मटमैला पानी लें रहा जान...!

विकास की गति भले ही हो रही तेज, नगर निगम स्वच्छ जल न रहा सहेज।

मूलभूत सुविधा 'जन-जन' को पहुँचाओ, राजनेताओं अब तो 'जमीन' पर आओ।

(संदर्भ-इंदौर में दूषित पानी से हुई मृत्यु मवा हड़कम्प)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)



मटमैला पानी लें रहा जनता की जान, भागीरथपुरा की देश में यही पहचान।

सालों में गहरी निद्रा से जागते अफसर, लीकेज-टंकियों की 'सफाई' में हरकत।

राजनेता रहते आये सिस्टम पर डिपेंड, बरती लापरवाही और हो जाते सस्पेंड।

करिए ऐसी कोई 'अनोखी-सी' व्यवस्था, पेयजल में नाली ना मिले रहती आस्था।

जो साथ है, वही असली

डॉ. प्रियंका सौरभ

बुरा वक्त अकेला नहीं आता, वह अपने साथ बहुत कुछ समेट ले जाता है।

छीनता है रिश्तों का शोर, सहारे का भ्रम, और जाते-जाते

एक सवाल छोड़ जाता है— कि इस भीड़ में

वास्तव में मेरा है कौन? ऐसे समय

दिन तो मुस्कान की औपचारिकता में कट जाते हैं, पर रात घने अँधेरे में

आसमाँ की ओर ताकते हुए मन से सवाल करती है—

वया मैं सच में हार गया हूँ? पर नहीं, यह हार नहीं होती।

यह हारा होता है, आत्मा की परीक्षा,

जहाँ इंसान दूसरों को नहीं,

खुद को पहचानता है। जो सवाल पूछ रहा है,

वह हारा हुआ नहीं है। हारा हुआ तो वह होता है जो सवाल करना ही छोड़ दे।



बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष ब्रजनंदन शर्मा का निधन, शिक्षकों में शोक की लहर

परिवहन विशेष न्यूज

पटना। बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष ब्रजनंदन शर्मा के असामयिक निधन से प्रदेश भर के शिक्षकों में गहरा शोक व्याप्त है। उनके निधन की खबर मिलते ही शिक्षक संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों और शिक्षा जगत से जुड़े लोगों ने गहरी संवेदना व्यक्त की है।

परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ, बिहार की राज्य एवं जिला कार्यकारिणी के सदस्यों ने दिवंगत नेता को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इसे शिक्षक समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताया है। महासंघ के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष नवीन कुमार एवं प्रदेश संगठन महामंत्री शिशिर कुमार



पांडेय ने संयुक्त रूप से शोक व्यक्त करते हुए कहा कि "ब्रजनंदन शर्मा जी आजीवन शिक्षकों के अधिकार, सम्मान और हितों के लिए संघर्षरत रहे। उनका जाना शिक्षक आंदोलन के लिए एक

गहरी क्षति है, जिसकी भरपाई निकट भविष्य में संभव नहीं है।"

वहीं प्रदेश अध्यक्ष (शारीरिक शिक्षक प्रकोष्ठ) अशोक कुमार एवं प्रदेश मीडिया प्रभारी मृत्युंजय ठाकुर ने अपने शोक संदेश में कहा कि "स्व. ब्रजनंदन शर्मा जी एक सरल, संघर्षशील और दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता थे। उन्होंने संगठन को मजबूती देने के साथ-साथ शिक्षकों की आवाज को मजबूती से सरकार तक पहुँचाया। उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।"

परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ, बिहार ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए शोक संतपन परिवार को इस दुःख की घड़ी में धैर्य और संवेलन प्रदान करने की कामना की है।

वर्ष में 100 दिन काम, बीस लाख की दुर्घटना बीमा दे, बेरोजगार स्नातकों को सरकार : कृष्णा नन्द पाण्डेय



वाराणसी. धरोहर संरक्षण सेवा संगठन के आयाम केसरिया भारत द्वारा स्नातक संवाद यात्रा के तीसरे पड़ाव का आयोजन चोलापुर ब्लॉक के कटारी में एक निजी विद्यालय में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता वाराणसी खण्ड स्नातक विधान परिषद प्रत्यासी कृष्णा नन्द पाण्डेय ने कहा स्नातक संवाद यात्रा के माध्यम से हम केसरिया भारत के संकल्प को जन जन तक पहुँचाने व बेरोजगार स्नातकों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए सरकार द्वारा बेरोजगार स्नातकों के लिए वर्ष में 100 दिन की रोजगार गारंटी योजना लागू कराना हमारा संकल्प है, बेरोजगार स्नातकों को व उनके परिवार की सुरक्षा की दृष्टि से सरकार को कम से कम बीस लाख रुपए का दुर्घटना बीमा करवाना चाहिए ताकि भविष्य में किसी भी प्रकार की

दुर्घटना के बाद उनके परिवार को आर्थिक सहायता मिल सके, प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षकों से केवल पठन पाठन का ही कार्य कराया जाए, जन गड़ना से मत गड़ना तक व अन्य कार्य बेरोजगार स्नातकों से करवाना चाहिए, यह एक बड़ी समस्या है जिस पर सरकार को गंभीरता से विचार करना होगा, सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए धरोहर संरक्षण, केसरिया भारत के कार्यकर्ता विगत कई वर्षों से सड़क पर आवाज उठा रहे हैं, ये आवाज जब सदन में उठेगी तभी इस समस्या का समाधान होगा, केसरिया भारत बेरोजगार स्नातकों के हक की लड़ाई लड़ने के लिए प्रतिबद्ध है, सरकार इस विषय पर जब तक कोई ठोस निर्णय नहीं लेती है तब तक हमारा संघर्ष स्नातक संवाद यात्रा के माध्यम से निरन्तर चलता रहेगा। वक्ताओं ने केसरिया भारत के

प्रदेश अध्यक्ष गौरिश सिंह ने कहा महंगी शिक्षा से कभी अभिभावक तो कभी छात्र आत्महत्या के लिए विवस हो रहा है, पूरे देश में जिसका निदान केवल एक बोर्ड, एक फीस, एक पाठ्यक्रम के द्वारा ही किया जा सकता है, प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षकों से केवल पठन पाठन का ही कार्य कराया जाए, जन गड़ना से मत गड़ना तक व अन्य कार्य बेरोजगार स्नातकों से कराया जाए। कार्यक्रम की अध्यक्षता विजय पाठक ने किया, संचालन गौरविमश्र ने किया, समापन श्री हनुमान चालीसा पाठ से हुआ। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से, शुभम पाण्डेय, अजय मिश्र, आदेश चौबे, मुन्ना चौबे, अमन त्रिपाठी, सोनू गुप्ता, माधव कृष्ण मालवीय, वब्बू शुक्ला, सुनील प्रजापति, सहित गणमान्य युवा उपस्थित रहे।

श्रम संहिताएं : मजदूरी कम करके मनाफा बढ़ाने का हथियार

(आलेख : सुदीप दत्ता, अनुवाद : संजय परातो)

21 नवंबर, 2025 को केंद्र सरकार ने श्रम को दुनिया में 'लचीलापन' लाने के मकसद से चार श्रम संहिताओं को अधिसूचित कर दिया है। इसके जवाब में, देश भर के मजदूर और किसान सड़कों पर उतर आए हैं, उन्होंने चारों श्रम संहिताओं की प्रतियां जलाई हैं और उन्होंने पहले से ही आम हड़ताल की तैयारी शुरू कर दी है।

इसमें कोई शक नहीं कि इन संहिताओं को थोपने से हमारे देश के शासन में फासीवाद का बढ़ना और भी साफ हो जाता है। इसके साथ ही, यह भी याद रखना चाहिए कि फासीवाद एक राजनीतिक हथियार के तौर पर तब उभरता है, जब पूंजीवाद आम तरीकों से अपने संकट को हल नहीं कर पाता। इसलिए, इन श्रम संहिताओं के ठोस ऐतिहासिक और राजनीतिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को समझना बहुत जरूरी है।

भारतीय श्रम कानूनों को संहिताबद्ध करने का प्रस्ताव दूसरे राष्ट्रीय श्रम आयोग से आया था। पहला राष्ट्रीय श्रम आयोग (1966-69), हालांकि स्वाभाविक रूप से श्रम को निचोड़ने को आसान बनाने और व्यवस्थित करने के लिए बनाया गया था, लेकिन यह कल्याणकारी राज्य के ढांचे पर आधारित था -- जो कुछ हद तक श्रम सुरक्षा, रोजगार सुरक्षा, सामूहिक सौदेबाजी और मजबूत नियमन को बढ़ावा देता था। ये एक नए आजाद हुए उपनिवेश में पूंजीवाद के निर्माण के लिए जरूरी थे। इसके विपरीत, दूसरा आयोग (1999-2002), जो नवउदारवादी सोच से प्रभावित था, श्रम को मुख्य रूप से एक आर्थिक माल के रूप में देखता था, नियमन को बाजार के लिए गड़बड़ी मानता था, और दक्षता और व्यापार करने में आसानी के नाम पर सुरक्षा कानूनों को कमजोर करना चाहता था, और राज्य को पूंजी संवय के साधन के रूप में पुनर्निर्भाषित कर रहा था। सभी श्रम कानूनों को चार या पांच संहिताओं में बदलने के आयोग के प्रस्ताव का ट्रेड यूनियनों ने जोरदार विरोध किया था और 2003 में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए थे। 2004 में सरकार बदल गई और संहिताकरण की प्रक्रिया को रोक दिया गया था।

बाद की सरकारों ने टुकड़ों में सुधार शुरू किए, लेकिन मौजूदा कानूनों पर पूरी तरह से हमला नहीं किया। 2014 में मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद संहिताकरण की प्रक्रिया फिर से शुरू हुई। हालांकि ये संहिताएं 2019 और 2020 में संसद में पारित हो गई थीं, लेकिन देश भर में बड़े पैमाने पर विरोध और प्रतिरोध के कारण पछिले ज़रूरी नहीं

उनकी अधिसूचना टली हुई थी। लेकिन सरकार की मौजूदा बेचैनी को समझने के लिए, सबसे पहले श्रम बाजार के लचीलेपन के पूंजीवादी सैद्धांतिक ढांचे की जांच करना जरूरी है। इसका तर्क है कि चूंकि स्थायी रोजगार मजदूरों की सौदेबाजी की ताकत और मजदूरी को मजबूत करता है, इससे कामगार मिलने में रुकावट आती है। यह दावा करता है कि असुरक्षित रोजगार निवेश को आकर्षित करेगा और मजदूरों की भर्ती बढ़ाएगा।

यह तर्क कई कारणों से पूरी तरह से गलत है। पहला, भारत में श्रम कानून कार्यबल के सिर्फ बहुत छोटे-से हिस्से को ही कवर करते हैं, क्योंकि 90 प्रतिशत से ज्यादा मजदूर असंगठित या स्व रोजगार के क्षेत्र में हैं और ज्यादातर श्रम नियमन के दायरे से बाहर हैं। दूसरा, राजनीतिक और निजी, दोनों क्षेत्रों में संविदा और दूसरे अनियमित तरह के रोजगार के बड़े पैमाने पर इस्तेमाल के बावजूद, भारत में ऐतिहासिक रूप से ज्यादा बेरोजगारी बनी हुई है, जिससे पता चलता है कि लचीलेपन से रोजगार नहीं बढ़ा है। सबसे हैरानी की बात यह है कि 2014 में राजस्थान सरकार द्वारा मौजूदा संहिता के हिसाब से अपने श्रम कानूनों में बदलाव करने के बाद भी, संगठित क्षेत्र में रोजगार में कोई खास बढ़ोतरी नहीं हुई है।

असल में, श्रम के लचीलेपन का सिद्धांत से के नियम द्वारा फैलाई गई एक गलत कल्पना पर आधारित है। यह नियम कहता है कि सारा मुनाफा या अधिशेष पूंजीपति वर्ग तुरंत निवेश कर देगा; इसलिए, मालिकों के लिए ज्यादा अधिशेष का मतलब है और ज्यादा निवेश और ज्यादा रोजगार देना। लेकिन सच्चाई यह है कि पूंजीपति उत्पादक क्षेत्र में तभी निवेश करते हैं, जब रिटर्न की दर दूसरे क्षेत्रों से ज्यादा हो। इसलिए, सभी क्षेत्रों में निवेश की पाश्चात्य प्रवृत्ति को बनाए रखने के लिए, सभी उद्योगों में पूंजी पर रिटर्न समान रूप से ज्यादा होना चाहिए। इसके लिए, सभी क्षेत्रों में मजदूरी लागत कम करना होगा। लेकिन इससे एक और संकट पैदा होता है -- कम खपत और ज्यादा उत्पादन का संकट।

उस बिन्दु पर आने से पहले, भारत की औद्योगिक सच्चाई पर एक नजर डालना जरूरी है। कई सालों से, भारत का औद्योगिक उत्पादन तेजी से धीमा हो रहा है। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (इंडेक्स ऑफ इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन) ने चौहद महीनों में सबसे कम वृद्धि दर्ज की है। इस मंदी के साथ-साथ कंपनियों के बंद होने की एक चौकाने वाली लहर भी है : पछिले पाँच सालों में, 2.04



लाख से ज्यादा निजी कंपनियों बंद हो गई हैं, और सरकार ने साफ कर दिया है कि इन बंद कंपनियों के कर्मचारियों के पुनर्वास (फिर से नौकरी देने) की कोई योजना नहीं है। जबकि कंपनियों निवेश की कमी को सही ठहराने के लिए अपेक्षित कम रिटर्न का हवाला देती हैं, हैरानी की बात यह है कि वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत का कॉर्पोरेट मुनाफा 15 साल के उच्चतम स्तर पर पहुँच गया!

असल में, सरकार की आर्थिक नीतियों में बड़े कॉर्पोरेट मुनाफे के पक्ष में साफ तौर पर झुकाव दिखाता है, जो अकेले वित्तीय वर्ष 2025 में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के 58,000 करोड़ रुपयों से ज्यादा के और वित्तीय वर्ष 2015-16 से वित्तीय वर्ष 2024-25 तक कुल 12.00 करोड़ रुपए के ऋण माफ करने से पता चलता है, जिससे बड़े दिवालियों का बोझ जनता पर पड़ रहा है। इस अंतरण के साथ-साथ, सरकार ने ऐसी प्रोत्साहन योजना भी शुरू की है, जो वृद्धि और रोजगार पैदा करने के नाम पर जनता का पैसा बड़ी निजी कंपनियों को देती है, खासकर रोजगार-संबद्ध प्रोत्साहन (एम्प्लॉयमेंट लिंकड इंसेंटिव) योजना, जिसका बजट 99,446 करोड़ रुपये है, जो निवेश, तकनीकी उन्नयन या रोजगार पैदा करने के लिए बहुत कम जवाबदेही के साथ बड़ी सब्सिडी देती है।

इन बड़ी रियायतों के बावजूद, 2022-23 में उत्पादकता में 2.38% की गिरावट आई है, सकल निश्चित पूंजीनिर्माण में मशीनरी का हिस्सा सिकुड़ गया है और निजी कंपनियों मुनाफे को आधुनिकीकरण या तकनीक में दोबारा निवेश नहीं कर रही हैं, जिससे भारत धीरे-धीरे एक असली औद्योगिक आर्थिकी के बजाय सिर्फ एक असेंबली हब बनता जा रहा है।

निश्चित रूप से, सभी प्रोत्साहन उपायों को औद्योगिक निवेश में नहीं बदला जाता; तो इसका

बहुत खास कारण है -- नवउदारवाद के तहत पूंजी का अत्यधिक केंद्रीकरण। इस वृद्धि का फायदा पूरी तरह से लगभग टॉप 1% लोगों को मिलता है। यहां तक कि टॉप 500 कंपनियों में भी, मुनाफे के संचय का पैटर्न चिंताजनक है। टॉप 10 फर्में बहुत ज्यादा मुनाफा कमाती हैं। इनके बाद की 40-50 कंपनियां भी अच्छा मुनाफा कमाती हैं। लेकिन बाकी 450 कंपनियां संघर्ष कर रही हैं। भारतीय पूंजीवाद पर अब कुछ बड़े कॉर्पोरेट समूहों का दबदबा है। उनका मुनाफा उनकी लंबी मूल्य श्रृंखला में लागत कम करने पर निर्भर करता है।

यहां पर ढांचागत संकट साफ दिखाई देता है। बड़ी कंपनियों का अगला समूह अपने मुनाफे को सिर्फ अपने ज्यादा वेतन वाले कर्मचारियों के फायदे कम करके ही बनाए रख सकता है; लेकिन इस समूह पर हमला करने से महंगी चीजों के लिए उपभोक्ता बाजार सिकुड़ जाएगा। कर्मचारियों के इस समूह को उदारकरण के शुरूआती दशकों में फायदा हुआ था, लेकिन 2017 के बाद उनकी आय कम होने लगी और 2024 तक भी उसमें सुधार नहीं हुआ है, और इस तरह, एक स्पष्ट उपभोक्ता संकट सामने आया है। केंद्र सरकार द्वारा 2025-26 में दी गई आयकर में राहत असल में इसी विरोधाभास को दूर करने की एक कोशिश है।

इसलिए, ऊपरी-स्तर की, ज्यादा वेतन वाली कंपनियों के लिए बचने का प्राकृतिक रास्ता यह है कि वे अपना बोझ और नीचे की तरफ धकेल दें। यह अब मुमकिन है, क्योंकि मध्यम और छोटी कंपनियों अपनी मूल्य श्रृंखला में आपूर्तिकर्ता के तौर पर काम करती हैं। ये मध्यम और छोटी कंपनियां कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण कीमतें नहीं बढ़ा पाती हैं। इसके अलावा, ट्रंप द्वारा लगाया गया 50 प्रतिशत टैरिफ, जिसका मकसद अमेरिका में आने वाले संकट को कम करना और उसका बोझ भारत दंड

डालना है, निर्यात-माल बाजार की कीमतों पर और नीचे की तरफ दबाव डालेगा। और इसलिए, इस बड़े रोजगार-प्रदाय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग (एमएसएमई) क्षेत्र को जिंदा रखने, निवेश करने और संकट को कम करने के लिए, मोदी सरकार ने श्रम संहिता लाया है -- जिससे वे मजदूरों का शोषण और तेज कर सकें। ये संहिताएं मजदूरों को कम करती हैं, रोजगार को अस्थायी बनाती हैं और मजदूरों के अधिकारों को कुचलती हैं। इसमें कोई शक नहीं कि इन संहिताओं की पूरी प्रणाली भारतीय पूंजीवाद के मौजूदा संकट को मध्यम और छोटे उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों के सबसे गरीब तबके पर अंतर्गत करने की एक प्रक्रिया है, और श्रम संहिताओं में किए गए बदलाव इस बात को बिल्कुल साफ कर देते हैं।

चार नई श्रम संहिताएं, मुख्य क्षेत्रों में कार्यरत मजदूरों की संख्या की सीमा को तेजी से बढ़ाकर, श्रम सुरक्षा को व्यवस्थित रूप से कमजोर करती हैं। इन मुख्य क्षेत्रों में तकनीकी उन्नति के कारण इस संख्या को कम किया जाना चाहिए था। लेकिन ऐसा न करके, संगठित क्षेत्र -- और यहां तक कि एएमएसएमई -- में भी ज्यादातर मजदूरों को कानूनी सुरक्षा से बाहर कर दिया गया है। पेशागत सुरक्षा, स्वास्थ्य और कामकाजी परिस्थितियां संहिता (ओएसडी कोड) कारखाने में काम करने वाले मजदूरों की संख्या की सीमा बढ़ाती है और ठेका मजदूर नियमन के लागू होने की सीमा 20 से बढ़ाकर 50 मजदूर कर देती है, जबकि औद्योगिक संबंध संहिता (इंडस्ट्रियल रिलेशंस कोड) कामबंद, छंटनी और बंद करने के साथ-साथ स्थायी आदेश के लिए पहले से अनुमति की जरूरत को 100 से बढ़ाकर 300 मजदूर कर देता है, जिससे मालिकों को अपनी मज्जी से कर्मचारियों को रखने और निकालने (हायर एंड फायर) की छूट मिल जाती है। सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण के प्रावधानों को भी इसी तरह कमजोर किया गया है, जिससे मालिक सुरक्षा या कल्याण अधिकारी नियुक्त करने, कैंटीन, क्रेच या एम्बुलेंस सेवाएं प्रदान करने जैसे दायित्वों से बच सकते हैं। ये संहिताएं स्थायी काम के लिए भी निश्चित-अवधि रोजगार को कानूनी बनाते हैं, जिससे नौकरी की असुरक्षा आम बात हो जाती है, बरिष्ठता और पदोन्नति का मत जोर होते हैं, और सामूहिक रूप से संगठित होने को हतोत्साहित किया जाता है। यूनियन पूंजीयन को और मुश्किल बनाकर, अनिवार्य नोटिस और सुलह प्रक्रियाओं के माध्यम से हड़तालों पर लगभग रोक लगाकर, और गंभीर दंड

लगाकर मौलिक श्रम अधिकारों में और कटौती की गई हैं। आखिर में, ये संहिताएं काम के घंटों को 12 घंटे तक बढ़ाने, ओवरटाइम सुरक्षा को कमजोर करने और 12 घंटे के कार्यदिवस के साथ चार-दिवसीय कार्य सप्ताह को वैध बनाने का मौका देती हैं, जिससे कर्मचारियों के स्वास्थ्य और पारिवारिक जीवन को गंभीर नुकसान होता है। हर साल, हमारे देश में कार्यस्थलों पर दुर्घटनाओं में हजारों कर्मचारी मर जाते हैं। नई श्रम संहिता ने कर्मचारियों की सुरक्षा से संबंधित निरीक्षण प्रणाली को बहुत कमजोर कर दिया है।

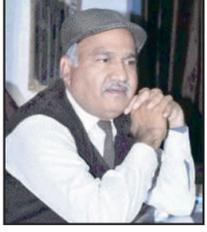
इसके साथ ही, श्रम बल नीति 2025 भी आई है, जिसका मुख्य मकसद पूरे देश के श्रम बल को एक सिंगल डिजिटल डेटाबेस में लाना और पूंजी की जरूरतों के हिसाब से उन्हें आपूर्ति करना है; सभी स्थायी कामों को गिग-नेचर श्रम से बदल दिया जाएगा -- जिसका अर्थ है कि पूरे श्रम बल को धीरे-धीरे सभी नियमनों से बाहर धकेलने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। बिना रोक-टोक की प्लू का यह इंतजाम असल में भारत के संकटग्रस्त पूंजीवाद को बचाने के लिए संकट का बोझ मेहनतकशों पर डालने की ही प्रक्रिया है।

इस तरह, नई फासीवादी प्रवृत्ति सामने आई है, जिसका काम मजदूर वर्ग की विरोध करने की क्षमता को खत्म करना है, जिससे बिना किसी रुकावट के पूंजीवादी मुनाफाखोरी हो सके। साथ ही, नव-फासीवादी का उदय यह दिखाता है कि पूंजीवाद अपने ही व्यवस्थागत कमियों में फंस रहा है, और नव-फासीवादी नीतियां ही इससे बचने का उसे एकमात्र रास्ता लग रही हैं।

आज देश के संगठित आंदोलन को सुरक्षात्मक मानसिकता से बाहर आना होगा। इन श्रम संहिताओं को हराने की लड़ाई को सिर्फ विरोध तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि इसे और ज्यादा आक्रामक बनाना चाहिए, जिसका मकसद पूरी व्यवस्था को बदलना हो। यह संकट ऐसे युवा आंदोलनों की मांग करता है, जो मेहनतकश लोगों के बीच सामूहिक शक्ति और नई चेतना पैदा करें। पूंजीवाद के बढ़ते विरोधाभासों ने वैकल्पिक सामाजिक और आर्थिक संभावनाएं पैदा की हैं; हमारा काम है कि हम उन्हें गंभीरता से पहचानें और सामाजिक बदलाव के लिए चेतना बढ़ाएं।

(लेखक संतर आरॉफ इंडियन ट्रेड यूनियनस (सीटू) के नेता-निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

पढ़ाई में जब न लग रहा हो मन



विजय गर्ग

हर छात्र के जीवन में ऐसे दौर आते हैं जब किताब खुली होती है, आँखें पन्नों पर होती हैं, लेकिन मन कहीं और भटक रहा होता है। यह स्थिति आलस्य नहीं, बल्कि मानसिक थकान, दबाव या एकरसता का संकेत होती है। सवाल यह नहीं कि मन क्यों नहीं लग रहा, बल्कि यह है कि इससे कैसे निपटा जाए।

आज की पढ़ाई केवल याद करने तक सीमित नहीं रही। लगातार परीक्षा, अंक, प्रतिस्पर्धा और तुलना—ये सब मिलकर दिमाग पर बोझ डालते हैं। ऐसे में मन का उचटना स्वाभाविक है। कई बार छात्र खुद को दोष देने लगते हैं—“मुझमें अनुशासन नहीं है”, “मैं मेहनती नहीं हूँ”—जबकि असल समस्या तरीका और माहौल होता है।

जब पढ़ाई में मन न लगे, तो सबसे पहले रुकना जरूरी है। जबरदस्ती पढ़ने से बेहतर है कुछ देर का ब्रेक लेना—हल्की सैर, संगीत, या बस आँखें बंद कर गहरी साँसें। दिमाग को भी आराम चाहिए, जैसे शरीर को।

दूसरा कदम है तरीका बदलना। एक ही तरह से पढ़ते रहना ऊब पैदा करता है। कभी लिखकर पढ़िए, कभी किसी को समझाइए, कभी वीडियो या चित्रों की मदद लीजिए। विषय को जीवन से जोड़ने की कोशिश कीजिए—इतिहास केवल तारीखें नहीं, कहानियाँ हैं; विज्ञान केवल सूत्र नहीं, जिज्ञासा है।

लक्ष्य बहुत बड़े हों तो मन घबरता है। इसलिए पढ़ाई को छोटे हिस्सों में बाँटिए। “आज पूरा अध्याय” की जगह “आज पाँच पेज” तय कीजिए। छोटे लक्ष्य पूरे होने पर आत्मविश्वास लौटता है, और मन अपने आप जुड़ने लगता है।

सबसे जरूरी बात—खुद से बातचीत। यह मान लेना कि हर दिन समान ऊर्जा नहीं होती। कभी-कभी मन का न लगना यह भी बताता है कि हमें अपने डर, दबाव या अपेक्षाओं पर बात करने की जरूरत है—किसी दोस्त, शिक्षक या परिवार के सदस्य से।

पढ़ाई कोई मशीन का काम नहीं, यह इंसान की यात्रा है—उतार-चढ़ाव के साथ। जब मन न लगे, तो खुद पर सख्त



नहीं, बल्कि समझदार बनिए। क्योंकि अक्सर मन को जोर से नहीं, ध्यान से पढ़ाई की ओर लौटाना जा सकता है।

पढ़ाई में मन कैसे लगाएँ? नजदीक आते 2026 के बोर्ड एग्जाम और एंट्रेस एग्जाम के बीच अगर आप भी इस सवाल का जवाब तलाश रहे हैं, तो यहाँ आपकी समस्या का हल मिल सकता है। इस लेख में ऐसे 5 तरीके बताए गए हैं, जो परीक्षा में नंबर बढ़ाने में आपकी मदद कर सकते हैं।

पढ़ने में मन नहीं लगता। फोकस नहीं कर पाते। किताब खोलकर बैठते तो हैं, लेकिन ध्यान भटकता रहता है। कुछ पढ़ा भी तो वो याद नहीं रहता। दुनियाभर में आधी से ज्यादा जनसंख्या इस परेशानी से जूझती है। बस यहाँ कुछ लोग टॉपर बन जाते हैं, कुछ तेज तर्रार होते हुए भी पीछे रह जाते हैं। अब ऐसे में करे तो क्या करें? इस आर्टिकल में इसी मसले पर मदद देने की कोशिश की गई है। ऐसे 5 टिप्स बताए गए हैं, जिन्हें अपनी आदत में शामिल करके आप भी एग्जाम में अच्छे नंबर हासिल कर सकते हैं। विभिन्न एजुकेशन एक्सपर्ट्स और काउंसलर्स द्वारा

कभी सोचा है कि जब भी आप पढ़ने बैठते हैं, तो आपका ध्यान भटकाने वाली सबसे बड़ी चीज क्या होती है? आज के दौर में 90% से ज्यादा लोग डिजिटली डिस्ट्रैक्ट होते हैं। यानी फोन, टैब, लैपटॉप या कोई और गैजेट जहाँ वो किसी भी तरह से इंटरनेट की दुनिया का हिस्सा बन पाते हैं। जो चीजें ध्यान भटकाती हैं और पूरा

समय बर्बाद कर देती हैं। गांध बांध लें कि पढ़ते वक्त अपना फोन या ऐसा कोई भी गैजेट बंद करके अपने रूम से ही बाहर रख देंगे। आपके स्टडी जॉन में एंटरटेनमेंट की कोई भी चीज नहीं होनी चाहिए। एंटरटेनमेंट/कंप्यूटर जरूरी है, तो उसपर उस वक्त पढ़ाई से जुड़ी चीजों के अलावा और कोई टैब खुला न हो।

2. अपनी-अपनी एनर्जी दिन के 24 घंटे में वो कौन सा समय है जब आप सबसे ज्यादा एनर्जेटिक महसूस करते हैं। सबके लिए ये वक्त अलग-अलग हो सकता है। किसी के लिए सुबह तो किसी के लिए रात का समय पढ़ने के लिए बेहतर हो सकता है। उस टाइम को पहचानें और उस समय वो सब्सक्रिप्स या टॉपिक्स पढ़ें जो आपको मुश्किल लगते हैं। जब सुस्ती लगती हो, तब हल्के विषय उठाए।

3. सिलेबस के छोटे हिस्से बनाएँ जल्दी-जल्दी सिलेबस पूरा करने की धुन पलटवाने कर सकती है। एक बार में ढेर सारे चैप्टर निपटाने के चक्कर में न रहें। सिलेबस को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटें। चैप्टर की जगह, घंटों या पन्नों के आधार पर लक्ष्य तय कर सकते हैं। जैसे-आज घंटेभर में 4 पेज पढ़ना है, या 1 घंटे में 10 सवाल हल करने हैं। अब आप सोचेंगे इससे क्या फायदा होगा? तो समझिए, जब हम छोटे-छोटे लक्ष्य बनाकर उसे पूरा करते जाते हैं, तो सफलता का एहसास होता है। दिमाग और मन में संतोष होता है।

जिसके बाद अगले लक्ष्य के लिए पूरी लगन से जुटने का मन करता है।

4. पैसिव नहीं, एक्टिव रीडिंग करें पैसिव रीडिंग का मतलब होता है किताब या नोट्स खोलकर बस आँखों से उसे पढ़ते रहना। ये बड़ा बोरिंग काम है। कुछ ही मिनटों में मन ऊबने लगता है। बजाय इसके, एक्टिव रीडिंग शुरू करें। यानी आँखों से पढ़ने के साथ-साथ जरूरी चीजें अंडरलाइन/ हाईलाइट करते जाएं, बोल-बोल कर पढ़ें, साथ-साथ जरूरी प्वाइंट्स नोट करते जाएं या फिर जो पढ़ा उसे बोलकर या लिखकर खुद को या किसी और को समझाएँ, विजुअलाइज करें। ये हमारे दिमाग को नई जानकारी बेहतर तरीके से ग्रहण करने और उसे याद रखने में मदद करता है।

5. तकनीक अपनाएँ गंभीर विद्यार्थी होने का मतलब ये नहीं कि घंटों तक लगातार बैठकर पढ़ते ही रहें। उल्टा ये नुकसानदायक हो सकता है। क्योंकि वैज्ञानिक शोध भी कहते हैं कि एक निश्चित समय के बाद लगातार पढ़ी हुई सारी चीजें दिमाग लंबे समय तक याद नहीं रख सकता। इसका हल है 30मिनेटो टेक्नीक, जो कहता है कि आप 30मिनेट पढ़ें, फिर 5मिनेट का ब्रेक लें। 3-4 बार यही साइकल दोहराने के बाद एक 25-30 मिनेट का लंबा ब्रेक लें। इससे दिमाग रिलेक्स होता है और बेहतर तरीके से याद मिलती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

आज की पढ़ाई केवल याद करने तक सीमित नहीं रही। लगातार परीक्षा, अंक, प्रतिस्पर्धा और तुलना—ये सब मिलकर दिमाग पर बोझ डालते हैं। ऐसे में मन का उचटना स्वाभाविक है। कई बार छात्र खुद को दोष देने लगते हैं—“मुझमें अनुशासन नहीं है”, “मैं मेहनती नहीं हूँ”—जबकि असल समस्या तरीका और माहौल होता है।

पत्रिका बूस्ट: छात्र मन को शक्ति प्रदान करना

डॉ विजय गर्ग

तेजी से सोशल मीडिया अपडेट और अंतहीन स्क्रॉलिंग के प्रभुत्व वाले युग में, पारंपरिक पत्रिका छात्र विकास के लिए एक आश्चर्यजनक रूप से शक्तिशाली उपकरण बनी हुई है। चमकदार कवर के अलावा गहरी गोलखोरी और विशेष अंतर्दृष्टि की एक क्यूरेटेड दुनिया है जो छात्र को शैक्षणिक और व्यक्तिगत बढ़त को काफ़ी हद तक तेज कर सकती है। यहाँ बताया गया है कि नियमित रूप से पत्रिका पढ़ना छात्रों की वृद्धि के लिए रतीन गुना खतरा का काम करता है। 1। ज्ञान: पाठ्यपुस्तक से परे जबकि पाठ्यपुस्तकें आधार प्रदान करती हैं, पत्रिकाएँ संदर्भ प्रदान करती हैं। चाहे वह भूगोल के लिए नेशनल जियोग्राफिक हो या जीव विज्ञान के लिए साइंटिफिक अमेरिकन, पत्रिकाएँ कक्षा सिद्धांत और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाटती हैं। वर्तमान घटनाएँ: द इकोनामिस्ट या टाइम जैसी पत्रिकाएँ छात्रों को वैश्विक राजनीति और अर्थशास्त्र को इस तरह से समझने में मदद करती हैं, जैसा कि समाचार के अंश नहीं समझ सकते। शब्दावली विस्तार: पत्रिका पत्रकारिता अक्सर परिष्कृत, वर्णनात्मक भाषा का उपयोग करती है जो छात्र की पढ़ने की समझ और लेखन शैली में सुधार करती है। विविध परिप्रेक्ष्य: विभिन्न



संस्कारों और खोजी लेखों के संपर्क में आने से आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित किया जाता है और छात्रों को अपनी स्थिति को सुदृढ़ राय बनाने में मदद मिलती है। 2। फोकस: रीडिजल मस्तिकका का प्रतिकारक आधुनिक छात्र अक्सर स्मार्टफोन सूचना को धीरे-धीरे रिनरंतर आंशिक ध्यान से पीछे छोड़ता है। एक लंबे-फॉर्म वाले लेख को पढ़ने के लिए डीप वर्क की आवश्यकता होती है—प्रवाह की स्थिति जो शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक है। 3। शक्ति: मानसिक लचीलापन और आत्मविश्वास का निर्माण पत्रिकाओं से प्राप्त रशक्ति शारीरिक नहीं है, बल्कि बौद्धिक और भावनात्मक है। बौद्धिक आत्मविश्वास:

एक अच्छी तरह से पढ़ने वाला छात्र कक्षा चर्चाओं और बहसों में भाग लेने में अधिक सहज महसूस करता है। रशक्तिवत-पाठ्यक्रम ज्ञान होने से वे विश्वविद्यालय के साक्षात्कारों और निबंधों में अलग दिखते हैं। प्रेरणा और रोल मॉडल: वैज्ञानिक, उद्योगपति और कार्यकर्ताओं के प्रोफाइल सफलता के लिए एक खाका प्रदान करते हैं। यह देखकर कि कैसे अन्य लोग असफलता पर काबू पाते हैं, युवा पाठकों में रशक्ति की मानसिकता पैदा होती है। तनाव में कमी: अध्ययनों से पता चलता है कि सिर्फ छह मिनेट का केंद्रित पढ़ना तनाव के स्तर को 68% तक कम कर सकता है। परीक्षा के दबाव का सामना करने वाले छात्र

के लिए पत्रिका एक अत्यंत आवश्यक चर्चाओं और बहसों में भाग लेने में अधिक सहज महसूस करता है। रशक्तिवत-पाठ्यक्रम ज्ञान होने से वे विश्वविद्यालय के साक्षात्कारों और निबंधों में अलग दिखते हैं। प्रेरणा और रोल मॉडल: वैज्ञानिक, उद्योगपति और कार्यकर्ताओं के प्रोफाइल सफलता के लिए एक खाका प्रदान करते हैं। यह देखकर कि कैसे अन्य लोग असफलता पर काबू पाते हैं, युवा पाठकों में रशक्ति की मानसिकता पैदा होती है। तनाव में कमी: अध्ययनों से पता चलता है कि सिर्फ छह मिनेट का केंद्रित पढ़ना तनाव के स्तर को 68% तक कम कर सकता है। परीक्षा के दबाव का सामना करने वाले छात्र

के लिए पत्रिका एक अत्यंत आवश्यक मानसिक अभयारण्य हो सकती है। छात्रों के लिए रणनीति इस माध्यम से अधिकतम लाभ उठाने के लिए, छात्रों को यह करना चाहिए विविधता लाएं: अपने पसंदीदा दूसरी को उनके आराम क्षेत्र से पूरी तरह हटकर रखें। एनोटेट: हाइलाइटर हाथ में रखें। पाठ के साथ शारीरिक रूप से जुड़ने से जानकारी को एन्कोड करने में मदद मिलती है। किसी करें: स्मृति को सुदृढ़ करने के लिए किसी लेख से एक दिलचस्प तथ्य अपने मित्र या शिक्षक के साथ साझा करें। सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद

नया युद्ध बिना घोषणा: वेनेजुएला और बदलती विश्व व्यवस्था

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

3 जनवरी 2026 की सुबह इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गई। वॉशिंगटन से आई एक घोषणा ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति को झकझोर दिया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बताया कि अमेरिकी सेनाओं ने व्यापक सैन्य कार्रवाई में वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी को हिरासत में ले लिया है। और उन्हें न्यूयॉर्क ले जाया जा रहा है जहाँ नार्को-टेरिज्म के आरोपों पर ट्रायल होगा। ट्रम्प ने साथ ही यह स्पष्ट किया कि वेनेजुएला का शासन और संक्रमण प्रक्रिया अब अमेरिका के "नियंत्रण" में होगी। यह कदम मात्र सैन्य हस्तक्षेप नहीं, बल्कि वैश्व-भू-राजनीतिक विस्फोट है जो तेल कीमतों को हिला सकता है और वैश्विक संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करेगा। दुनिया के सबसे बड़े तेल भंडार वाले देश में अमेरिकी प्रभाव की यह सीधी स्थापना रूस, चीन और ईरान के लिए खुला संकेत है। वेनेजुएला का संकट अचानक नहीं, बल्कि वर्षों की विफल नीतियों का परिणाम है। इसकी नींव झूठे शावैज के दौर में पड़ी, जब तेल आधारित समाजवादी मॉडल को समृद्धि का आधार बनाया गया। समय के साथ भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अक्षमता और आर्थिक कुप्रबंधन ने इस व्यवस्था को खोखला कर दिया। 2014 में वैश्विक तेल कीमतों में गिरावट ने संकट को उजागर किया और देश अतिमुद्रास्फूर्ति,

खाद्य कमी व स्वास्थ्य आपदा में डूब गया। परिणामस्वरूप लाखों नागरिकों को पलायन करना पड़ा। सत्ता बचाने के लिए निकोलस मादुरो ने रूस, चीन और क्यूबा का सहारा लिया तथा अमेरिकी प्रतिबंधों को चुनौती दी। इसके जवाब में ट्रम्प प्रशासन ने दबाव बढ़ाया। सितंबर 2025 से कैरिबियन क्षेत्र में तस्करी से जुड़े जहाजों पर हमलों ने तनाव तेज कर दिया। अंततः डेल्टा फोर्स और सीआईए के संयुक्त अभियान में मादुरो गिरफ्तार हुए। ट्रम्प ने इसे "नार्को-आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई" बताते हुए वेनेजुएला को "सुरक्षित संक्रमण" तक ले जाने की बात कही। लेकिन आलोचकों के अनुसार वास्तविक लक्ष्य विशाल तेल भंडारों पर नियंत्रण है, जो लैटिन अमेरिका में अमेरिकी प्रभुत्व की वापसी और क्षेत्रीय अस्थिरता का संकेत देता है।

इस संकट का सबसे तात्कालिक प्रभाव वैश्विक तेल बाजार पर पड़ा है। वेनेजुएला फिलहाल वैश्विक आपूर्ति का लगभग एक प्रतिशत, यानी करीब दस लाख बैरल प्रतिदिन तेल उत्पादन करता है, लेकिन उच्च भंडार दुनिया में सबसे बड़े हैं। हमले के बाद ब्रेट केवेल की कीमते साठ से इकसठ डॉलर प्रति बैरल के आसपास रहीं, पर भू-राजनीतिक जोखिम के कारण पाँच से दस डॉलर का बढ़ोतरी की आशंका है। यदि उत्पादन या निर्यात बाधित हुआ—जैसे बंदरगाहों की नाकेबंदी या बीमा अडचन—तो भारी कच्चे तेल की कमी से डील और परिष्कृत ईंधन महंगे हो सकते हैं। अभी बाजार में आपूर्ति की अधिकता है, अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार



लोगभग अड़तीस लाख बैरल प्रतिदिन का सरप्लस मौजूद है, इसलिए तत्काल असर सीमित रहा। लेकिन संघर्ष लंबा चला तो तेल अस्सी से सी डॉलर प्रति बैरल तक जा सकता है, जिससे वैश्विक मुद्रास्फीति तेज होगी। विशेषज्ञ इसे अल्पकालिक झटका और दीर्घकालिक संतुलन परिवर्तन मानते हैं। दीर्घकाल में यह संकट तेल कीमतों पर दबाव भी बना सकता है। यदि अमेरिकी प्रतिबंध हटते हैं और शेवरॉन जैसी कंपनियाँ निवेश करती हैं, तो वेनेजुएला का उत्पादन दो से तीन मिलियन बैरल प्रतिदिन तक पहुँच सकता है। इससे भारी कच्चे तेल की अधिकता होगी और कीमते पचास से साठ डॉलर के दायरे में सिमट सकती हैं। ट्रम्प का कहना है कि अमेरिकी कंपनियाँ वेनेजुएला के तेल उद्योग को

अत्यधिक लाभकारी बनाएंगी, जिससे पेट्रोडॉलर की पकड़ मजबूत होगी। लेकिन यदि गुरिल्ला प्रतिरोध, आंतरिक विद्रोह या रूस-चीन तेल प्रत्यक्ष हस्तक्षेप हुआ, तो उत्पादन में दस लाख बैरल की गिरावट कीमतों को तीस से चालीस डॉलर तक उछाल सकती है। इससे रूस और ईरान जैसी तेल-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं को गहरा झटका लगेगा। साथ ही यह ब्रिक्स की डी-डॉलरराइजेशन रणनीति को कमजोर कर सकता है, जबकि क्षेत्रीय अस्थिरता शिपिंग लागत बढ़ाकर नई चुनौतियाँ खड़ी करेगी।

वेनेजुएला संकट ने वैश्विक कूटनीति में तनाव की नई सीमाएँ खींची दी हैं। रूस और चीन इसे प्रत्यक्ष अमेरिकी हस्तक्षेप मानते हैं। रूस पहले ही सैन्य सहायता दे चुका है, जबकि चीन वेनेजुएला के

लगभग अस्सी प्रतिशत तेल निर्यात का आयात करता है। यदि अमेरिका पूर्ण नियंत्रण स्थापित करता है, तो रूस की यूक्रेन युद्ध फंडिंग पर सीधा प्रभाव पड़ेगा, वहीं ईरान को भी भारी कच्चे तेल के बाजार में नुकसान झेलना पड़ेगा। कुछ विश्लेषकों का मानना है कि "रिवर्स क्यूबन मिसाइल क्राइसिस" बता रहे हैं, जहाँ रूस या चीन लैटिन अमेरिका में सैन्य ठिकाने बनाने का प्रयास कर सकते हैं। क्षेत्रीय स्तर पर कोलंबिया, ब्राजील और निकारागुआ जैसे देशों में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ने की आशंका है। यह कदम संयुक्त राष्ट्र चार्टर की भावना के विरुद्ध माना जा रहा है, जिससे वैश्विक कूटनीति कमजोर हो सकती है। इसके बावजूद ट्रम्प प्रशासन इसे "नार्को-टेरिज्म विरोधी कार्रवाई" बताकर वैध ठहराने का प्रयास कर रहा है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव गहरा और बहुपक्षीय होगा। तेल कीमतों में उछाल से मुद्रास्फीति बढ़ेगी, जिसका सीधा असर भारत और चीन जैसे आयात-निर्भर देशों पर पड़ेगा। भारी कच्चे तेल के बड़े आयातक भारत को विशेष लागत दबाव झेलना पड़ सकता है। इसके विपरीत, कीमतों में गिरावट अमेरिकी उपभोक्ताओं को राहत दे सकती है और शेयर बाजारों में जोखिम लेने की प्रवृत्ति बढ़ा सकती है। सुरक्षा दृष्टि से अमेरिका पश्चिमी गोलार्ध में अपनी पकड़ मजबूत करेगा, लेकिन लैटिन अमेरिका में विरोध और असंतोष तेज होगा। कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि इससे पेट्रोडॉलर को अस्थायी संतुलन मिलेगा, जबकि ब्रिक्स देश वैश्विक भूगोल प्रणालियों की ओर तेजी से बढ़ेंगे। यदि संघर्ष

पनामा नहर तक पहुँचा, तो वैश्विक व्यापार को गहरा झटका लगेगा। आगे यह संकट कई राहें अपना सकता है। यदि अमेरिका संक्रमण प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से संभाल लेता है, तो तेल उत्पादन बढ़ेगा, कीमते संतुलित रहेंगी और रूस-चीन की रणनीतिक स्थिति कमजोर पड़ेगी। किंतु यदि व्यापक प्रतिरोध उभरा, तो यह इराक या अफगानिस्तान जैसा लंबा और महंगा फंदा बन सकता है। गुरिल्ला संघर्ष, आंतरिक विरोध और अंतरराष्ट्रीय दबाव अमेरिकी संसाधनों पर भारी बोझ डालेंगे। कम संभावना लेकिन उच्च प्रभाव वाले परिदृश्य—जैसे लैटिन अमेरिका में रूसी सैन्य अड्डा—दुनिया को नए शीत युद्ध के द्वार पर ला सकते हैं। ऐसे में भारत जैसे देशों को सतर्क नीति अपनानी होगी, क्योंकि ऊर्जा सुरक्षा आने वाले समय की सबसे बड़ी चुनौती बनने जा रही है।

वेनेजुएला का संकट किसी एक राष्ट्र की कहानी नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन को झकझोरने वाला तूफान है। तेल बाजारों में यह अस्थिरता के साथ दीर्घकालिक पुनर्संरचना लाएगा, जबकि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अमेरिका, रूस और चीन के बीच टकराव और तीखा होगा। यह संकट पेट्रोडॉलर को बल दे सकता है, पर डी-डॉलरराइजेशन की प्रक्रिया को भी तेज करेगा। इतिहास संभवतः इसे "ट्रम्प कोरोलरी" का रूप में याद रखे—अमेरिकी प्रभुत्व की निर्णायक वापसी। प्रश्न यही है कि क्या यह स्थिरता लाएगा या नए वैश्विक संघर्ष की नींव रखेगा। उच्च भविष्य में छिपा है, लेकिन दुनिया को इसके लिए तैयार रहना होगा।



संपादकीय

चिंतन-मनन



अजेय महिला: संस्कृति से पोषित, स्वतंत्रता से प्रज्वलित

कृति आरके जैन

आज का समय परिवर्तन की दहलीज पर खड़ा है, जहाँ परंपरा की जड़ें गहरी हैं और आधुनिकता की हवाएँ तीव्र। महिलाएँ इसी द्वंद के केंद्र में खड़ी हैं, अपने लिए दिशा तय करती हुई। एक तरफ पारिवारिक रूढ़ियों, सांस्कृतिक बंधन, तो दूसरी तरफ स्वतंत्रता की आकांक्षा और करियर की उड़ान। यह संघर्ष केवल टकराव नहीं, बल्कि चेतना की परख है, जहाँ महिलाएँ चुनौती ही नहीं दे रही, बल्कि नया इतिहास गढ़ रही हैं। परंपरा उन्हें जड़ों से बांधती है, जबकि आधुनिकता पंख देती है। प्रश्न यही है कि क्या वे दोनों को संतुलित कर पा रही हैं? या फिर चुनाव में चुनौती है अपनी पहचान? आज की महिलाएँ इस द्वंद को अक्सर में बाल रही हैं, आत्मबल से खुद को सशक्त बनाते हुए। वे न घर से विमुख हैं, न सपनों से समझौता कर रही हैं। यह उनकी निरंतर यात्रा है, जहाँ प्रत्येक कदम बदलाव की घोषणा है।

परंपरा की छाया में महिलाओं की भूमिका सदियों से निर्धारित रही है। घर की चारदीवारी, विवाह और संतान पालन ही उनके जीवन की परिधि मानी गई। भारतीय समाज में विशेष रूप से सतीत्व, सम्पन्न और त्याग को आदर्श बनाकर प्रस्तुत किया गया। सीता से रानी लक्ष्मीबाई तक, परंपरा ने महिलाओं को देवी का स्थान तो दिया, पर सीमाओं में बांधे रखा। आधुनिकता ने इसी दायरे को चुनौती दी। शिक्षा की रोशनी, रोजगार की निश्चित समय के बाद लगातार पढ़ी हुई सारी चीजें दिमाग लंबे समय तक याद नहीं रख सकता। इसका हल है 30मिनेटो टेक्नीक, जो कहता है कि आप 30मिनेट पढ़ें, फिर 5मिनेट का ब्रेक लें। 3-4 बार यही साइकल दोहराने के बाद एक 25-30 मिनेट का लंबा ब्रेक लें। इससे दिमाग रिलेक्स होता है और बेहतर तरीके से याद मिलती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

आधुनिकता की लहर ने महिलाओं को वैश्विक मंच प्रदान किया है। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और ऑनलाइन शिक्षा ने दूरियों को मिटा दिया। अब वे घर बैठे दुनिया से जुड़ रही हैं। कहीं उद्यमी बनकर स्टार्टअप चला रही हैं, तो कहीं राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। हालांकि यह राह सरल नहीं है। समाज की दृष्टि आज भी कठोर है। देर रात काम करने पर सवाल उठते हैं, और घर से बाहर कदम रखने पर संस्कृति की दुहाई दी जाती है। इसके बावजूद वे निरंतर आगे बढ़ रही हैं। इंद्रा न्यू से प्रियंका चोपड़ा तक, ये उदाहरण परंपरा को नई चुनौती देते हैं। वे साड़ी में बोर्डरूम पहनें और सपोर्ट ग्रुप से जुड़ती हैं। वे पंखों को नए अर्थ दे रही हैं, जहाँ विवाह विकल्प है, चाहिए विविधता लाएं: अपने पसंदीदा दूसरी को उनके आराम क्षेत्र से पूरी तरह हटकर रखें। एनोटेट: हाइलाइटर हाथ में रखें। पाठ के साथ शारीरिक रूप से जुड़ने से जानकारी को एन्कोड करने में मदद मिलती है। किसी करें: स्मृति को सुदृढ़ करने के लिए किसी लेख से एक दिलचस्प तथ्य अपने मित्र या शिक्षक के साथ साझा करें।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद

लड़कियों की भूमिका सीमित मानी जाती थी। आज की महिलाएँ इनसे सीख लेकर आगे बढ़ रही हैं। वे गांवों से निकलकर प्रशासनिक सेवाओं में पहुँच रही हैं और तकनीकी स्टार्टअप का नेतृत्व कर रही हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से परंपरा को आधुनिक रंग दे रही हैं, जैसे पारंपरिक व्यंजनों को वैश्विक पहचान दिलाया। यह उनका निर्णय है, जहाँ वे इतिहास को दोहराने के बजाय नया रचती हैं।

महिलाएँ अब संतुलन की कला साध रही हैं। परंपरा का पूर्ण त्याग उचित नहीं, क्योंकि वही संस्कृति की आधारशिला है। वहीं आधुनिकता को बिना सोचे अपनाया भी जोखिमपूर्ण है। इसलिए वे मिश्रित मार्ग चुन रही हैं। वर्क फ्रॉम होम ने इस संतुलन को सहज बनाया है, जहाँ घरेलू दायित्वों के साथ पेशेवर जीवन आगे बढ़ रहा है। योग और ध्यान से परंपरा जुड़ती है, जबकि डिजिटल एपस से जीवन प्रबंधन होता है। परिवारों में संवाद बढ़ा है, जहाँ पति और सास-ससुर का सहयोग भी दिखने लगा है। यह परिवर्तन धीमा जरूर है, पर स्थायी है। महिलाएँ अब अपनी बेटियों के लिए आदर्श बन रही हैं। वे सिखा रही हैं कि परंपरा का सम्मान करो, लेकिन आधुनिकता से भय मत खाओ। यही संतुलन उनकी असली शक्ति है।

समाज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पुरुषों को भी सोच में बदलाव लाना होगा, ताकि महिलाएँ बिना किसी बोझ के बढ़ सकें। महिला आरक्षण जैसे कानून सहायक हैं, पर वास्तविक परिवर्तन समाजी स्तर पर आवश्यक है। इसकी शुरुआत शिक्षा से होनी चाहिए, जहाँ लड़कियाँ परंपरा और आधुनिकता दोनों को समझें। एनजीओ और सरकारी योजनाएँ इस दिशा में सक्रिय हैं। फिर भी महिलाएँ स्वयं नेतृत्व कर रही हैं। वे मदान कर रही हैं, सवाल उठा रही हैं और परिवर्तन को गति दे रही हैं। जलवायु परिवर्तन से लेकर राजनीति तक, हर क्षेत्र में उनकी भागीदारी बढ़ रही है। परिपरा उन्हें धैर्य सिखाती है, आधुनिकता उन्हें साहस देती है। दोनों का मेल उन्हें अजेय बनाता है। यह उनका समय है, जहाँ वे केवल जी नहीं रहीं, बल्कि आगे बढ़ रही हैं।

भविष्य आशाजनक दिखाई देता है। तकनीक ने महिलाओं को और सशक्त बनाया है। एआई और वर्चुअल रियलिटी के माध्यम से वे घर से ही दुनिया को प्रभावित कर रही हैं। हालांकि चुनौतियाँ अब भी मौजूद हैं, जैसे जेंडर पैगैप और घरेलू हिंसा। इसके बावजूद संघर्ष जारी है। परंपरा अब बोझ नहीं, बल्कि ऊर्जा बन चुकी है। वे दीवानी मनाती हैं, फैशन में आगे हैं और साथ ही निवेश की फैसले भी लेती हैं। यह उनका चयन है, जहाँ वे स्वयं को परिभाषित कर रही हैं। समाज को स्वीकार करना होगा कि महिलाएँ अब सीमाओं में नहीं बंधीं। वे व्यापक हैं, बहुआयामी हैं। उनका मार्गस्वनिर्धारित है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता साथ चलते हैं।

आज की महिलाएँ परंपरा और आधुनिकता के बीच पुल बना रही हैं। वे न झुकती हैं, न टूटती हैं, बल्कि आगे बढ़ती हैं। उनका चुनाव सशक्तिकरण है, जहाँ परिवार, समाज और सामना करती हैं। किंतु नई पीढ़ी का दृष्टिकोण अलग है। वे काउंसिलिंग अपनाती हैं, उन्मुख बनवत करती हैं और सपोर्ट ग्रुप से जुड़ती हैं। वे पंखों को नए अर्थ दे रही हैं, जहाँ विवाह विकल्प है, चाहिए विविधता लाएं: अपने पसंदीदा दूसरी को उनके आराम क्षेत्र से पूरी तरह हटकर रखें। एनोटेट: हाइलाइटर हाथ में रखें। पाठ के साथ शारीरिक रूप से जुड़ने से जानकारी को एन्कोड करने में मदद मिलती है। किसी करें: स्मृति को सुदृढ़ करने के लिए किसी लेख से एक दिलचस्प तथ्य अपने मित्र या शिक्षक के साथ साझा करें।

CM के आदेश के बाद ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट एक्शन मोड में, राजधानी मो बसों की चेकिंग और सख्त

मनोरंजन शासक, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर : मुख्यमंत्री के आदेश के बाद ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट एक्शन मोड में है। राजधानी में हमारी बसों का सख्त इंस्पेक्शन शुरू हो गया है। खोड़ा ट्रांसपोर्ट कमिश्नर फिटनेस इंस्पेक्शन के लिए मैदान में उतर आए हैं। रोड सेफ्टी और पैसंजर सेफ्टी को ध्यान में रखते हुए ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट ने बड़े पैमाने पर एनफोर्समेंट ड्राइव शुरू की है। ट्रांसपोर्ट कमिश्नर अमिताभ ठाकुर की लीडरशिप में यह स्पेशल टीम बस रूट की चेकिंग कर रही है। एनफोर्समेंट टीम दोपहर में मास्टर कैटीन स्क्वायर पहुंची और चेकिंग की। गाड़ी का फिटनेस सर्टिफिकेट, ड्राइवर की फिजिकल और मेंटल कंडीशन और ड्राइविंग लाइसेंस चेक किया जा रहा है। यह भी चेक किया जा रहा है कि रोड सेफ्टी के सभी नियमों का पालन हो रहा है या नहीं। मास्टर कैटीन के बाद टीम अलग-अलग बस स्टॉपेज और डिपो पर

जाकर सरप्राइज चेकिंग करने वाली है। इस बीच, ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट के निर्देशों के बाद जिस रूट पर हमारी बसें जा रही हैं, वहां सख्त चेकिंग चल रही है। सभी पुलिस स्टेशन ऑफिसर्स को DCP की तरफ से निर्देश दिए गए हैं। बस ड्राइवरों की ब्रेथ एनालाइजर से चेकिंग की जा रही है। सभी पुलिस स्टेशन के तहत स्पेशल ड्राइव चलाई जा रही है। मुख्यमंत्री मोहन माझी ने बस एक्सीडेंट पर चिंता जताई। मुख्यमंत्री ने लगातार हो रहे एक्सीडेंट पर चिंता जताई और ड्राइवरों की रिस्क को बेहतर बनाने के लिए रेगुलर ट्रेनिंग का सुझाव दिया। मुख्यमंत्री ने ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट को हमारी बस मैनेजमेंट बोर्डी CRUT के साथ कोऑर्डिनेट करके इस प्रॉब्लम को सुधारने के लिए कदम उठाने और ड्राइवरों में सेंसिटिव रवैया बनाने और बसों की रेगुलर फिटनेस चेकिंग करने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने खास तौर पर हमारे बस ड्राइवरों की रिस्क को बेहतर बनाने पर जोर दिया

है। इसके साथ ही, मुख्यमंत्री ने MVIs से हमारी बसों की फिटनेस की रेगुलर जांच करने का भी आदेश दिया है। मुख्यमंत्री ने कॉमर्स और ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट को बस फिटनेस की जांच के लिए एक स्पेशल स्क्वाड बनाने का आदेश दिया है। मुख्यमंत्री ने कॉमर्स और ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट को सलाह दी है कि वे रेगुलर तौर पर स्थिति का रिव्यू करें ताकि ऐसी बुरी घटनाएं दोबारा न हों और स्थिति को सुधारने की कोशिश करें। मुख्यमंत्री ने मरने वाले के परिवार को 4 लाख रुपये का मुआवजा देने की घोषणा की है और घायलों के जल्द ठीक होने की कामना की है। ऑटो ड्राइवर एसोसिएशन आज भुवनेश्वर में एक ऑटो एक्सीडेंट में एक ऑटो ड्राइवर की मौत की घटना में अलग-अलग जगहों पर विरोध कर रहे हैं। सैकड़ों ऑटो ड्राइवर हमारे बस ड्राइवरों की लापरवाही से गाड़ी चलाने के खिलाफ विरोध कर रहे हैं। हमारी बसें राजधानी नहीं जा रही हैं।



डिब्बों से डिजिटल तक: भारतीय रेलवे का आधुनिक रूपांतरण

-सुनील कुमार महला

भारतीय रेल देश की जीवनेखा मानी जाती है और यह भारत के सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय रेल की खास बात यह है कि भारतीय रेल एशिया का सबसे बड़ा और विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है तथा पाठक जानते होंगे कि भारत में पहली रेलगाड़ी 16 अप्रैल 1853 को मुंबई के बोरीबंदर (वर्तमान छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस) से ठाणे के बीच चलाई गई थी तथा यह ऐतिहासिक यात्रा भारतीय रेल के इतिहास की शुरुआत मानी जाती है। पाठकों को बताता चलू कि इस पहली यात्री ट्रेन ने लगभग 34 किलोमीटर की दूरी तय की थी और इसमें करीब 400 विशिष्ट अतिथि सवार थे। ट्रेन को तीन भाग इंजनों-साहिब, सिंध और सुल्तान द्वारा खींचा गया था तथा इस अवसर पर ट्रेन के प्रस्थान के समय 21 तोपों की सलामी भी दी गई थी। बोरीबंदर से ठाणे तक की यह पहली रेल यात्रा न केवल परिवहन के क्षेत्र में क्रांतिकारी सिद्ध हुई, बल्कि भारत में सामाजिक, आर्थिक और औद्योगिक विकास की दिशा में एक नए युग की नींव भी बनी। गौरतलब है कि प्रतिदिन लगभग 2 करोड़ से अधिक यात्री भारतीय रेल से सफर करते हैं और यह आम लोगों के लिए यातायात का बहुत ही शानदार साधन है। भारतीय रेल देश के लगभग-लगभग हर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश को जोड़ती है तथा यह दुनिया का सबसे बड़ा नियोजक (सरकारी क्षेत्र) में से एक है। भारतीय रेल का आदर्श वाक्य है-'जीवन रेखा', जो इसकी भूमिका को दर्शाता है। वंदे भारत एक्सप्रेस भारत में निर्मित सेमी-हाई स्पीड ट्रेन है। कठाना गलत नहीं होगा कि रेल के क्षेत्र में हम लगातार प्रगति पर हैं। भारतीय रेल ने बीते कुछ ही वर्षों में आधुनिक तकनीक, तेज और सुरक्षित ट्रेनों, बेहतर आधारभूत संरचना तथा यात्री सुविधाओं के विस्तार के माध्यम से उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। वंदे भारत जैसी सेमी-हाई स्पीड ट्रेनों का संचालन,

रेलवे लाइनों का विद्युतीकरण, डिजिटल टिकटिंग, स्टेशन पुनर्विकास और माल परिवहन में सुधार इस प्रगति के सशक्त उदाहरण हैं। साथ ही, सुरक्षा मानकों को सुदृढ़ करने, स्वच्छता बढ़ाने और पर्यावरण के अनुकूल पहलें अपनाने से रेलवे देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में अहम भूमिका निभा रही है। निरंतर नवाचार और योजनाबद्ध विकास के साथ भारतीय रेल भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को सशक्त बना रही है। पाठकों को जानकारी देता चलू कि भारतीय रेल केवल यात्री परिवहन ही नहीं, बल्कि माल ढुलाई में भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। दूसरे शब्दों में कहें तो माल ढुलाई के माध्यम से उद्योग, कृषि और व्यापार को गति देती है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 2017 से रेल बजट को केंद्रीय बजट में सम्मिलित कर दिया गया है तथा भारतीय रेल निरंतर विद्युतीकरण, डिजिटलीकरण और हरित ऊर्जा की दिशा में कार्य कर रही है। यहां पाठकों को बताता चलू कि वर्तमान में भारतीय रेल का ग्रांडजेट नेटवर्क लगभग 99 प्रतिशत से अधिक विद्युतीकृत हो चुका है और जानकारी के अनुसार सरकार का लक्ष्य इस साल यानी कि 2026 तक 100 प्रतिशत विद्युतीकरण पूरा करना है, जिससे डीजल पर निर्भरता लगभग समाप्त हो जाएगी। डिजिटलीकरण के क्षेत्र में ई-टिकटिंग, यूटीएस (जनरल टिकट हेतु) मोबाइल ऐप, क्यूआर/यूपीआइ आधारित भुगतान, हैंड-हेल्ड टिकट जांच प्रणाली और केंद्रीकृत ट्रेफिक कंट्रोल जैसी व्यवस्थाएं लागू की जा चुकी हैं, जिससे टिकट बुकिंग क्षमता एक मिनट में 30 हजार से अधिक टिकट तक पहुंच गई है और संचालन अधिक पारदर्शी व कुशल हुआ है। वहीं हरित ऊर्जा की दिशा में भारतीय रेल ने अब तक लगभग 800 मेगावाट से अधिक सौर ऊर्जा और 90 मेगावाट पवन ऊर्जा क्षमता स्थापित की है, साथ ही 1600 मेगावाट राउंड-द-क्लॉक नवीकरणीय ऊर्जा के समझौते किए गए हैं। देशभर में 2600 से अधिक



रेलवे स्टेशन सौर ऊर्जा से संचालित हो रहे हैं। इन प्रयासों के माध्यम से भारतीय रेल ने 2030 तक नेट-जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया है, जो इसे न केवल विश्व की सबसे बड़ी रेल प्रणालियों में, बल्कि सबसे हरित रेल नेटवर्कों में भी शामिल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। पाठकों को जानकर आश्चर्य होगा कि एशिया का सबसे बड़ा और विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क होने के कारण भारतीय रेल प्रतिदिन करोड़ों यात्रियों को सुरक्षित, सुलभ और किफायती यात्रा सुविधा प्रदान करती है। इस तथ्य यह है कि भारतीय रेल आज केवल लोगों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने का साधन नहीं रही, बल्कि देश में बदलाव और विकास की एक मजबूत शक्ति बन चुकी है। हाल के वर्षों में इसके कामकाज और सोच दोनों में बड़ा परिवर्तन देखने को मिला है। अब रेलवे खुद को नई जरूरतों और भविष्य की चुनौतियों के अनुसार नए रूप में ढाल रही है। सबसे पहले यदि हम यहां पर आधुनिक ट्रेनों की बात करें, तो वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का जल्द शुरू होना और वर्ष

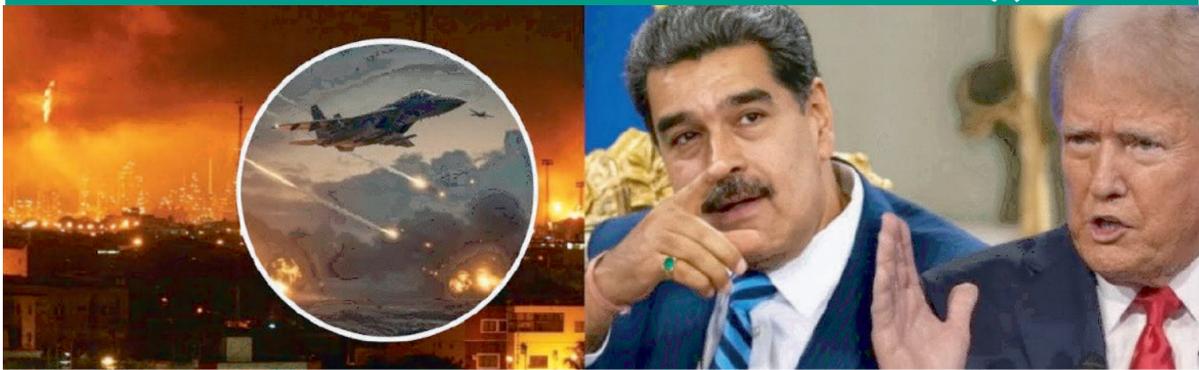
2027 तक बुलेट ट्रेन परियोजना का प्रस्ताव यह दिखाता है कि भारत तेज, सुरक्षित और आरामदायक रेल यात्रा की ओर तेजी से बढ़ रहा है। इसके साथ ही रेलवे ने देश के उन इलाकों को भी अपनी पहुंच बनाई है, जो पहले बहुत दूर (रिमोट एरिया) और दुर्गम माने जाते थे। पिछले वर्ष कश्मीर घाटी और मिजोरम की राजधानी आइजोल को रेल नेटवर्क से जोड़ा गया। गौरतलब है कि कश्मीर घाटी को शेष भारत से जोड़ने वाली उधमपुर-श्रीनगर-बाराभूला रेल लिंक परियोजना सामरिक और विकासत्मक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें विश्व का सबसे ऊँचा रेलवे अंश ब्रिज चिनाब ब्रिज भी शामिल है। निश्चित ही इस परियोजना के पूर्ण होने से घाटी में आवागमन, पर्यटन, व्यापार और रोजगार को नई गति मिलेगी। वहीं पूर्वोत्तर भारत में मिजोरम की राजधानी आइजोल को रेल नेटवर्क से जोड़ने के लिए भैरबी-सैरांग (आइजोल) नई रेलवे लाइन पर कार्य तेजी से प्रगति पर है। यह परियोजना पहाड़ी और कठिन भू-भाग में रेल कनेक्टिविटी स्थापित

कर मिजोरम को देश के रेल मानचित्र पर सशक्त रूप से जोड़ रही है, जिससे क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। दूसरे शब्दों में कहें तो इससे इन क्षेत्रों का संपर्क देश के बाकी हिस्सों से बेहतर हुआ है और वहां के लोगों के लिए शिक्षा, रोजगार और व्यापार के नए अवसर खुले हैं। इतना ही नहीं, भारतीय रेल ने इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी कई ऐतिहासिक उपलब्धियाँ हासिल की हैं। समुद्र के ऊपर बना देश का पहला ऊर्ध्वर लिफ्ट रेलवे पुल 'पंवन पुल' इसका एक बड़ा उदाहरण है। जानकारी के अनुसार यह पुल पाक जलडमरूमध्य पर बना है और रामेश्वरम को दक्षिण भारत की मुख्य भूमि से जोड़ता है। वहीं पश्चिम भारत में सर्मापट्ट माल ढुलाई गलियारे के तहत वैतरणा से जवाहरलाल नेहरू बंदरगाह तक 102 किलोमीटर लंबी नई रेल लाइन पर पहली मालगाड़ी चलाई गई, जिससे माल ढुलाई को तेज और सस्ता बनाने में मदद मिलेगी। बहरहाल, यहां यह कहना चाहिए कि इन उपलब्धियों के साथ-साथ रेलवे के सामने कई गंभीर चुनौतियाँ भी हैं। आज देशभर में यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ रही है, खासकर त्योहारों और विशेष अवसरों पर। ऐसे समय में विशिष्ट ट्रेनों को चलाई जाती है, लेकिन स्टेशनों पर अत्यधिक भीड़ के कारण अव्यवस्था और हादसों का खतरा बना रहता है। पिछले वर्ष नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भीड़भाड़ जैसी घटना यह बताती है कि यातायात प्रबंधन को और बेहतर बनाने की जरूरत है। आज स्टेशनों की क्षमता बढ़ाने के लिए 'अमृत भारत स्टेशन योजना' के तहत कई स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है, लेकिन यह काम अभी भी तय लक्ष्यों से पीछे चल रहा है। इसी तरह सुरक्षा के लिए शुरू की गई 'कवच' जैसी आधुनिक तकनीकें अभी पूरे रेल नेटवर्क पर पूरी तरह लागू नहीं हो पाई हैं, जबकि यात्रियों की सुरक्षा सबसे बड़ा प्राथमिकता होनी चाहिए। गौरतलब है कि कवच भारतीय रेल की एक स्वदेशी स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली है, जिसका उद्देश्य ट्रेनों की टक्कर रोकना, सिग्नल वल्लंघन

और ओवर-स्पीडिंग जैसी घटनाओं से बचाव करना है। यदि लोको पायलट किसी सिग्नल को नजरअंदाज कर देता है या ट्रेन तय गति से अधिक चलती है, तो कवच स्वतः ब्रेक लगाकर ट्रेन को नियंत्रित करता है। रैंडियो, जीपीएस और कंप्यूटर तकनीक पर आधारित यह प्रणाली घने कोहरे और खराब दृश्यता में भी सुरक्षित रेल संचालन सुनिश्चित करती है तथा यात्रियों की सुरक्षा को मजबूत बनाती है। हाल फिलहाल, यहां कहना चाहिए कि माल ढुलाई भारतीय रेल की आर्थिक रीढ़ है। रेलवे की कुल आय का लगभग 65 प्रतिशत हिस्सा माल ढुलाई से आता है, फिर भी कुल परिवहन में रेलवे की हिस्सेदारी केवल 27 प्रतिशत है, जबकि सड़क परिवहन का हिस्सा कहीं अधिक है। इसका मतलब यह है कि रेलवे को माल ढुलाई के क्षेत्र में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए और प्रयास करने होंगे, ताकि सस्ता, सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल परिवहन उपलब्ध कराया जा सके। पर्यावरण की दृष्टि से रेलवे एक बड़ी उम्मीद है। पूरे परिवहन क्षेत्र से होने वाले उत्सर्जन में रेलवे का योगदान केवल लगभग एक प्रतिशत है। यानी यह सड़क और हवाई परिवहन की तुलना में कहीं अधिक हरित और टिकाऊ साधन है। कुल मिलाकर, भारतीय रेल आज ऐसे दौर से गुजर रही है जहां एक ओर बड़ी उपलब्धियाँ हैं और दूसरी ओर बड़ी चुनौतियाँ भी। बुलेट ट्रेन जैसी परियोजनाएं और दूरस्थ क्षेत्रों तक रेल पहुंचने से देश के विकास को नई दिशा मिल रही है। लेकिन बढ़ता यातायात, माल ढुलाई की जरूरतें, स्टेशन क्षमता और सुरक्षा जैसे मुद्दों पर लगातार ध्यान और निवेश जरूरी है। यदि गति के साथ संतुलन, तकनीक के साथ सबको जोड़ने की सोच और विस्तार के साथ सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई, तो भारतीय रेल न केवल देश में बल्कि पूरी दुनिया में एक भरोसेमंद और आधुनिक परिवहन मॉडल के रूप में अपनी पहचान बना सकती है।

फ्रॉलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार,

दो टूक : वेनेजुएला पर हमला ट्रंप की दादागीरी - आखिर क्या चाहते हैं अमेरिकी राष्ट्रपति



राजेश श्रीवास्तव

अमेरिकी सेनाएं वेनेजुएला पर हमला करके वहां के राष्ट्रपति निकोलोस मादुरो को उनकी पत्नी समेत जिस तरह उठा लाई, वह राष्ट्रपति ट्रंप की मनमानी की पराकाष्ठा है। ट्रंप ने सैन्य एवं आर्थिक शक्ति के मामले में तथाकथित मुकाबले कहीं अधिक कमजोर देश में दादागीरी दिखाकर यही साबित किया कि उनका जोर दुर्बल देशों पर ही चलता है। उन्होंने यह आरोप लगाकर वेनेजुएला पर हमला किया कि वहां से अमेरिका में मादक पदार्थों की तस्करी हो रही थी और निकोलस मादुरो की दमनकारी नीतियों से इस देश के लोग अवैध तरीके से उनके यहां आ रहे थे। यह बहाना ही अधिक है, क्योंकि अमेरिका में न तो नशीले पदार्थ केवल वेनेजुएला से आते हैं और न ही वहां के लोग।

ट्रंप ने इसके प्रमाण नहीं दिए कि वेनेजुएला के अपराधियों के गिरोह मादुरो की शह पर अमेरिका के खिलाफ आतंकीयों की तरह काम कर रहे थे। इस बारे में मादुरो ने ट्रंप से बातचीत का प्रस्ताव भी रखा था पर उन्होंने उसकी अनदेखी कर दी। साफ है कि ट्रंप केवल इससे चिढ़े हुए थे कि सबसे अधिक तेल भंडार वाले देश का राष्ट्रपति उनके मनमाने रवैये के समक्ष झुकने को तैयार नहीं था, बहाना उन्होंने नशे का लिया।

अमेरिका और वेनेजुएला के संबंध तबसे बिगड़े, जब वहां वामपंथी रुझान वाले शासक सत्ता में आए और उन्होंने कच्चे तेल और खनिज के स्रोतों का राष्ट्रीयकरण करना शुरू किया।

इससे अमेरिकी तेल कंपनियों को वेनेजुएला से बाहर होना पड़ा। ट्रंप मादुरो से इस लिए भी खार खार हुए थे क्योंकि उन्होंने रूस और चीन से संबंध प्रगाढ़ कर लिए थे। चूंकि ट्रंप का रूस और चीन पर जोर नहीं, इसलिए उन्होंने वेनेजुएला को निशाना बना लिया। यह सही है कि मादुरो चुनौती में धांधली करके सत्ता में आए और एक तरह से तानाशाही शासन चला रहे थे लेकिन क्या वे ऐसे इकलौते शासक हैं?

इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि ट्रंप किस्म-किस्म के तानाशाहों और यहां तक सीरिया में काबिज हुए आतंकी सरगना को भी गले लगा रहे हैं। वे पाकिस्तान के अग्रोपित तानाशाह आसिम मुनीर की भी पीठ थपथपा रहे हैं जबकि वे आतंकी संगठनों को पाल रहे हैं। पाकिस्तान अमेरिका को धोखा तो देता ही रहा है, वह उन देशों में भी प्रमुख है, जहां से बड़े पैमाने पर मादक पदार्थों की तस्करी होती है। यह तस्करी सेना और उसकी खुफिया एजेंसी की शह से होती है लेकिन ट्रंप की नजर में पाकिस्तान महान देश है। दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद बेवगम होकर विश्व व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर रहे ट्रंप अपने साथ अमेरिका की भी फजीहत करा रहे हैं। वेनेजुएला पर हमला करके उन्होंने बची-खुची नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को अराजकता की ओर धकेल दिया है।

सवाल यह है कि अमेरिका अब किस मुंह से चीन से कहेगा कि ताइवान पर हमला मत करो? वह रूस की आलोचना कैसे करेगा? जब अमेरिका ने हमला किया, तब चीन का

प्रतिनिधिमंडल वेनेजुएला में ही मौजूद था। रूस इस हमले की पहले ही निंदा कर चुका है। वेनेजुएला के पास तेल का सबसे बड़ा भंडार मौजूद है। इस घटना को अमेरिका की दादागीरी ही कहेंगे। अमेरिका की मंशा साफ है। ट्रंप विश्वास के संकट को गहरा करने का काम करते हैं। होना तो यह चाहिए कि वेनेजुएला की जनता तय करे कि वहां सत्ता पर कौन बैठा? अमेरिका को यह तय करने का अधिकार किसने दिया? अमेरिका ने वादा किया था कि वह यूरोप के मामलों में दखल नहीं देगा लेकिन अब यह स्थापित हो चुका है कि उसकी दखलंदगी लातिन अमेरिका में बढ़ गई है।

यह संघर्ष तेल और खनिज पदार्थों के लिए है। ज्यादा लोगों को यह पता नहीं है कि वेनेजुएला के पास दुनिया में सबसे बड़ा तेल भंडार है। उसके पास जो भंडार है, वह सऊदी अरब से भी ज्यादा है। ट्रंप इसी वजह से वेनेजुएला पर नियंत्रण चाहते हैं। रूस और चीन यह जाहिर कर चुके हैं कि वह वेनेजुएला में अमेरिकी दखलंदगी बदलत नहीं करेंगे। अगर वेनेजुएला टकराव का नया बिंदु हो जाता है तो दुनियाभर में इसके गंभीर नतीजे देखने को मिल सकते हैं।

मालूम हो कि पिछली बार भी जब ट्रंप राष्ट्रपति बने थे, तब भी उन्होंने वेनेजुएला को धमकियां दी थीं, तो इस बार जो हुआ, उससे आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इस बार उन्होंने

जंगी जहाज भेजे और सीआईए को जिम्मा सौंप दिया। हालांकि, इस घटना से भारत पर असर नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि हम कच्चे तेल के लिए वेनेजुएला पर निर्भर नहीं हैं। 2013-14 में हम 10 अरब डॉलर मूल्य का कच्चा तेल वेनेजुएला से आयात कर रहे थे। तब हम हमारी जरूरत का सत-आठ फीसदी तेल वहां से ले रहे थे। अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद हमारी निर्भरता वेनेजुएला पर नहीं रही है। भारतीय तेल कंपनियों का वहां पर कुछ निवेश जरूर है हमला कर सकता है। चीन भी यह सोचेंगा कि जब अमेरिका ऐसा कर सकता है, तो हम क्यों नहीं कर सकते। लातिन अमेरिका को लेकर अमेरिकी नीतियों पर कभी भी भरोसा नहीं रहा है। हालांकि, इस पर कोई देश कुछ नहीं कर पाया क्योंकि अमेरिका महाशक्ति है। दुनियाभर में अब यह चिंताएं हैं कि अब ट्रंप का 'एंड गेम' क्या है? असल में ट्रंप कामयाब होते नजर आ रहे हैं। अगर ट्रंप अमेरिका को वेनेजुएला के कच्चे तेल पर नियंत्रण दिलवा देंगे और ईरान में कुछ कर पाते हैं जिसके लिए उनके इरादे आक्रामक हैं तो अमेरिका और खासकर ट्रंप के परिवार के पास दुनिया के प्राकृतिक संसाधनों के बड़े हिस्से का नियंत्रण आ सकता है। यह दुनिया के लिए ठीक नहीं होगा।

राजेश श्रीवास्तव

ईरान में जेन-जी का आंदोलन - क्या अमेरिका अपनी चाल में सफल हो गया है!

रामस्वरूप रावतसरे

ईरान में आर्थिक संकट के चलते बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। तेहरान से शुरू हुए ये प्रदर्शन कई शहरों में फैल चुके हैं। लोगों के बीच ईरानी मुद्रा 'रियाल' की डॉलर के मुकाबले मरिफॉड गिरावट और 42 प्रतिशत पहुंची महंगाई को लेकर गुस्सा है। लोग सड़कों पर उतरकर ईरान के इस्लामी रिजिमी का विरोध कर रहे हैं। इनमें बड़ी संख्या में जेन-जी छात्र-छात्राएँ भी शामिल हैं। जानकारी के अनुसार सबसे पहले 28 दिसंबर 2025 को तेहरान के ग्रेड बाजार के दुकानदारों और व्यापारियों ने विरोध शुरू किया। विरोध में दुकानें बंद रखी गईं। इसके बाद विरोध तेहरान, स्फहान, शिराज, मशहद, हमेदान और तमाम शहरों में फैल गया। लगातार प्रदर्शन जारी हैं जिसमें लोग सड़कों पर उतरकर नारे लगा रहे हैं- 'मुल्लाओं को ईरान छोड़ना होगा', 'आजादी-ए-आजादी' और 'तानाशाही का अंत हो'। बढ़ते विरोध प्रदर्शनों पर ईरान की सरकार ने कहा कि वह बातचीत के लिए तैयार है। राष्ट्रपति मसूद पेजेशिक्यान ने गृह मंत्री को प्रतिनिधियों से बातचीत करने का निर्देश दिया। साथ ही राष्ट्रपति पेजेशिक्यान ने ईरान के केंद्रीय बैंक के गवर्नर मोहम्मद रेजा फरजिन बैक इस्तीफा भी स्वीकार कर लिया और उनकी जगह पूर्व अर्थव्यवस्था एवं वित्त मंत्री अब्दोलनासेर हेम्पती को नियुक्त किया गया है।

इन प्रदर्शनों में जेन जी छात्र देशभर में 10 प्रमुख विश्वविद्यालयों में सत्रिय भूमिका निभा रहे हैं जिनमें तेहरान की 7 सबसे प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी शामिल हैं। इल्ना और सरकारी समाचार एजेंसी के मुताबिक, मध्य शहर इस्फहान के टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी के साथ ही यज्द और जंजन जैसे शहरों के संस्थानों में भी विरोध प्रदर्शन हुए।

ईरान में ये प्रदर्शन देश में जारी आर्थिक संकट को लेकर हो रहे हैं। यह संकट ईरानी मुद्रा 'रियाल' की भारी गिरावट से शुरू हुआ जो आम लोगों की जिंदगी को मुश्किल बना रहा है। अमेरिकी प्रतिबंधों, खराब सरकारी नीतियों और वैश्विक दबाव से अर्थव्यवस्था चरमरा गई जिससे महंगाई आसमान छूने लगी और लोग सड़कों पर उतर आए। यूँ तो ईरान की मुद्रा रियाल अमेरिकी डॉलर के मुकाबले पहले ही कमजोर थी लेकिन दिसंबर 2025 में यह ऐतिहासिक निचले स्तर पर पहुँच गई- एक अमेरिकी डॉलर के बदले 14 लाख रियाल। पहले जहाँ एक डॉलर से 50-60 हजार रियाल मिलते थे, अब लाखों रियाल चाहिए। इससे आयात होने वाले सामान जैसे तेल, दवा, अनाज महँगे हो गए। ईरान वैसे भी तेल बेचकर कमाई करता है लेकिन प्रतिबंध से डॉलर नहीं मिल पाते, इसीलिए रिजर्व खत्म हो गए।

देश में महंगाई दर 42 प्रतिशत तक बढ़ गई, यानी पिछले साल की तुलना में चीजें औसतन 42 प्रतिशत महँगी हो गईं। उदाहरण के लिए रोटी, दूध, सब्जी की कीमतें 72 प्रतिशत तक उछल गईं। एक आम परिवार जो पहले एक लाख में गुजारा कर लेता था, अब 2 से 3 लाख भी कम पड़ जाते हैं। इतना सब होने के बाद केंद्रीय बैंक प्रमुख ने इस्तीफा दे दिया क्योंकि वे मुद्रा स्थिर नहीं कर पाए।

जानकारों के अनुसार ईरान में जारी प्रदर्शनों में शामिल लोग इस्लामिक रिजिमी यानी सर्वांक नेता अयातुल्ला अली खामनेई के नेतृत्व वाली इस्लामी सरकार के खिलाफ हैं, जो 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद से चली आ रही है। शुरू से आर्थिक गुस्सा था, लेकिन अब लोग तानाशाही शासन के खिलाफ विद्रोह का मन बना चुके हैं जहाँ 'मुल्लाओं को ईरान छोड़ना होगा' जैसे नारे गूँज रहे हैं।

प्रदर्शनकारी इन्हें 'मुल्ला तानाशाह' कहकर कोस रहे हैं क्योंकि देश का पैसा सैन्य हथियारों, प्रॉक्सी युद्धों (जैसे हिजबुल्लाह, हूती) पर खर्च किया जा रहा है, बजाए जनता की भलाई पर। देश में लोग खासकर महिलाओं के हितों का न्याय और सख्त इस्लामी नियमों से तंग आ चुके हैं।

तेहरान के विश्वविद्यालयों में छात्र 'इस्लामिक रिपब्लिक मुदावाद' चिल्ला रहे हैं और धार्मिक प्रतीकों को निशाना बना रहे हैं। व्यापारी भी कह रहे हैं कि रिजिमी की नीतियों से अर्थव्यवस्था बर्बाद हुई न कि अमेरिकी सैंकशंस से। यह 1979 क्रांति के खिलाफ पहला बड़ा विद्रोह बताया जा रहा है जहाँ लोग धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र की माँग कर रहे हैं।

ईरान में इस्लामी शासन के विरोध में जारी प्रदर्शनों पर अमेरिका ने खुलकर समर्थन जताया है। खासकर राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रंप ने प्रदर्शनकारियों को प्रोत्साहित किया और इस्लामी शासन की आलोचना की। ट्रंप ने ईरान की अर्थव्यवस्था को 'टूट चुका' बताया और कहा कि सरकार हर विरोध को दबाने के लिए लोगों पर गोली चलाती है। ईरान पर ट्रंप प्रशासन ने सैंकशंस बढ़ाए हैं जो आर्थिक संकट की जड़ हैं लेकिन प्रदर्शनों पर अमत्यक्ष समर्थन देकर दबाव बनाया है। ईरान की इस्लामी सरकार ने ट्रंप के इन बयानों को हस्तक्षेप बताया है जबकि राष्ट्रपति पेजेशिक्यान ने बातचीत का संकेत दिया है।

जानकारों की माने तो ईरान में आर्थिक संकट खड़े होने के पीछे इस्लामी शासन की नीतियाँ ही हैं जिनके चलते व्यापारी नाराज हुए और अब जेन-जी सड़कों पर हैं। इस्लामी शासन के प्रति बढते जन आक्रोश को समर्थन सजगता से सुलझाया नहीं गया तो ईरान के वर्तमान शासनकर्ताओं को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

रेल की बड़ी लापरवाही लोहरदगा रांची - टूटे पुल के ऊपर गुजरी तीन ट्रेनें

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड



रेलवे हरकत में आया और तत्काल ट्रेन का परिचालन रोक दिया गया। बड़ी लापरवाही यह रही कि क्षतिग्रस्त रेलवेब्रिज से रविवार को भी राजधानी और

सासाराम एक्सप्रेस, मेमू पैसेंजर गुजरी। गनीमत यह रही कि उस समय कोई हादसा नहीं हुआ। इसके बाद समय रहते रेलवे ब्रिज से पहले रांची-लोहरदगा ट्रेन को रोक

गया। अचानक से रेलवे ब्रिज से पहले ट्रेन को रोकने जाने से यात्रियों में हड़कंप मच गया था। मामले को लेकर रेलवे ने बड़ा फैसला लेते हुए रांची-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस को फिलहाल अपने नियमित मार्ग लोहरदगा के बजाय मेसरा-बरकाकाना-टोरी ब्रिज चलाने की बात कही है। वहीं आगामी सात जनवरी तक लोहरदगा रेलवे स्टेशन से रेल गाड़ियों का परिचालन बाधित रहेगा। रांची-सासाराम एक्सप्रेस को रांची से आगामी पांच से सात जनवरी तक कैंसिल कर दिया गया है। वहीं सासाराम-रांची एक्सप्रेस को छह से आठ जनवरी तक कैंसिल किया गया है। जबकि पांच से लेकर सात जनवरी तक मेमू पैसेंजर को रांची से लेकर नगजुआ तक की सीमित किया गया है।

टाटानगर स्टेशन पर 3 लाख 50 हजार का गांजा बरामद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड



जमशेदपुर। टाटानगर रेलवे स्टेशन पर रेलवे सुरक्षा बल की उड़नदस्ता टीम ने मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ बड़ी सफलता हासिल की है। रविवार तड़के की गई कार्रवाई में आरपीएफ ने दो गांजा तस्करो को गिरफ्तार करते हुए उनके पास से कुल 6.08 किलो अवैध गांजा बरामद किया है।

बरामद गांजा की बाजार में अनुमानित कीमत करीब 3 लाख 50 हजार रुपये बताई जा रही है। यह कार्रवाई चक्रवर्तु मंडल के वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त पी. शंकर कुट्टी के निर्देश पर की गई। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि गांजा की तस्करी सुनिश्चित तरीके से की जा रही थी

उड़ीसा के तुसरा से ट्रेन संख्या 18006 समलेश्वरी एक्सप्रेस के जरिए गांजा लेकर टाटानगर पहुंचे थे। गांजा को पटना के रास्ते बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले में ले जाकर खपाने की योजना थी। गिरफ्तार तस्करो की पहचान शर्मा यादव और सत्यनारायण साहनी के रूप में हुई है। दोनों आरोपी

बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले के रूपही टांड क्षेत्र के निवासी बताए गए हैं। आरपीएफ ने आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद दोनों आरोपियों को बरामद गांजा के साथ अग्रिम कार्रवाई के लिए रेल थाना टाटानगर को सौंप दिया है। मामले में एनडीपीएस एक्ट के तहत आगे की कार्रवाई की जा रही है।

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पहुंचे बैधनाथ घाम

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड



रांची, भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार रविवार को देवघर पहुंचे। एयरपोर्ट पर पहुंचने पर अधिकारियों ने उनका स्वागत किया और प्रोटोकॉल के अनुसार उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इंडकॉ बॉस उन्होंने बाबा बैधनाथ मंदिर में पूजा की। मंदिर के तीर्थ पुरोहितों ने संकल्प कारक ज्ञानेश कुमार और उनके पूरे परिवार को गर्भ गृह में प्रवेश कराया।

गर्भ गृह में मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने बाबा बैधनाथ घाम की पूजा कर आशीर्वाद लिया और फिर उसके बाद माता पार्वती के मंदिर में भी पूजा अर्चना की। बाबा मंदिर में पूजा करने के बाद मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार एम्स के लिए रवाना हो गए, जहां पर अधिकारियों के साथ उन्होंने बैठक की। वहीं एम्स प्रबंधन के साथ बैठक के बाद मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार बाबा मंदिर के शाम के श्रृंगार पूजा में भी शामिल हो गए।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि वह देवघर आए हैं। अपने परिवार के साथ बाबा बैधनाथ मंदिर में पूजा करने के बाद, बासुकीनाथ मंदिर में भी भगवान शिव की पूजा करेंगे। उन्होंने कहा कि वह दो दिनों

राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के. रवि कुमार भी एयरपोर्ट पर मौजूद रहे।

गैर-कानूनी ब्लॉकिंग: मिट्टी के ब्लॉक के नीचे 4 लाखों मिली

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड अंडीशा



बुधशेखर/ढेंकनाल: रविवार शाम को ढेंकनाल मिट्टी की श्रद्धायात्रा तस्सील में बदलते के पास गोपालपुर में एक खदान में जोरदार धमाका हुआ। रात में रेस्क्यू ऑपरेशन नहीं किया जा सका। रविवार सुबह, मोटंगा पुलिस, श्रद्धायात्रा तस्सीलदार, फायर डिपार्टमेंट और ODRAFT टीम ने JCB मशीनों और लिफ्टर ड्रॉइंस का इस्तेमाल करके रेस्क्यू ऑपरेशन जारी रखा। डिस्ट्रिक्ट मंत्रिस्ट्रेट ग्राहमी फाटिल और SP अतिरिक्त सोल्कर मौके पर मौजूद है।

मोटंगा पुलिस श्रद्धायात्रा तस्सीलदार के साथ मौके पर पहुंच गई है और अंधेरे में सर्व कर रही है। बताया जा रहा है कि जब खदान में 6 मजदूर काम कर रहे थे। रात के 11 बजे मिट्टी उन पर गिर गई। यह घटना सोशल मीडिया पर वायरल हो गई है। इस बारे में श्रद्धायात्रा के तस्सीलदार मनोज मजरी ने बताया कि जब एडिशनल तस्सीलदार, मोटंगा पुलिस स्टेशन ऑफिसर प्रियंका लोका और पुलिस मौके पर पहुंचे तो रात हो चुकी थी और अंधेरे में नौबत की

लाइट से जंग काला बूझता था। हालांकि, जंग अभी भी जारी है। पलटने के बारे में SP अतिरिक्त सोल्कर ने बताया कि सूचना मिलने के बाद मोटंगा पुलिस स्टेशन ऑफिसर को मौके पर भेजा गया था। रात लेने की वजह से बरत में टिकमल 3 राई थी। रात तक घटना के बारे में डिस्ट्रेस साफ नहीं है। इलाके के लोगों से कुछ नजदूरों के जमीन के अंदर फंसे लेने की जानकारी मिल रही है। लोकल इलाके से खबर मिलने के बाद ढेंकनाल के MP रुद्रनारायण पानी ने विंता जगाई और डिस्ट्रिक्ट मंत्रिस्ट्रेट, SP और डिप्टी मंत्रिस्ट्रेट से तुरंत मामले की जांच करने को कहा। BJP नेता राम पात्रा ने सोशल मीडिया पर कल कि वर-काव्नी ब्लास्टिंग की वजह से पांच बेगुनाह लोगों की मौत हो गई। यह वार में पता चला कि ढेंकनाल पुलिस खदान नातिक को गिरफ्तार करेगी या नहीं, नातिक BJP पार्टी का एक बड़ा नेता है। ऑडिशनल मंत्रिस्ट्रेट ऑफिसर ने ढेंकनाल डिस्ट्रिक्ट को 8.9.2025 को एक लेटर नंबर 1808 में सभी ब्लैक स्टोन और रोड नेटल वाली तीरठोडई को बताया कि जब तक वे ब्लास्टिंग परमिट जमा नहीं करते, वे नाईस में पदर नाडिना नहीं कर सकते। इस लेटर की एक कपी डिस्ट्रिक्ट मंत्रिस्ट्रेट और श्रतन-श्रतन तस्सीलदारों को दी गई। हालांकि, ब्लास्टिंग परमिट जारी दिष्ट नष्ट थे या नहीं और उस पदर की वजह से कान हुआ था या नहीं, वह जंग का विषय है।

पश्चिम बंगाल चुनाव: तृणमूल कांग्रेस और भाजपा में सीधी टक्कर के आसार

प्रदीप कुमार वर्मा

इस साल करीब तीन महीने बाद मार्च-अप्रैल में पश्चिम बंगाल में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए अब राजनीतिक दलों ने अपनी कमर कस ली है। तीन बार की सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस ने बंगाल में अपनी रैलियां और रोड शुरू कर दिए हैं। वहीं, भाजपा ने भी चुनावी रणनीति तैयार कर टीएमसी को सीधी टक्कर देने का मन बना लिया है। भाजपा की चुनावी रणनीति के चाणक्य कहे जाने वाले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का हालिया दौरा भी भाजपा की तैयारी को नई धार देता दिखाई पड़ रहा है। तृणमूल कांग्रेस एवं भाजपा की रकमर कसनेर वाली तैयारी के उलट अभी तक कांग्रेस और वामदल उलझन में है और इन दलों की तरफ से अभी तक कोई भी राजनीतिक रसक्रियता दिखाई नहीं पड़ रही है। राजनीतिक प्रेक्षकों का मानना है कि तमाम अंतरविधेयों और आशंकाओं के बावजूद इस बार तृणमूल कांग्रेस और भाजपा में ही सीधी टक्कर होगी। सबसे बड़ी देखने वाली बात यह भी रहेगी कि पश्चिम बंगाल के विधानसभा

लियाज से 2026 का साल बेहद अहम रहने वाला है। इस साल के अगले कुछ ही महीनों में देश के पांच राज्यों असम, पश्चिम बंगाल, पुडुचेरी, तमिलनाडु और केरल में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। हालांकि यह चुनाव भले ही इन राज्यों की विधानसभा के लिए होंगे लेकिन इन चुनावों के परिणाम राष्ट्रीय राजनीति को भी बहुत प्रभावित करेंगे। पश्चिम बंगाल समेत पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के परिणामों से आगामी समय में होने वाले राज्यसभा में भी दलगत आंकड़ों के हिसाब से स्थिति में बदलाव आने के पूरे पूरे आसार हैं। इन चुनाव के जरिए एक तरफ भारतीय जनता पार्टी अपनी सत्ता को कई नए राज्यों में स्थापित करने की कोशिश में है जिससे भाजपा का जनाधार बढ़ेगा। तो वहीं, दूसरी तरफ कांग्रेस समेत पूरा विपक्ष देश की सबसे बड़ी पार्टी भाजपा को कोई मौका नहीं देना चाहता है। यह विधानसभा चुनाव काफी हद तक यह भी तय करेगा कि मोदी सरकार की नीतियां कितनी असरदार हैं और इंडी गठबंधन के वैचारिक तले विपक्ष कितना एकजुट है?

बताते चले कि भारतीय चुनावी राजनीति के

छोड़कर दूसरा अर्थ, जैसे "पूरा गाँव हँस पड़ा" (मतलब गाँव के दबंग लोग)।

व्यंजना (सूक्ष्म अर्थ): छिपा हुआ या गहरा अर्थ जो ध्वनि या संदर्भ से आता है, जैसे किसी चुटकुले का असल मतलब।

संदर्भ और लहजा: एक ही बात रमै तुमसे नफरत करता हूँ अगर हँसकर कही जाए तो अलग है और चिल्लाकर कहने पर अलग। टेक्स्ट मैसेज में गलतफहमी इसी वजह से होती है।

संक्षेप में, शब्द सिर्फ ध्वनि नहीं बल्कि ऐसी शक्ति है जो वास्तविकता गढ़ती है, इसलिए सोच-समझकर बोलना जरूरी है, क्योंकि शब्दों से हम बना भी सकते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं। 'क' + 'हा' + 'नी' तीन अंको से मिलकर कहानी एक शब्द बनता है जिसका व्यापक अर्थ है। बचपन की कहानियों को आसपास और धरती की कहानियाँ थीं, में कछुआ और खरगोश, मगरमच्छ और बंदर, चन्द्रमामा दूर के होते थे, जो अब अंतरिक्ष से होते हुए चाँद तक जा पहुँची हैं। 'क' से तरह तरह की कई कहानियों ने जन्म ले लिया है। शब्द का स्वरूप बदला, कई अर्थ निकले, शब्द वही एक रहा और मायने बदलते रहे।

शब्दों का व्यापक अर्थ सिर्फ वर्णों का समूह नहीं बल्कि एक स्वतंत्र, सार्थक इकाई है जो विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करती है, और संदर्भ के अनुसार इसके अर्थ विस्तृत, गहरे और बदलते रहते हैं, जो भाषा को समृद्ध बनाते हैं और समाज के साथ विकसित होते हैं, जिसे भारतीय संस्कृति में "ब्रह्म" भी कहा गया है। इसका मतलब सिर्फ 'शब्द' (वर्ड) नहीं, बल्कि उसका पूरी तरह से समाहित होना (कंप्रेसिव), फैला हुआ (पेर्सिव) होना, और अर्थों का विस्तार (एक्सपाशन) भी है, जो समय के साथ बदलता है।

शब्द के व्यापक अर्थों को समझना मौलिक अर्थ (बेसिक डेफिनिशन): एक या एक से ज्यादा वर्णों (अक्षरों) से बनी ऐसी इकाई जिसका अपना कोई अर्थ हो, जैसे 'कमल', 'नयन'।

व्यापकता (कंप्रेसिव): "व्यापक" का अर्थ है सभी दिशाओं में फैला हुआ, जो किसी एक बिंदु पर केंद्रित न होकर सभी जगह मौजूद हो (जैसे सूरज की रोशनी या बिजली का प्रकाश)।

शब्द का व्यापक अर्थ यह भी है कि वह अपने मूल अर्थ से आगे बढ़कर हर जगह समाहित हो जाए, जैसे 'विष्णु' जो सबमें व्याप्त हैं।

अर्थों का विस्तार (सेमेंटिक एक्सपेंशन): समय और उपयोग के साथ शब्दों के अर्थ विस्तृत होते जाते हैं। वे केवल शाब्दिक नहीं रहते, बल्कि नए विचार, भावनाएं और अनुभव व्यक्त करने लगते हैं।

जैसे-जैसे हमारी दुनिया बदलती है, शब्द भी बदलते हैं और हमारे अनुभवों को दर्शाते हैं, जिससे संचार अधिक प्रभावशाली बनता है।

भारतीय दर्शन में:

भारतीय संस्कृति में शब्द को 'ब्रह्म' (ईश्वर/सत्य) माना गया है, जिसका अर्थ है कि शब्द केवल ध्वनि नहीं, बल्कि सृष्टि का आधार और अर्थ का मूल रूप है, जो अमूर्त अर्थों को व्यक्त करता है।

संदर्भ और गहराई: किसी शब्द का व्यापक अर्थ उसके संदर्भ और आसपास के शब्दों से भी पता चलता है। एक ही शब्द अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग गहराईयों और अर्थ दे सकता है (जैसे कोश या डिक्शनरी में देखने से)।

संक्षेप में, 'शब्द' का व्यापक अर्थ उसकी मूल परिभाषा (सार्थक ध्वनि) से कहीं आगे बढ़कर, उसकी फैलावट (व्यापकता), अर्थों के विस्तार, और सृष्टि व चेतना से जुड़ाव (ब्रह्म) तक जाता है, जो भाषा को जीवंत और गतिशील बनाता है।

शब्द के भेद कई आधारों (अर्थ, रचना, उत्पत्ति, प्रयोग) पर किए जाते हैं, लेकिन मुख्य रूप से रचना के आधार पर तीन भेद (रूढ़, यौगिक, योगरूढ़) और उत्पत्ति के आधार पर चार भेद (तत्सम, तद्धव, देशज, विदेशज) होते हैं जबकि अर्थ और प्रयोग के आधार पर भी वर्गीकरण किया जाता है, जैसे विकारी (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया) और अविकारी (क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक) शब्द।

मुख्य वर्गीकरण: रचना/बनावट के आधार पर: रूढ़: ऐसे शब्द जो किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयोग होते हैं और जिनके टुकड़े करने पर कोई अर्थ नहीं निकलता (जैसे: नाक, कान)। यौगिक: दो या अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द (जैसे: योगिक, पाठशाला)। योगरूढ़: ऐसे यौगिक शब्द जो किसी विशेष अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते हैं (जैसे: लंबोदर, जलज)।

उत्पत्ति (स्रोत) के आधार पर: तत्सम: संस्कृत से ज्यों के त्यों लिए गए शब्द (जैसे: अग्नि, रात्रि)। तद्धव: संस्कृत से बदले हुए रूप में आए शब्द (जैसे: आर, रात)। देशज: क्षेत्रीय भाषाओं से आए शब्द (जैसे: पगड़ी, गाड़ी)। विदेशज: विदेशी भाषाओं (फ़ारसी, अरबी, अंग्रेजी आदि) से आए शब्द (जैसे: स्कूल, डॉक्टर, कैंची)।

अर्थ के आधार पर (मुख्यतः): विकारी शब्द: जो लिंग, वचन, कारक आदि के कारण बदलते हैं (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया)। अविकारी शब्द (अव्यय): जो बदलते नहीं (क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक)।

प्रयोग/रूप-परिवर्तन के आधार पर (विकारी/अविकारी): विकारी: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया। अविकारी (अव्यय): क्रियाविशेषण,

संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

स्रोत के आधार पर शब्दों के चार भेद हैं: * तत्सम तत् (उसके) + सम (समान) अर्थात् उसके समान। जो शब्द संस्कृत भाषा (मूल भाषा) से ज्यों के त्यों हिंदी में आ गए हैं।

शब्दों का प्रभाव बहुत गहरा होता है, वे दूसरों को प्रेरित कर सकते हैं, रिश्ते बना या बिगाड़ सकते हैं, मानसिक शांति दे सकते हैं या मानसिक आघात भी पहुँचा सकते हैं, और हमारे व्यक्तित्व को पहचान कराते हैं, इसलिए हमें हमेशा सोच-समझकर और सकारात्मक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि एक सही शब्द किसी का पूरा जीवन बदल सकता है, जबकि गलत शब्द गहरी ठेस पहुँचा सकते हैं।

शब्दों के प्रभाव के मुख्य पहलू: व्यक्तित्व का निर्माण:

आपके शब्द आपके संस्कारों, ज्ञान और परिवेश को दर्शाते हैं, और लोग आपके शब्दों से आपके बारे में छवि बनाते हैं।

प्रेरणा और ऊर्जा: सकारात्मक शब्द दूसरों को ऊर्जा देते हैं और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं, जैसे किसी संकट के समय पिता के शब्दों ने बेटे को हिम्मत दी।

मानसिक और भावनात्मक असर: शब्द ठंडक दे सकते हैं या सुलगा सकते हैं। वे खुशी या तनाव, दोनों पैदा कर सकते हैं, और मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डाल सकते हैं।

भविष्य की दिशा: शब्दों में भविष्य बनाने और बदलने की शक्ति होती है। सफल लोग अपनी आवाज और अर्थ नहीं निकलता (जैसे: नाक, कान)। यौगिक: दो या अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द (जैसे: योगिक, पाठशाला)। योगरूढ़: ऐसे यौगिक शब्द जो किसी विशेष अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते हैं (जैसे: लंबोदर, जलज)।

उत्पत्ति (स्रोत) के आधार पर: तत्सम: संस्कृत से ज्यों के त्यों लिए गए शब्द (जैसे: अग्नि, रात्रि)। तद्धव: संस्कृत से बदले हुए रूप में आए शब्द (जैसे: आर, रात)। देशज: क्षेत्रीय भाषाओं से आए शब्द (जैसे: पगड़ी, गाड़ी)। विदेशज: विदेशी भाषाओं (फ़ारसी, अरबी, अंग्रेजी आदि) से आए शब्द (जैसे: स्कूल, डॉक्टर, कैंची)।

अर्थ के आधार पर (मुख्यतः): विकारी शब्द: जो लिंग, वचन, कारक आदि के कारण बदलते हैं (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया)। अविकारी शब्द (अव्यय): जो बदलते नहीं (क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक)।

प्रयोग/रूप-परिवर्तन के आधार पर (विकारी/अविकारी): विकारी: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया। अविकारी (अव्यय): क्रियाविशेषण,

संक्षेप में, शब्द जड़ होते हैं लेकिन उनमें हम भावों से चेतना भरते हैं और वे हम से भी तेज गति से यात्रा करते हुए हर किसी के जीवन पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालते हैं।